विश्वकर्मा फर्नीचर
मो. 98261-32636,90987-54366,98274-96911

तरुण छत्तीसगढ़

e-Paper- tarunchhattisgarhkorba.com
कोरबा एवं रायपुर से एक साथ प्रकाशित डाक पंजीयन क्रमांक- जी2-112/सी.जी/बीएलपी/003/2024-2026

सुनालिया ज्वेलर्स
हीरा, स्वर्ण, हॉलमार्क ज्वेलरी, रजत, राशि नग के विक्रेता
मो. 94255-32524,94241-43922
पावर हाउस रोड, कोरबा

वर्ष 35 अंक 255 | कोरबा, शनिवार, दिनांक 15 जून 2024 डाक 16 जून 2024 | पृष्ठ : 8 मूल्य 2.00 रुपए

विविधा
नई दिल्ली में नीट परीक्षा परिणामों में कथित अनियमितताओं के खिलाफ छात्रों ने किया विरोध प्रदर्शन

देश-विदेश
भारत की जनता ने ऐतिहासिक जीत के रूप में दिया आशीर्वाद, जी 7 शिखर सम्मेलन में बोले पीएम मोदी

फीचर पेज
नाक से जिद्दी ब्लैकहेड्स को निकालने के लिए आजमाएं ये घरेलू नुस्खे

नक्सलियों के खिलाफ फिर बड़ा एक्शन नारायणपुर मुठभेड़ में आठ नक्सली ढेर

नारायणपुर, 15 जून [एजेंसी]।

छत्तीसगढ़ के नारायणपुर से बड़ी खबर आ रही है। यहां पुलिस के साथ मुठभेड़ में आठ नक्सलियों के मारे जाने की खबर है। इस मुठभेड़ में दो जवानों के घायल होने की खबर है। बताया जा रहा है कि दो दिनों नक्सल ऑपरेशन चल रही है। खबरों के अनुसार अबूझमाड़ के कुतुल में मुठभेड़ जारी है। जानकारी के अनुसार नारायणपुर के अबूझमाड़ क्षेत्र के कुतुल, फरसाबेड़ा, कोड़तामेटा क्षेत्र में शनिवार की सुबह से सुरक्षा बल और नक्सलियों के मध्य मुठभेड़ चल रही है। पुलिस के अनुसार मुठभेड़ में नक्सलियों को बड़ा नुकसान पहुंचा है। एसपी प्रभात कुमार ने बताया कि 12 जून से इस क्षेत्र में नारायणपुर, कोण्डागांव, कांकेर व दंतेवाड़ा जिले की डीआरजी, एसटीएफ व आइटीबीपी 53वीं वाहिनी बल की ओर से सम्मिलित अभियान चलाया जा रहा है। विगत दो दिन से कई बार रूक-रूक कर मुठभेड़ जारी है।

पीएम मोदी काशी में 300 किसानों को देंगे आवास की सौगात, जारी करेंगे सम्मान निधि की किस्त

वाराणसी, 15 जून [एजेंसी]।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 18 जून को काशी के किसानों से न केवल संवाद करेंगे बल्कि उनके उगाए उत्पादों को भी देखेंगे। साथ ही करीब 300 किसानों को आवास का उपहार भी देंगे। उनके कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की जा रही है। भाजपा नेताओं के अनुसार 21 किसानों से मुलाकात करेंगे।

पीएम सम्मान निधि की धनराशि खाते में ऑनलाइन ट्रांजेक्शन के माध्यम से भेजेंगे। साथ ही किसानों को डिजिटल किसान क्रेडिट कार्ड भी देंगे। कुछ प्रगतिशील किसानों से भी बातचीत करेंगे। किसानों के उगाए उत्पादों के स्टॉल भी लगाए जाएंगे। कृषि विभाग के अधिकारी किसानों से जुड़ी योजनाओं के बारे में भी किसानों की मदद करेंगे। इस पूरे कार्यक्रम की रूपरेखा बनाकर भेजी गई है। पीएमओ से ही फाइनल किया जाएगा। प्रशासन के पास अभी पीएम का प्रोटोकाल नहीं आया है। शनिवार को पीएम के कार्यक्रम की तैयारियों का जायजा लेने एसपीजी आएगी। पीएम के रूट का बारीकी से निरीक्षण करेगी।

उत्तराखंड में बड़ा हादसा, 16 यात्रियों को लेकर जा रहा टैंपो ट्रैवलर अलकनंदा नदी में गिरा

रुद्रप्रयाग उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले से बड़े हादसे की खबर सामने आई है। यहां एक टैंपो ट्रैवलर अलकनंदा नदी में जा गिरा। बताया जा रहा है कि इसमें 15 -16 यात्री सवार थे। अब तक मिली जानकारी के अनुसार रुद्रप्रयाग शहर से पांच किलोमीटर आगे बदरीनाथ हाईवे पर रैतोली के पास एक टेंपो ट्रेवलर अलकनंदा नदी में गिर गया। वाहन में 15 से 16 यात्रियों के होने की आशंका है।

ट्रॉनिका सिटी की तीन फैक्ट्रियों में लगी भीषण आग, फायर बिग्रेड की 10 से ज्यादा गाड़ियां मौजूद

लोनी, 15 जून [एजेंसी]।

ट्रॉनिका सिटी थाना क्षेत्र के औद्योगिक क्षेत्र में पैकेजिंग फैक्ट्री में शनिवार सुबह अचानक भीषण आग लग गई। देखते ही देखते आग आसपास की दोनों फैक्ट्रियों तक पहुंच गई। अग्निशमनकर्मी 10 गाड़ियों की मदद से आग बुझाने में जुटी है। ट्रॉनिका सिटी औद्योगिक क्षेत्र में शनिवार को पैकेजिंग फैक्ट्री में आग लग गई। पॉलीथिन समेत अन्य सामग्री में आग तेजी से फैल गई।

मामले की सूचना अग्निशमन विभाग को दी गई। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप ले लिया। आग लगने के दौरान किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। पुलिस और अग्निशमन विभाग की टीम मौके पर है। आसपास की अन्य फैक्ट्रियों को खाली कराया गया है। मुख्य अग्निशमन अधिकारी राहुल पाल ने बताया कि आग में कोई फंसा नहीं है। आग बड़ी है कई गाड़ियां मौके पर है। बुझाने का काम किया जा रहा है।

इंदिरा सिंह का निधन, पूर्व सीएम ने जताया शोक

सरगुजा। इंदिरा सिंह का निधन हो गया है। पूर्व सीएम भूपेश बघेल ने अपने ट्वीट में शोक जताते हुए लिखा, अभी बेहद दुखद सूचना प्राप्त हुई है। सरगुजा राजपरिवार की श्रीमती इंदिरा सिंह जी (बेबी राज जी) का देहांत हो गया है।

वो लंबे समय से गंभीर बीमारी से संघर्ष कर रही थीं। हम सब उनकी आत्मा की शांति की प्रार्थना करते हैं. इस दुःख की घड़ी में सिंहदेव परिवार के साथ हम सब हैं। यह हमारी पारिवारिक क्षति भी है। अंत्येष्टि में शामिल होने के लिए अमरकंटक से रवाना हो रहा हूँ।

बंगाल और बिहार के बीच अटका यूपी आ रहा मानसून

कानपुर, 15 जून [एजेंसी]।

कानपुर में पिछले तीन दिनों तक लगातार तापमान 46 डिग्री सेल्सियस से ऊपर चल रहा है। कल तापमान 46.7 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। रात का पारा 34.4 डिग्री रहा जो प्रदेश में सर्वाधिक है। मौसम विभाग ने चेतावनी जारी की है कि 18 जून तक इसी तरह दिन और रात में गर्म हवाएं चलेंगी। अभी तक मौसम विभाग का आकलन था कि 29 जून तक कानपुर में मानसून दस्तक दे सकता है पर रमेल चक्रवात की वजह से जो मानसून तेजी से उत्तर प्रदेश की ओर बढ़ रहा था, वह अब पश्चिम बंगाल और बिहार के बीच ठिठक गया है। इस वजह से गर्म हवाओं की रफ्तार तेज हो गई है। सीएसए के मौसम विभाग प्रमुख डॉ. एसएन सुनील पांडेय के अनुसार, मानसूनी हवाओं को किसी तरह की कोई चक्रवाती हवाओं का साथ नहीं मिलने की वजह से समुद्र से उठने वाली हवाएं ऊपर की ओर नहीं जा पा रही हैं, जिसका असर सबसे ज्यादा उत्तर प्रदेश पर पड़ रहा है। उन्होंने बताया कि यही वजह है कि यूपी के सभी जिले दूसरे राज्यों की अपेक्षा ज्यादा गर्म हैं।

इसी वजह से ही इस बार मार्च से मई के बीच बारिश की मात्रा में 60 प्रतिशत से अधिक की कमी आई है। साथ ही मानसूनी सीजन वाले महीने जून से लेकर सितंबर के बीच की बारिश का सिलसिला अभी तक शुरू ही नहीं हो पाया है। पिछले वर्ष इन महीनों में 728 मिमी बारिश रिकॉर्ड की गई थी, जिसकी शुरुआत दो जून से ही हो गई थी।

कभी भी गिर सकती है एनडीए की सरकार खरगे के बयान से मचा सियासी बवाल

जेडीयू नेता ने किया जोरदार पलटवार

नईदिल्ली, 15 जून [एजेंसी]।

लोकसभा चुनाव के रिजल्ट आने के बाद कांग्रेस के हौसले मजबूत हो चुके हैं। भले ही एनडीए गठबंधन ने सरकार बना ली हो मगर आई.एन.डी.आई. गठबंधन 234 सीटें जीतने में कामयाब रही। भाजपा को नीतीश कुमार की जेडीयू और चंद्रबाबू नायडू की टीडीपी के सहारे सरकार चलानी पड़ रही है। इसी बीच कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने मोदी सरकार और भाजपा पर निशाना साधा है। समाचार एजेंसी से बात करते हुए खरगे ने कहा कि एनडीए की सरकार कभी भी गिर सकती है। उन्होंने कहा, एनडीए सरकार गलती से बनी है। मोदी जी के पास जनादेश नहीं है। यह अल्पमत की सरकार है। यह सरकार कभी भी गिर सकती है। हम चाहते हैं कि यह चलती रहे। देश के लिए यह अच्छा हो। खरगे ने आगे कहा, हमें देश को मजबूत बनाने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। लेकिन हमारे प्रधानमंत्री की आदत है कि वो किसी चीज को चलने नहीं देते। लेकिन हम देश को मजबूत बनाने के लिए सहयोग करेंगे। आरजेडी प्रवक्ता एजाज अहमद ने खरगे के बयान पर अपनी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा की खरगे सही कह रहे हैं! जनादेश मोदी सरकार के खिलाफ था। मतदाताओं ने उन्हें स्वीकार नहीं किया। फिर भी वे सत्ता में आए। मल्लिकार्जुन खरगे के बयान पर बिहार के पूर्व सूचना एवं जनसंपर्क मंत्री और जेडीयू एमएलसी नीरज कुमार का जवाब आया। उन्होंने पीवी नरसिम्हा राव और मनमोहन सिंह की कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकारों के स्कोरकार्ड के बारे में पूछा। उन्होंने पूछा कि क्या खरगे कांग्रेस की विरासत से अनभिज्ञ हैं। नीरज ने कहा, कांग्रेस अब 99 के चक्कर में फंस गई है। लोकसभा चुनाव में भाजपा 240 सीटें जीतने में कामयाब रही। वहीं, कांग्रेस 99 सीटों पर जीत दर्ज की। हालांकि, रिजल्ट सामने आने के दो दिन बाद एक निर्दलीय सांसद, कांग्रेस में शामिल हो गए।

अरविंद केजरीवाल का कोर्ट वीडियो हटाने के लिए सुनीता केजरीवाल को नोटिस

नईदिल्ली, 15 जून [एजेंसी]।

दिल्ली उच्च न्यायालय ने शनिवार को अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल को नोटिस जारी कर उनसे अदालती कार्यवाही की वीडियो रिकॉर्डिंग हटाने को कहा, जब दिल्ली के मुख्यमंत्री ने शराब नीति मामले में अपनी गिरफ्तारी के बाद व्यक्तिगत रूप से अदालत को संबोधित किया था। न्यायमूर्ति नीना बंसल कृष्णा और अमित शर्मा की खंडपीठ ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स, फेसबुक, इंस्टाग्राम और यूट्यूब को निर्देश दिया कि वे उनके संज्ञान में आने पर इसी तरह की सामग्री को हटा दें। अदालत ने कई अन्य सोशल मीडिया हैंडल को भी वीडियो हटाने का निर्देश दिया। अधिवक्ता वैभव सिंह द्वारा दायर एक जनहित याचिका (पीआईएल) पर सुनवाई करते हुए अदालत ने यह आदेश पारित किया। यह वीडियो 28 मार्च का है, जब केजरीवाल ने प्रवर्तन निदेशालय द्वारा गिरफ्तारी के बाद दूसरी बार अदालत में पेश होने पर विशेष न्यायाधीश (पीसी एक्ट) कावेरी बावेजा को संबोधित किया था। अधिवक्ता वैभव सिंह ने तर्क दिया कि केजरीवाल द्वारा उक्त तिथि को राउज एवेन्यू कोर्ट को संबोधित करने के बाद, आम आदमी पार्टी (आप) और अन्य विपक्षी दलों से जुड़े कई सोशल मीडिया हैंडल ने अदालती कार्यवाही की वीडियो/ऑडियो रिकॉर्डिंग बनाई और उन्हें सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर पोस्ट कर दिया। सुनीता केजरीवाल ने एक एक्स यूजर द्वारा अपलोड की गई ऑडियो रिकॉर्डिंग को भी रीपोस्ट किया। सिंह ने तर्क दिया कि दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायालयों के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग नियम 2021 के तहत अदालती कार्यवाही की रिकॉर्डिंग प्रतिबंधित है और इन वीडियो को वायरल करना न्यायपालिका और न्यायाधीशों की छवि खराब करने का प्रयास है। उन्होंने कहा कि इस तरह के वीडियो पोस्ट करना अरविंद केजरीवाल और आप द्वारा रची गई साजिश का हिस्सा है।

एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी का बड़ा बयान

आधुनिक युग की लड़ाई सिर्फ जंग के मैदान तक सीमित नहीं

हैदराबाद। तेलंगाना के डंडीगल में एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी ने वायुसेना अकादमी में 213 ऑफिसर्स कोर्स की संयुक्त स्नातक परेड को संबोधित किया। शनिवार को इस परेड को संबोधित करते हुए एयर चीफ मार्शल ने कहा कि आधुनिक युग की लड़ाई अब केवल जंग के मैदान तक सीमित नहीं, बल्कि लगातार विकसित होने वाला एक परिदृश्य है। यह जटिल डेटा नेटवर्क और नए साइबर प्रौद्योगिकियों से प्रभावित हो रहा है। उन्होंने कहा कि हम पुरानी सोच के साथ कल के युद्ध को नहीं लड़ सकते। एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी कहा, आधुनिक युग की लड़ाई एक गतिशील और निरंतर विकसित होने वाला परिदृश्य है। यह केवल युद्ध के क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है। यह जटिल डेटा नेटवर्क और साइबर प्रौद्योगिकियों से तेजी से प्रभावित हो रहा है। एक लीडर के तौर पर आप लोगों को जंग जीतने के लिए प्रौद्योगिकी को प्रभावी ढंग से अपनाने के साथ उसका लाभ उठाना सीखना होगा।

ईडी का बड़ा एक्शनः 4440 करोड़ की संपत्ति जब्त, खनन माफिया पर कसा शिकंजा

लखनऊ। दुबई में छिपे खनन माफिया पूर्व एमएलसी हाजी इकबाल पर श्वष्ठ ईडी ने बड़ी कार्रवाई की है। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के लखनऊ जोनल कार्यालय ने सहारनपुर की ग्लोकल यूनिवर्सिटी की 4440 करोड़ रुपये मूल्य की 121 एकड़ भूमि और भवनों को अस्थाई तौर पर जब्त कर लिया। ये संपत्तियां अब्दुल वाहीद एजुकेशनल एंड चैरिटेबल ट्रस्ट के नाम पर पंजीकृत हैं। इस ट्रस्ट का प्रबंधन, नियंत्रण और संचालन पूर्व एमएलसी हाजी इकबाल और उनके परिवार द्वारा किया जाता है। यह कार्रवाई धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) 2002 के प्रावधानों के तहत अवैध खनन मामले में की गई है। ईडी ने सहारनपुर जिले में अवैध खनन और पट्टाधारकों के लाइसेंस के अवैध नवीनीकरण के मामले में सीबीआई दिल्ली द्वारा भ्रष्टाचार समेत विभिन्न दर्ज की गई एफआईआर के आधार पर यह दर्ज कर जांच शुरू की थी।

तीन नए आपराधिक कानूनों को प्रशिक्षण में करें शामिल, केंद्र का सभी मंत्रालयों और विभागों को नोटिस, 1 जुलाई से लागू होंगे कानून

नईदिल्ली, 15 जून [एजेंसी]।

औपनिवेशिक काल के आपराधिक कानूनों की जगह लेने वाले तीन नए आपराधिक कानून एक जुलाई से लागू होंगे। इसे देखते हुए कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग (डीओपीटी) ने सभी केंद्रीय मंत्रालयों और विभागों को विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नए आपराधिक कानूनों की विषय-वस्तु शामिल करने के लिए एक कार्यालय ज्ञापन जारी किया।

डीओपीटी ने कहा कि इस संबंध में सभी मंत्रालयों और विभागों से अनुरोध किया जाता है कि वे अपने प्रशासनिक नियंत्रण के तहत आने वाले प्रशिक्षण संस्थानों को उनके द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में इन तीन नए कानूनों को शामिल करने के लिए निर्देश जारी करें। नए कानूनों के माध्यम से किए जा रहे बदलावों की जानकारी के लिए ई-पाठ्यक्रमों का भी उपयोग किया जा सकता है, जो कर्मयोगी पोर्टल पर उपलब्ध है। कार्यालय ज्ञापन में कहा गया है कि केंद्र सरकार के विभाग प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने में किसी भी प्रकार की सहायता के लिए गृह मंत्रालय के अधीन पुलिस अनुसंधान एवं विकास ब्यूरो की सहायता ले सकते हैं।

सिरिल रामफोसा फिर बने दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति, जूलियस मालेमा को मिले सिर्फ 44 वोट

दक्षिण अफ्रीका 15 जून। सिरिल रामफोसा को एक बार फिर दक्षिण अफ्रीका का राष्ट्रपति चुना गया है। दक्षिण अफ्रीकी संसद ने 7वीं संसद की नेशनल असेंबली की पहली बैठक में सिरिल रामफोसा को राष्ट्रपति चुना है।

भूकंप के झटकों से हिला तिब्बत का जिजांग

नई दिल्ली। शनिवार सुबह तिब्बत का जिजांग भूकंप के झटकों से हिल उठा। भूकंप की तीव्रता रिक्टर स्केल पर 4.3 मापी गई। यह जानकारी राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र ने दी। भूकंप का केंद्र जमीन से 150 किलोमीटर की गहराई पर स्थित था। भूकंप सुबह 4.54 बजे आया।

स्किन केयर व कास्मेटोलाजी क्लिनिक
चर्म , गुप्त, कुष्ठ रोग विशेषज्ञ एवं सैक्स सलाहकार
डॉ.आर.के.अग्रवाल
M.B.B.S.D.V.D.FDS (Lond.)F.i.a.m.s.(Ind.)
Mob.9424170010
-: परामर्श का समय :-
सुबह 10.30 से 1.30
(शाम को बंद)
डॉ.शशि अग्रवाल
M.B.B.S.D.V.D.(U.K)
Mob.9826389894
सुविधायें:- गंजापन, मस्से हटाना, दाद खाज खुजली, एक्जीमा, एलर्जी, सड़े नाखून, कुष्ठ रोग, काले दाग, मुंहासे, बाल झड़ना, सेक्स की कमी, शीघ्र पतन, धात, मानसिक रोगों का मशीनों व अत्याधुनिक दवाओं द्वारा शीघ्र ईलाज, फोटोथेरेपी, इलेक्ट्रीशिकेशन, क्रायोसर्जरी, सायकोथेरेपी का ईलाज।
मो. 9203907928,9826389894 (क्लीनिक)
विशेष : बुधवार को 20 मरीजों का फीस माफ...
पता : एचआईजी -4 नेहरू नगर , रिकाण्डो रोड घोड़ा चौक , बुधवारी बाजार के पास, कोरबा

छपरा में दिल दहलाने वाली घटना... चलती कार में लगी भीषण आग

तरैया, 15 जून [एजेंसी]।

सारण के थाना क्षेत्र के पोखड़ेरा बगही मिस्त्री टोला प्राथमिक विद्यालय के पास एसएच 104 पर चलती कार में भीषण आग लगने से एक महिला जिंदा जल गई। उससे उसकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई। यह घटना शनिवार के अहले सुबह की है।

मृतका अवतार नगर थाना के पकौलिया गोराईपुर गांव के दीपक कुमार राय की 28 वर्षीय पत्नी सोनी कुमारी थी। इस घटना में मृतका के पति भी बचाने में आंशिक रूप से जलकर जख्मी हो गए। उनका प्राथमिक उपचार रेफरल अस्पताल तरैया में किया गया। उन्होंने बताया कि वह 13 जून की सुबह अपने ससुराल गड़खा थाना के मोरा बसंत गांव से अपनी पत्नी के साथ कार में सवार होकर अयोध्या दर्शन करने गए हुए थे। वहां से लौटते समय गोरखपुर रुक कर वहां गोरखधाम का दर्शन किए। फिर वहां से कार में सवार होकर अपनी पत्नी के साथ अपने ससुराल लौट रहे थे, तभी बगही में कार से धुंआ निकलने लगा। जैसे जैसे कार से निकल कर अपनी पत्नी को भी कार से निकालने का प्रयास लगे। तभी कार में भीषण आग लग गई और वह जिंदा जल कर गई।

आपसी समन्वय और धार्मिक सद्भाव पूर्वक मनाएं ईद-उल-जुहा पर्व:प्रभारी कलेक्टर

कोरबा । ईद-उल-जुहा (बकरीद) पर्व शांतिपूर्ण ढंग से मनाने को लेकर नगर निगम आयुक्त एवं प्रभारी कलेक्टर श्रीमती प्रतिष्ठा ममगाई की अध्यक्षता में जिला स्तरीय शांति समिति की बैठक कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित हुई। बैठक में 17 जून को ईद-उल-जुहा (बकरीद) पर्व आपसी भाईचारे व धार्मिक सद्भावनापूर्ण ढंग से मनाए जाने का निर्णय लिया गया। प्रभारी कलेक्टर ने मुस्लिम समुदाय के लोगों से अपील करते हुए कहा कि वे पहले की तरह इस बार भी आपसी समन्वय और भाईचारे की भावना के साथ ईद-उल-जुहा पर्व को मनाएं। उन्होंने इस पर्व के मद्देनजर ईदगाहों और मस्जिदों के आसपास आने-जाने वाले मार्गों पर ट्रैफिक एवं पार्किंग की व्यवस्था भी सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। साथ ही साफ-सफाई हेतु नगर निगम को निर्देशित किया गया है।

श्रीमती ममगाई ने कहा कि धार्मिक सद्भावना कायम रहे इसके लिए सभी को एक दूसरे के धर्म और आस्था का ध्यान रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया पर किसी भी तरह के भ्रामक सूचनाओं के प्रचार-प्रसार से बचना चाहिए। ऐसे लोगों पर खुद भी नजर रखें और इसकी जानकारी पुलिस प्रशासन को तत्काल देवें ताकि समय रहते आवश्यक कदम उठाया जा सके।

बैठक में उपस्थित मुस्लिम जमात के पदाधिकारियों ने बताया कि बकरीद पर्व मनाने के लिए उनकी ओर से तैयारी कर ली गई है।

ईद-उल-जुहा पर्व में सुबह जमात के लोग ईदगाह व मस्जिदों में जाकर नमाज अता करते हैं। जिले के शहरी, उपनगरीय और ग्रामीण क्षेत्रों में सुबह 07 से 08:30 बजे तक नमाज अता की जाएगी। इसके पश्चात परंपरा अनुसार अपने-अपने घरों में कुर्बानी का पर्व मनाएंगे। ईद-उल-जुहा पर्व के दौरान किसी भी तरह के धार्मिक जुलूस रैली और सभा का आयोजन नहीं किया जाएगा। प्रभारी कलेक्टर ने पर्व के पूर्व सभी थाना क्षेत्रों में एसडीएम व एसडीओपी को शांति समिति की बैठक आयोजित करने के निर्देश भी दिए। बैठक में अपर कलेक्टर श्री दिनेश नाग एवं श्री अनुपम तिवारी, एडिशनल एसपी नेहा वर्मा, डीएसपी प्रतिभा मरकाम, डिप्टी कलेक्टर श्री तुलाराम भारद्वाज, तहसीलदार राहुल देव पाण्डेय, वरिष्ठ अधिवक्ता अशोक तिवारी सहित मुस्लिम समाज के पदाधिकारी व सदस्य व राजनीतिक दल व अन्य संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, मिनी कार्यकर्ता एवं सहायिका के रिक्त पदों में भर्ती के लिए आवेदन आमंत्रित

कोरबा । एकीकृत बाल विकास परियोजना अंतर्गत परियोजना के आंगनबाड़ी केन्द्रों में रिक्त पदों पर भर्ती के लिए आवेदन आमंत्रित किया गया है। परियोजना अंतर्गत रिक्त पदों पर भर्ती के लिए आवेदन 18 जून 2024 से आमंत्रित किया गया है। आवेदन प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 02 जुलाई 2024 निर्धारित की गई है। आवेदन निर्धारित प्रारूप में कार्यालय परियोजना अधिकारी एकीकृत बाल विकास परियोजना में निर्धारित तिथि तक कार्यालयीन समय में सीधे अथवा पंजीकृत डाक कार्यालय के माध्यम से जमा कर सकते हैं। भर्ती के संबंध में नियम, शर्तें, आवेदन प्रारूप एवं अन्य जानकारी के लिए एकीकृत बाल विकास परियोजना कार्यालय कोरबा ग्रामीण से संपर्क किया जा सकता है।परियोजना अधिकारी एकीकृत बाल विकास परियोजना ने बताया कि आंगनबाडी कार्यकर्ता हेतु ग्राम पंचायत सोनगुढ़ा के आंगनबाड़ी केंद्र सोनगुढ़ा 2, ग्राम पंचायत बरीडीह के केंद्र बरीडीह 1 व मोहनपुर 2, ग्राम पंचायत बासीन के केंद्र बासीन 1, ग्राम पंचायत सोनपुरी के केंद्र सराईपाली तथा ग्राम पंचायत केरवां के केंद्र केरवां में भर्ती की जाएगी। इसी प्रकार सहायिकाओं हेतु ग्राम पंचायत नकटीखार के आंगनबाड़ी बाड़ी केंद्र नकटीखार 1 व नकटीखार (मुड़ापारा), ग्राम पंचायत केराकछार के केंद्र बगझरीडांड, ग्राम पंचायत डोकरमना के चिराईझुंझ व झलरीमौहा तथा ग्राम पंचायत उरगा के केंद्र उरगा 1 में भर्ती की जाएगी।आवेदिकाओं को उसी गांव की निवासी होनी चाहिए जिस गांव के आंगनबाड़ी केन्द्र में पद रिक्त हैं। आवेदिका की आयु 18 से 44 वर्ष के मध्य होनी चाहिए। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं मिनी कार्यकर्ता पद के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता बारहवीं अथवा पुरानी पद्धति की ग्यारहवीं बोर्ड उत्तीर्ण है। आवेदन पत्र के साथ समस्त संलग्न दस्तावेज अभिप्रमाणित या स्वप्रमाणित होना अनिवार्य है।

नगर पंचायत छुरी में उपाध्यक्ष को हटाने की तैयारी

कोरबा। लोकसभा चुनाव संपन्न होने के बाद नगर पंचायत में नया अध्यक्ष बनाने तथा उपाध्यक्ष के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने को लेकर पार्षदों के बीच सरगर्मी तेज हो गई है,28 फरवरी को नगर पंचायत अध्यक्ष के हटने के बाद नया अध्यक्ष पार्षद शकुंतला तीरथ गोंड़ को बनाए जाने 10 पार्षदों के सहमति के साथ प्रस्ताव पारित कर जिला प्रशासन को सौंपी गई थी। लेकिन एक पार्षद द्वारा अध्यक्ष के लिए दावेदारी किये जाने एवं लोकसभा चुनाव के कारण नये अध्यक्ष बनाने का मामला अधर मे लटक गया। चुनाव संपन्न होने के बाद नया अध्यक्ष बनाने व उपाध्यक्ष को हटाने का मामला जोर पकडने् लगा है। इस सबंध में पार्षद हीरालाल यादव ने बताया कि नगर पंचायत अध्यक्ष के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने से पहले नगर पंचायत उपाध्यक्ष को हटाने के खिलाफ तीन पार्षद हीरालाल यादव, मधु राजकुमार अग्रवाल और रामशरण साहू के हस्ताक्षर युक्त अविश्वास प्रस्ताव तत्कालिक जिला दणडाधिकारी कोरबा को 21 जनवरी 2022 को सौंपा गया था, लेकिन उक्त अविश्वास प्रस्ताव पर जिला प्रशासन द्वारा अमल नहीं किये जाने पर पुन÷6 पार्षदों के हस्ताक्षर युक्त अविश्वास प्रस्ताव ज्ञापन 24 फरवरी 2022 को दिया गया इसके उपरांत जिला प्रशासन को उपाध्यक्ष के खिलाफ दिये अविश्वास प्रस्ताव पर कार्यवाही नहीं किये जाने को लेकर पांच बार स्मरण पत्र जिला प्रशासन को दिया गया। जिला प्रशासन द्वारा अविश्वास प्रस्ताव पर कार्यवाही करने के बजाय ठंडे बस्ते में डाल दिया गया। हीरालाल यादव ने बताया कि नगर पंचायत उपाध्यक्ष को पद से हटाने को लेकर पिछले तीन सालों से लगातार पार्षदों द्वारा आवेदन दिये जा रहे है, लेकिन इस पर पहल नहीं होने से क्षुब्ध होकर पार्षदगण उच्च न्यायालय के शरण में जाने का मन बनाया है।

कटघोरा में बिजली व्यवस्था बदहाल, शांति समिति की बैठक में उठाया गया मुद्दा

कोरबा । कोरबा जिले के कटघोरा नगर में बिजली सप्लाई व्यवस्था का बहुत बुरा हाल है। मुस्लिम समुदाय के ईद-उल-अजहा पर्व के मद्देनजर कटघोरा तहसील के एसडीएम सभागार में शांति समिति की बैठक में यह मुद्दा सदस्यों ने उठाया। मेंटेनेंस के बावजूद बिजली सप्लाई व्यवस्था में सुधार नहीं होने पर नाराजगी जताई। इस पर एसडीएम सरोज महिलांग ने बिजली अधिकारियों की बैठक लेकर समस्या के निदान पर चर्चा करने का भरोसा दिलाया। एसडीएम महिलांगे ने शांति समिति की बैठक में ईद-उल-अजहा को शांतिपूर्ण व भाईचारा के माहौल में मनाने अपील की। समिति के सदस्यों को बताया कि नगर के प्रमुख चौक-चौराहे पर पुलिस के जवानों की तैनाती रहेगी। क्षेत्र में पुलिस पेट्रोलिंग गश्त करेगी। असामाजिक तत्वों पर विशेष नजर रखी जाएगी। अफवाह फैलाने पर प्रशासन को सूचना दें। सभी मिल-जुलकर ईद उल अजहा का पर्व मनाएं। सोशल मीडिया पर विवादित या आपत्तिजनक पोस्ट वायरल करने पर भी कार्रवाई की जाएगी।

बैठक में कटघोरा तहसीलदार भूषण सिंह मंडावी, आरआई, कटघोरा थाना एएसआई आत्माराम कंवर, दीपका दर्दी थाना प्रभारियों के अलावा कटघोरा नगर पालिका के अध्यक्ष रतन मित्तल, पूर्व उपाध्यक्ष पवन अग्रवाल, कांग्रेस के पूर्व ब्लॉक अध्यक्ष अशरफ मेमन, कटघोरा बीएमओ रुद्रपाल सिंह कंवर, अजय धनोदिया, राहुल डिक्सेना, शिवशंकर जायसवाल सहित अन्य मौजूद रहे।

संक्रामक व जलजनित बीमारियों से बचाव हेतु करें सतत कार्यवाही-आयुक्त सुश्री प्रतिष्ठा ममगाई

कोरबा । कोरबा नगर निगम आयुक्त सुश्री प्रतिष्ठा ममगाई ने निगम के अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा है कि वर्षा ऋतु का आगमन हो चुका है, अत: इसे देखते हुए जलजनित व कीटजनित बीमारियों से बचाव हेतु त्वरित रूप से आवश्यक कार्यवाही करें, नालियों आदि में कीटनाशक दवाओं का छिड़काव व पाईप लाईनो के माध्यम से आपूर्ति किए जाने वाले पेयजल की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दें, अन्य पेयजल स्त्रोतों की शुद्धता की भी आवश्यकतानुसार जांच कराएं तथा दूषित पानी पाए जाने पर तत्काल उसे उपचारित कर जल का शुद्धिकरण कराएं।

आयुक्त सुश्री ममगाई ने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा है कि वर्षा ऋतु के दौरान संक्रामक व जलजनित बीमारियों जैसे पीलिया, डायरिया, डिसेंटरी, डेंगू, मलेरिया, आदि की संभावनाएं बनी रहती है, इन बीमारियों से बचाव व सुरक्षा हेतु अभी से ही एहतियाती कदम उठाएं तथा आवश्यक कार्यवाही करें। उन्होने निगम के स्वास्थ्य विभाग को निर्देशित करते हुए कहा है कि नालियों व अन्य जल ठहरने वाले स्थलों पर लगातार कीटनाशक दवाओं का छिड़काव सुनिश्चित करें, सफाई कार्यो व स्वच्छता पर कड़ी नजर रखें, वहीं जलप्रदाय विभाग के अधिकारियों को निर्देश देते हुए उन्होने कहा है कि जल प्रदाय हेतु स्थापित पानी टंकियों की सफाई, पाईप लाईनों में यदि लिकेज या टूट-फूट होता है तो तत्काल सुधार कार्य, सार्वजनिक नल व हैंण्डपम्पों की सफाई, हैंण्डपम्पों के जल को कीटाणु रहित करने ब्लीचिंग पाउडर आदि का उपयोग आदि की कार्यवाही कराएं।आयुक्त सुश्री ममगाई ने निर्देशित करते हुए कहा कि वर्षा ऋतु के दौरान कीटजनित बीमारियों की संभावना बनी रहती है, अत: मच्छरों आदि को पनपने व उनको बढ़ने से रोकने के लिए लगातार वार्ड, बस्तियों व आवासीय क्षेत्रों में कीटनाशक दवाओं का छिड़काव जारी रखें, लोगों के घरों में रखें हुए कूलरों का पानी प्रतिदिन बदला जाए, इस दिशा में लोगों को लगातार जागरूक करें, उन्हें समझाईश दें कि वे कूलर का पानी प्रतिदिन बदले, साथ ही उनके घर या आसपास में रखी हुई अपशिष्ट सामग्रियों में पानी का जमाव न होने पाएं, इस हेतु सजग रहें।

आयुक्त सुश्री ममगाई ने आमनागरिकों से अपील करते हुए कहा है कि जलजनित बीमारियों जैसे पीलिया डायरिया, डिसेंटरी व कीटजनित बीमारियों जैसे डेंगू, मलेरिया आदि से बचाब व सुरक्षा हेतु आवश्यक सावधानी बरतें, स्वच्छ पेयजल का उपयोग करें, घरों में मच्छरों को न पनपने दें, कूलर, छत व घर के आसपास पानी जमा न होने दें, कूलर पानी की टंकी, खाली टायर, फूलदान, छत में रूका बरसाती पानी सहित अन्य अपशिष्ट वस्तुओं में रूका हुआ बरसाती पानी नियमित रूप से खाली कराएं ताकि मच्छरों के पैदा होने व उनके पनपने का अवसर न मिले, घरों के दरवाजे व खिड़कियों में जाली, परदें लगाएं, सोते समय मच्छरदानी का उपयोग करें, मच्छरनाशक दवाओं का छिड़काव कराएं।निगम के स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. संजय तिवारी ने बताया कि आयुक्त के निर्देशानुसार वार्डवार रोस्टर तैयार कर नालियों, जलस्त्रोतों के आसपास तथा अन्य आवश्यक स्थलों पर निगम द्वारा कीटनाशक दवाओं का छिड़काव प्रारंभ कर दिया गया है ताकि मच्छरों आदि के पनपने व उनको बढ़ने से रोका जा सके। उन्होने बताया कि निगम के स्वच्छता विभाग के अधिकारी कर्मचारियों द्वारा इस दिशा में लोगों को निरंतर जागरूक भी किया जाए

लगभग 24 घंटे से तुमान फीडर में ब्रेक डाउन-दर्जनों गांव प्रभावित

कोरबा । कोरबा जिले में लगातार लचर विद्युत व्यवस्था से जनमानस हलाकान हैं। प्रदेश में सत्ता परिवर्तन के बाद भी ऊर्जानगरी की लचर विद्युत व्यवस्था दुरुस्त होने का नाम नहीं ले रही।

इसी क्रम में विद्युत वितरण केंद्र बरपाली के बरपाली फीडर में जहां ज़रा सी आंधी-तूफ़ान में बिजली व्यवस्था चरमरा जाती है, वहीं तुमान फीडर के दर्जनों गांव लगभग 24 घंटे से ब्रेक डाउन होने से अंधेरे में डूबे हैं। यहाँ ज़रा सी आंधी-तूफ़ान में बिजली के खंबे गिर जाते हैं। जिससे विद्युत् आपूर्ति बाधित हो जाती है, जिसके निराकरण में यहाँ कई दिनों का समय लग जाता है। बेचारे ग्राम के भोले-भाले ग्रामीणों को इस भयावह गर्मी का दंश झेलना पड़ता है। संबंधित विभाग के जिम्मेदार अधिकारी तो अपना मोबाइल तक बंद कर देते है।

कोरबा जिले में बिना बारिश, तूफान के बाद भी बिजली बंद रहना आम बात हो गई है। ग्रामीण क्षेत्र में तो और भी बुरा हाल हैं। संबंधित विभाग के जिम्मेदार अधिकारी कब तक विद्युत व्यवस्था बहाल होगी यह बता पाने में विफल रहते हैं। जिसकी वजह से ग्राम तुमान, सराईडीह, पकरिया, बंधवाभांठा, सलिहाभांठा सहित दर्जनों गांव के 10 हजार से अधिक उपभोक्ताओं को इस भीषण गर्मी में पता नहीं कब तक रतजगा करना पड़ेगा। आए दिन इन दोनों फीडरों की लचर विद्युत व्यवस्था ने राज्य सरकार के खोखले दावों की भी पोल खोल दी है।

पैरालीगल वॉलंटियर को दिया गया प्रशिक्षण

कोरबा । कोरबा जिले के सभी 17 थानों में नियुक्त पैरालीगल वॉलंटियर का प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित हुआ। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव डिंपल ने बताया कि सुप्रीम कोर्ट नई दिल्ली के द्वारा विशेष लोक अदालत 29 जुलाई से 3 अगस्त तक के प्री-सीटिंग के लिए नोटिस जारी किया है। इन संबंधित नोटिसों की जल्द तामिली की जाए। लोक अदालत का जिला व तालुक स्तर के सभी पिछड़े गांवों, दुर्गम स्थलों में प्रचार कर लोगों को लोक अदालत का अधिक से अधिक लाभ देने प्रेरित करें।

पैरालीगल वॉलंटियर को बचपन बचाओ आंदोलन के तहत नाबालिग बच्चों के गुमशुदगी से संबंध में मॉनिटरिंग करने नियुक्त किए गए हैं, वे थानों के क्षेत्राधिकार के अंतर्गत गुमशुदा नाबालिग बच्चे दस्तयाब हुए अथवा नहीं, यदि नहीं हुए तो थानों द्वारा कार्यवाही के स्तर के संबंध में हर महीने प्रतिवेदन जरूरी रूप से प्राधिकरण के समक्ष प्रस्तुत करें। साथ ही साथ अरेस्ट, प्री-अरेस्ट, रिमांड स्तर पर विधिक सहायता संबंधी जानकारी प्रदान करते हुए पैरालीगल वॉलिंटियर के कार्य और उनके कार्यक्षेत्र में आ रही समस्याओं के संबंध में विस्तार से जानकारी ली।

रेलवे ओवरब्रिज सड़क पर ज्वाइंट में गैप मटेरियल भरकर आवाजाही में राहत देने का प्रयास

हरदीबाजार से नेवसा, बिलासपुर जाने के लिए इस मार्ग से होती है वाहनों की आवाजाही

कोरबा । कोरबा जिलान्तर्गत हरदीबाजार से नेवसा मार्ग पर रेलवे ओवरब्रिज सड़क के ज्वाइंट पर गैप हो गया था। इसमें मटेरियल भरकर लोगों को आवाजाही में राहत देने का प्रयास किया जा रहा हैं। बिलासपुर जाने के इसी मार्ग का उपयोग होता है। इसी कारण इस सड़क पर वाहनों का दबाव अधिक रहता हैं। इसके ज्वाइंट में गेप के कारण वाहन के अनियंत्रित होने से हादसे का डर बना रहता था।एसटीपीसी सीपत की रेल लाइन यहाँ से गुजरने के कारण हरदीबाजार-नेवसा मार्ग पर रेलवे ओवर ब्रिज का निर्माण कराया गया है। हरदीबाजार की ओर से नेवसा, उतरदा, सिल्ली, बोईदा, कुली-खमरिया व आगे सीपत बिलासपुर जाने इसी सड़क का उपयोग होता है। रेलवे ओवरब्रिज का ज्वाईट गेप हो गया था। इससके कारण पुल के पार करते समय गेप के कारण वाहन बेकाबू होने पर हादसे का डर बना रहता था, क्योंकि जिस स्थान पर पुल पर ज्वाइंट गैप हैं, वहां पर ही दुर्घटना रोधक रेलिंग भी नहीं हैं। एनटीपीसी सीपत प्रबंधन ने पुल के ज्वाइंट के गेप में मटेरियल भरकर आवाजाही में राहत दी है।

आयोजित शिविर में एनसीसी कैडेट्स ने किया रक्तदान

कोरबा । कोरबा अंचल में कमला नेहरु कॉलेज के एनसीसी इकाई के कैडेट्स ने रक्तदान किया। जिला अस्पताल में वन छत्तीसगढ़ बटालियन एनसीसी कोरबा के मार्गदर्शन में रक्तदान दिवस पर यह शिविर आयोजित किया गया।

लंबित रोजगार प्रकरणों में रोजगार देने की मांग को लेकर सकारात्मक चर्चा के बाद 14 जून का हड़ताल

कोरबा। एसईसीएल के कुसमुंडा क्षेत्र के प्रभावित गांव के भू विस्थापितों ने छत्तीसगढ़ किसान सभा और भू विस्थापित रोजगार एकता संघ के नेतृत्व में लंबित रोजगार की प्रकरणों का निराकरण कर सभी खातेदारों को रोजगार देने की मांग को लेकर 14 जून को एसईसीएल कुसमुंडा महाप्रबंधक का घेराव प्रदर्शन की चेतावनी दी थी कुसमुंडा महाप्रबंधक राजीव सिंह ने आंदोलन से पहले ही भू विस्थापितों के प्रतिनिधि मंडल को मांगो के संबंध में चर्चा के लिए बुलाया। रोजगार की मांग पर सकारात्मक चर्चा के बाद आंदोलन को स्थागित करते हुए भू विस्थापितों के प्रतिनिधि मंडल ने कहा कि मांगो पर सकारात्मक पहल नहीं होने पर 10 दिनों बाद खदान बंद किया जाएगा। किसान सभा के नेता प्रशांत झा ने बैठक में एसईसीएल के अधिकारियों से कहा की सभी भू विस्थापित किसानों जिनकी जमीन एसईसीएल ने अधिग्रहण किया है उन सभी खाते पर भू विस्थापितों को स्थाई रोजगार एसईसीएल को देना होगा। विकास परियोजना के नाम पर गरीबों को सपने दिखा कर करोड़ों लोगों को विस्थापित किया गया है अपने पुनर्वास और रोजगार के लिये भू विस्थापित परिवार आज भी भटक रहे हैं।

भू विस्थापित रोजगार एकता संघ के दामोदर श्याम,रेशम यादव, बृजमोहन ने कहा कि 1978 से लेकर 2004 के मध्य कोयला खनन के लिए जमीन को अधिग्रहित किया गया है लेकिन तब से अब तक विस्थापित ग्रामीणों को न रोजगार दिया गया है न पुनर्वास ऐसे प्रभावितों की संख्या सैकड़ों में है। लंबित रोजगार प्रकरणों में रोजगार के संबंध में एसईसीएल के महाप्रबंधक ने कहा कि खातेदारों को रोजगार देने की प्रक्रिया में तेजी आयेगी जल्द 5 भू विस्थापितों का फाइल 10 दिनों में बिलासपुर मुख्यालय भेज दिया जायेगा बैठक में भू विस्थापितों की ओर से किसान सभा के प्रशांत झा, रोजगार एकता संघ से दामोदर श्याम,रेशम यादव, बृजमोहन, के साथ प्रभावित भू विस्थापित उपस्थित थे बैठक में लंबित रोजगार प्रकरणों में रोजगार देने को लेकर सकारात्मक चर्चा हुई। बैठक में भूविस्थापितों ने एसईसीएल के अधिकारियों से कहा कि 10 दिनों में रोजगार देने को लेकर उचित कार्यवाही नहीं होने पर खदान को बंद किया जाएगा।

बैठक में भू विथापितों की और से प्रमुख रूप से जय कौशिक, अनिल बिंझवार,रघुनंदन, कृष्ण कुमार, हरिहर, होरीलाल, अनिरुद्ध, उत्तम, जितेंद्र, गणेश,मानिक दास, चंद्रशेखर, फणींद्र, के साथ बड़ी संख्या में भू विस्थापित उपस्थित थे।

भगवती देवी अग्रवाल अग्र अलंकरण समारोह में हुई सम्मानित

कोरबा । अन्तर्राष्ट्रीय अग्रवाल सम्मेलन अंतर्गत अग्र अलंकरण समारोह में सेवाभावी कार्यों के लिए संगठन कोरबा जिलाध्यक्ष भगवती देवी अग्रवाल को विशिष्ट प्रतिभा सम्मान से नवाजा गया है। कोलकाता के एक होटल में अग्र अलंकरण समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें भगवती देवी अग्रवाल भी सम्मानित हुईं। उनके सेवाभावी कार्यों को सराहा गया। बता दे की संगठन में भगवती देवी अग्रवाल प्रांतीय मीडिया प्रभारी और बेटी बचाओ की संयोजक भी हैं।

नेता प्रतिपक्ष चरण दास महंत सहित कांग्रेस के कई दिग्गज नेता पहुंचे बलौदा बाजार

मुख्यमंत्री से मांगा इस्तीफा

कोरबा प्रदेश के बलौदा बाजार में हुई हिंसा के बाद प्रदेश नेता प्रतिपक्ष चरणदास महंत के साथ कांग्रेस पार्टी के सभी 30 विधायक और नेता गाड़ियों के काफिले के साथ बलौदाबाजार पहुंचे। यहां कांग्रेस के नेताओं ने सबसे पहले कलेक्ट्रेट परिसर और एसपी कार्यालय का जायजा लिया।

इस दौरान नेता प्रतिपक्ष चरणदास महंत ने मीडिया से चर्चा करते हुए कहा की जो सरकार अपने कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक कार्यालय को नहीं बचा सकता है, वह हर तरीके से असक्षम है। हम विष्णु देव साय सरकार से इस्तीफे की मांग करते हैं।

उन्होंने आगे कहा कि साय सरकार की अकर्मण्यता के चलते बलौदाबाजार में कानून व्यवस्था बिगड़ी है। धार्मिक भावनाएं आहत होने पर समाज को विश्वास में लिया होता तो यह स्थिति नहीं बनती। मुख्यमंत्री अपने पद से इस्तीफा दें और पूरी घटना के निष्पक्ष जांच कर दोषियों को जल्द से जल्द सजा दिलाने मांग की।

सरकारी अस्पताल में आर्थिक गड़बड़ी करने वालो पर कब होगी कार्रवाई

कोरबा-पाली। अपने नये-नये कारनामो के कारण हमेशा सुर्खियों में रहने वाले सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पाली अस्पताल आईसीयू से बाहर नहीं निकल पा रहा है।विगत दिनों एक दुर्घटना में आहत व्यक्ति को लेकर जब ग्रामीण सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पाली पहुंचे तब स्वास्थ्य केंद्र के पास ना तो व्हीलचेयर थी और ना ही स्ट्रेचर। साथ ही अस्पताल में डॉक्टर भी उपस्थित नहीं थे जिससे नाराज होकर ग्रामीणों ने विरोध दर्ज कराया था। साथ ही क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों ने भी नाराजगी जताते हुए व्यवस्था सुधारने कहा था किंतु आज भी व्यवस्थाएं सुधरने का नाम नहीं ले रही हैं।अस्पताल के कमरा नंबर 5 को चिकित्सक कक्ष बनाया गया है जिसमें चिकित्सक बैठते ही नहीं और अगर बैठते भी हैं तो पल भर के लिए। बाकी समय अपने निज निवास एवं स्व संचालित क्लिनिक में उपचार करते नजर आते हैं।बुधवार शाम करीब 6 बजे अस्पताल में चिकित्सक कक्ष क्रमांक 5 में देखा गया तो वहां पर कोई भी चिकित्सक उपलब्ध नहीं था। पूछने पर पता चला कि डॉक्टर साहब अपने निवास या क्लीनिक में होंगे, जरूरत पड़ने पर उन्हें बुलाया जाएगा। पूरा अस्पताल भगवान भरोसे चल रहा है ऐसा प्रतीत होता हैविगत दिनों एक ग्रामीण अपने दांत की परेशानियों को लेकर दंत रोग विशेषज्ञ के पास सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पाली पहुंचा था जहां पर उसने पर्ची कटा कर दांतों के डॉक्टर वाले कक्ष में प्रवेश किया। उपस्थित एक व्यक्ति ने अपने आपको डॉक्टर बताते हुए इलाज आरंभ कर दिया और मरीज से बोला कि आपके दांतों का एक्स-रे होना है जिसकी सुविधा हमारे अस्पताल में नहीं है और अभी मशीनों में कुछ तकनीकी खराबियां आ गई है इसलिए निजी दंत चिकित्सक के पास अपना उपचार कर सकते हैं। इसके कुछ समय पश्चात असली डॉक्टर ने कक्ष में प्रवेश किया तो पता चला कि सामने जो बैठा है वह नकली डॉक्टर है। फिर ग्रामीण नाराजगी जताते हुए और शिकायत की बात कहते हुए वहां से चले गए । शिकायत के लिए उसने खंड चिकित्सा अधिकारी से फोन में बात करने का प्रयास किया किंतु चिकित्सा अधिकारी फोन नहीं उठाये।

पाली अस्पताल के विश्वस्त सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के जिम्मेदार अधिकारी/कर्मचारी जिनके ऊपर एक मामले में लगभग एक करोड रुपए का गबन का आरोप लगा हुआ है।दूसरा मामला लगभग 20 लाख रुपए के गबन का भी है। आरोप अधिकारी के ऊपर लगे होने की जानकारी मिली है जिसकी जांच अंदर ही अंदर चल रही है। एक को तो नोटिस थमा दिया गया है पर जिला मुख्यालय से कुछ भी उजागर नहीं किया जा रहा। सूत्रों की माने तो मामले को दबाने का भरपूर प्रयास किया जा रहा है। अब देखना यह है की साहब मामले को दबाकर कब तक रख पाते हैं

प्रशिक्षण दे संख्यात्मक ज्ञान में बनाया जा रहा दक्ष

कोरबा । कोरबा जिले के हरदीबाजार क्षेत्र में स्वामी आत्मानंद स्कूल में प्राइमरी विद्यालय की कक्षा पहली व तीसरी के छात्रों को नवाचार व गतिविधियों के माध्यम से बुनियादी साक्षरता व संख्यात्मक ज्ञान में दक्ष बनाने शिक्षकों को शिक्षा नीति 2020 के अनुसार एफएलएन के तहत प्रशिक्षण दिया। पाली ब्लॉक के प्राइमरी विद्यालय के शिक्षकों का ब्लेंडेड मोड पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ। पाली बीईओ श्यामानंद साहू ने प्रशिक्षण हॉल में शिक्षकों को बेहतर ट्रेनिंग से लक्ष्य हासिल करने प्रेरित किया। बीआरसीसी रामगोपाल जायसवाल ने एफएलएन के लक्ष्य को सही समय व सही तरीके से प्राप्त करने में शिक्षकों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया। एबीईओ मनीराम मरकाम ने कार्यशाला की सार्थकता के लिए शिक्षकों को प्रेरित किया। प्रशिक्षण कार्यक्रम को जोन प्रभारी रिंकू लोध डाइट कोरबा, एसआरजी तृप्ति चंद्रवंशी के मार्गदर्शन में हरदी बाजार जोन 1 ब्लॉक पाली में एफएलएन प्रशिक्षण के पहले चरण का हुआ।

प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर पूनम अहीर, हरीश जायसवाल, सहायक एमटी ज्योति निषाद, वसुंधरा कुर्रे, चांदनी सोनी, जे.पी. तिवारी, होरीलाल पाटले सहित अन्य का सहयोग रहा।

18 जून को जारी होगी किसान सम्मान निधि की किस्त

कोरबा। 18 जून को किसान सम्मान निधि की किस्त 2 हजार रुपए हितग्राहियों के बैंक अकांउट में जारी होने वाली है, लेकिन किस्त जारी होने से पहले बचे ऐसे किसान जिन्होंने पूर्व में डीबीटी और केवाईसी नहीं करवाया है। उन्हें केवाईसी करवाने के साथ-साथ डीबीटी करवाने के लिए कहा है। दरअसल पीएम नरेंद्र मोदी 18 जून को पीएम किसान सम्मान निधि की 17वीं किस्त जारी करेंगे। पीएम मोदी अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी से किसानों को 2-2 हजार रुपए की किस्त ट्रांसफर करेंगे। शुरुआत में जब पीएम-किसान योजना (फरवरी, 2019) शुरू की थी तो इसका लाभ केवल छोटे और सीमांत किसानों के परिवारों को ही मिलता था। इसमें वो किसान शामिल थे, जिनके पास 2 हेक्टेयर तक की कम्बाइड लैंड होल्डिंग (संयुक्त भूमि) थी। जून 2019 में स्कीम को रिवाइज किया और सभी किसान परिवारों के लिए इसे एक्सटेंड कर दिया गया। हालांकि, कुछ किसानों को अभी भी योजना से बाहर रखा गया है। किसान से बाहर किए गए लोगों में संस्थागत भूमिधारक, संवैधानिक पदों पर बैठे किसान परिवार, राज्य या केंद्र सरकार के सेवारत या रिटायर्ड अधिकारी और कर्मचारी है। बड़ी संख्या में जिले के किसानों को इस योजना का लाभ मिला है। जिन किसानों का केवाईसी व डीबीटी, लैंड सीडिंग नहीं हुआ है वे नजदीकी सीएससी सेंटर में जाकर पूर्ण करवा सकते हैं। इसके अलावा स्थानीय पटवारी, राजस्व अधिकारी और योजना के लिए राज्य सरकार की ओर से नामित नोडल अधिकारी से भी मदद ले सकते हैं।

जल्दबाजी में पार किया फाटक, मालगाड़ी से टकराया युवक

सक्ती। बंद फाटक पार करने के दौरान बाइक सवार एक युवक मालगाड़ी की चपेट में आ गया। इससे बाइक बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया वही एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। उपचार के लिए उसे जिला अस्पताल सक्ती में भर्ती कराया गया।शुक्रवार की दोपहर लगभग 3.30 बजे बंद सोंठी के राधाकृष्ण मंदिर के पास रहने वाला शिवा पटेल अपनी बाईक क्रमांक सीजी 11 एटी 1831 से सिंघनसरा की तरफ से सक्ती शहर आ रहा था। इस दौरान सोंठी रेल फाटक बंद था। शिवा जैसे तैसे एक तरफ के बंद फाटक को पार कर दूसरी तरफ की फाटक को पार करने के लिए जा रहा था। इसी दौरान अचानक तेज रफ्तार से मालगाड़ी पटरी पर आ गया और युवक ट्रेन की चपेट में आ गया। इस हादसे में उसकी बाइक के परखच्चे उड़ गए। वही शिवा पटेल को गंभीर चोट आई है। घटना के बाद मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। घायल युवक को डायल 112 की मदद से इलाज के लिये जिला हास्पिटल सक्ती भेजा गया।

उफ ये गर्मी, बिजली कटौती से परेशानी

शिवरीनारायण। अघोषित बिजली कटौती से नगर के लोग इन दोनों खास से परेशान हैं। ऐसा कोई दिन नहीं बीत रहा जिस दिन बिजली बंद ना हो। बिजली बंद होने का कोई समय तय नहीं है। सुबह हो, दोपहर हो, शाम या रात हो किसी भी समय बिजली बंद कर दी जा रही है। इधर लोगों का उमस भरी गर्मी से बुरा हाल है। गर्मी में बिजली की आंख मिचौली से लोगों की परेशानी दोगुनी हो गई है। बार-बार बिजली कटौती से नागरिक अच्छे खासे परेशान हो गए हैं।

दिन में 10 से ज्यादा बार बिजली बंद होना नगर में आम बात हो गई है। बिना जानकारी के बिजली कटौती के कारण लोगों को पीने के पानी सहित अन्य जरूरतों के लिए पानी की समस्या भी हो रही है। इसके अलावा रात में यदि बिजली चली गई तो घंटो तक वापस नहीं आती। भीषण गर्मी में कूलर पंखे बंद होने से लोगों की बेचैनी बढ़ जाती है। बिजली कटौती के साथ ही लोगों को लो वोल्टेज की समस्या से भी जूझना पड़ रहा है।

रोजाना किसी न किसी वार्ड में लो वोल्टेज की परेशनी आ रही है। रात में लो वोल्टेज के कारण कूलर पंखें बंद हो जाने से लोगों की नींद हराम हो रही है। साथ हो लो वोल्टेज का असर इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर भी पड़ रहा है। दिन

में बिजली बंद होने से लोगों के व्यापार के कई काम प्रभावित हो रहे हैं। शाम के समय खासकर इन दोनों थोड़ा भी हवा तूफान या हल्की बारिश होने पर तुरंत बिजली बंद कर दी जाती है।

विभाग द्वारा बिना जानकारी दिए कभी भी मेंटेनेंस के नाम पर भी घंटों बिजली बंद कर दी जाती है। बिना जानकारी के बार बार बिजली बंद होने से लोगों को भारी परेशानी झेलनी पड़ रही है। बिजली विभाग के अधिकारी कर्मचारी लाख कोशिशों के बाद भी लोगों को बिजली की परेशानी से राहत नहीं दिला पा रहें हैं। बिजली कटौती से व्यापार भी हो रहा प्रभावित नगर में रोजाना दिन में कई बार बिजली जा रही है।

शिवरीनारायण नगर एक बड़ा व्यापारिक केंद्र है। आस पास के गांव के लोग बड़ी संख्या में रोजाना यहां सामान खरीदी व अन्य कामों से आते हैं। बार बार बिजली जाने के कारण व्यापार काफी प्रभावित हो रहा है। बिजली के भरोसे चलने वाले कामों में भारी दिक्कतें आ रही है। बिजली कटौती के कारण नगर के व्यापारी भी खासे परेशान हैं। वर्जन गर्मी में लोड बढ़ने के कारण परेशानी आ रही है। 33 केवी की सप्लाई बारगांव से आई है। मौसम खराब होने के कारण समस्या आ जाती है। जिसके चलते बिजली बंद हो जाती है। बीच-बीच में मेंटेनेंस का काम भी किया जा रहा है इसके लिए बिजली बंद की जाती है। प्रतीक भगत जेई, विद्युत विभाग शिवरीनारायण।

खनिज के अवैध उत्खनन, परिवहन पर की गई कार्यवाही

सक्ती। कलेक्टर के निर्देशन में तथा खनिज अधिकारी के मार्गदर्शन में खनिज विभाग उडनदस्ता के द्वारा खनिजों के अवैध उत्खनन, परिवहन पर कार्यवाही करते हुए 14 जून को ग्राम बरेकेल में 5 ट्रेक्टर तथा हसौद में 1 ट्रेक्टर इस प्रकार कुल 6 ट्रेक्टर में खनिज रेत के अवैध परिवहन करते हुये पाए जाने पर जब्त किया जाकर थाना हसौद की सुपुर्दगी में रखा गया। उक्त प्रकरणों के संबंध मे छत्तीसगढ़ गौण खनिज नियम 2015 के तहत् नियमानुसार कार्यवाही किया जावेगा। कलेक्टर श्री तोपनो के निर्देशानुसार खनिजों के अवैध उत्खनन, परिवहन एवं भण्डारण पर खनिज अमलो के द्वारा निरंतर अभियान चलाकर कार्यवाही किया जा रहा है।

किशोरी से दुष्कर्म करने वाला आरोपी पकड़ाया

जांजगीर - चांपा। नाबालिग बालिका से शादी का प्रलोभन देकर दुष्कर्म करने के मामले में फरार आरोपित युवक को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। मामला मुलमला थाना का है। पुलिस के अनुसार थाना क्षेत्र के एक व्यक्ति ने 23 नवंबर 2023 को अपने नाबालिग बेटी के लापता होने की रिपोर्ट थाने में दर्ज कराई थी। जिस पर पुलिस ने धारा 363 कायम कर विवेचना में लिया। विवेचना के दौरान बालिका को ग्राम पकरिया थाना मुलमुला निवासी धरमराज कश्यप 20 वर्ष पिता स्व. लखन कश्यप के कब्जे से ग्राम कुटीघाट मंदिर के पास से 13 जून 2024 को बरामद किया। आरोपित युवक धरमराज कश्यप को हिरासत में लेकर थाना लाया गया।

बालिका ने अपने बयान में बताया कि धरमराज कश्यप बहला फुसलाकर शादी करने का झांसा देकर भगाकर ले गया था और उसके साथ दुष्कर्म किया। प्रकरण में धारा 6.376,376 (2) (ढ) 4, 6 पाक्सो एक्ट जोड़ी गई। आरोपित युवक धरमराज कश्यप को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया जहां से उसे न्यायिक रिमांण्ड पर जेल भेजा गया है। इस कार्रवाई में थाना प्रभारी एसआई विनोद जाटवर, प्रधान आरक्षक राजमणी द्विवेदी, बलबीर सिंह, आरक्षक जयदीप भास्कर, यशवंत कश्यप , महिला आरक्षक मालती लहरे का सहयोग रहा।

परीक्षा देने के बाद भी बीएड छात्रों का रिजल्ट रोका

जांजगीर- चांपा। बीएड द्वितीय वर्ष की परीक्षा देने के बाद भी शहीद नंदकुमार पटेल विश्वविद्यालय द्वारा एक छात्र की अंकसूची में उसका नंबर नहीं दिया गया है और प्रावधिक अंकसूची में परीक्षा परिणाम रोका गया लिखा गया है जबकि परीक्षार्थी ने परीक्षा दी है। छात्र ने शीघ्र ही परीक्षा परिणाम को जारी करने की मांग की है।कुल सचिव शहीद नंदकुमार पटेल विश्वविद्यालय रायगढ़ को दिए पत्र में छात्र सूर्यकांता गुप्ता ने बताया है कि उसने शिक्षा सत्र वर्ष 2022-23 में बीएड द्वितीय वर्ष की पढ़ाई ज्ञानोदय कालेज आफ एजुकेशन जांजगीर से की है । अब परीक्षा टीसीएल कालेज से दी है मगर उसका एक विषय पेडागागी आफ लेंग्वेज साइंस का परीक्षा परिणाम रोका गया दिखा रहा है जबकि वह परीक्षा में शामिल हुआ था और उसे इस विषय में कोई नंबर नहीं दिया गया है।छात्र ने परीक्षा में शामिल होने का प्रमाण उपस्थिति पत्रक की सत्यापित प्रतिलिपि और प्रावधिक अंकसूची के साथ विश्वविद्यालय के कुल सचिव को आवेदन दिया है और रोके गए परिणाम को शीघ्र जारी करने की मांग की है। उन्होंने बताया कि वह कई बार अपने कालेज और विश्वविद्यालय का चक्कर काटकर थक चुके हैं मगर उनका परिणाम अब तक जारी नहीं हुआ है।

आने वाले दिनों में शिक्षक भर्ती के लिए वेकेंसी जारी होने वाली है। ऐसे में अगर उनका परीक्षा परिणाम जारी नहीं किया गया तो उनका भविष्य बर्बाद होगा। ज्ञात हो कि शहीद नंद कुमार पटेल विश्वविद्यालय में कई तरह की अनियमितता लगातार हो रही है। चाहे परीक्षा में फर्जीवाड़ा का मामला होया परीक्षा में शामिल छात्र का रिजल्ट रोके जाने का मामला होमगर विश्वविद्यालय के जिम्मेदारों को इससे कोई सरोकार नहीं है। इतने दिन बाद भी यहां पीएचडी केलिए परीक्षा नहीं हुई। न ही यहां एकेडमिक कैलेंडर का पालन होता। विश्वविद्यालय के कुल पति को भी इन समस्याओं से कोई सरोकार नहीं है।

पानी नहीं आया, पाईप लाईन के लिए उखाड़ी सड़क

गोधना। ग्राम कुरियारी के गुड़ीपारा एवं महावीर मोहल्ला के सड़क में जल जीवन मिशन योजना के तहत पाइप लाइन बिछाने के लिए सड़क उखाड़ दी गई है। गांव के वार्ड में पंचायत द्वारा बनाई गई सड़कें खराब हो रही और लोगों को आने-जाने में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

दरअसल गांव में जल जीवन मिशन योजन के तहत पाइप बिछाने व टंकी निर्माण किया गया है। निर्माण में लगे ठेकेदार द्वारा गांव की गलियों में पाइप लाइन डाले के लिए क्षतिग्रस्त कर दिया है। इससे गांव की आधे से अधिक कांक्रीट की सड़क खराब हो रही है। रोड में लगाई गई सीमेंट उखड़ चुकी हैं, वही रास्ता उबड़ खाबड़ हो गया है। इसके कारण वाहन चालकों को परेशानी हो रही है। रास्ते पर जल भराव भी हो रहा है। पाइपलाइन बिछाने के बाद सड़क पर मरम्मत कार्य करने ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

जल जीवन मिशन योजना के तहत

हो रहे विकास कार्य अभी पूरे नहीं हुए, इधर गांव की सड़कें पूरी तरह से बर्बाद कर दी गई है। ग्रामीणों ने बताया कि अभी बारिश का सीजन शुरू हुआ है कि उखड़े हुए रास्तों पर चलने हादसा होने का डर बना हुआ है।

तोड़ने के बाद ठेकदार ने नहीं बनाई नई सड़क कुरियारी सरपंच करूणा बाई कुर्मी ने बताया कि सरगांव में पाइप लाइन बिछाने के लिए ठेकेदार ने सड़कें खराब कर दी है। इससे परेशानी बनी हुई है। जल जीवन मिशन योजना के तहत काम करने वाले लोग काम भी बंद कर गांव से चले गए है। दोबारा मरम्मत करने ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

गर्मी में जलस्तर खिसका, पेयजल के लिए जनता हो रही परेशान

सक्ती। गर्मी में पानी के स्तर नीचे चले जाने से नगर के कई वार्डों में पानी की किल्लत हो रही है। कुछ पार्षद अपने वार्डों में किसी भी प्रकार मोहल्लेवासियों को पानी सप्लाई करने का प्रयास कर रहे हैं।

नगर पालिका में 1 से 18 वार्ड है, परंतु कुछ ही वार्ड के पार्षद अपने वार्ड की समस्याओं को लेकर गंभीर है। कुछ पार्षद तो चुनाव जीतने के बाद अपने वार्डों में कोई भी कार्य नहीं करा रहे है और देखने तक नहीं जाते की कोई समस्या है।

नगर पालिका अंतर्गत वार्ड क्रमांक 9 के पार्षद गजेन्द्र यादव पूरी गर्मी भर अपनी तरफ से मोहल्लेवासियों को टैंकर से पानी सप्लाई कर राहत पहुंचा रहे है। इसी प्रकार वार्ड क्रमांक 15 के रिक्की सेवक पार्षद स्वयं ट्रैक्टर के इंजन को चलाते हुए वार्ड में पानी की टैंकर लेकर मोहल्लेवासियों को पानी पहुंचाने के साथ अगर उस घर का कोई सदस्य नहीं रहता तो स्वयं टुल्लू पंप लगाकर

पानी उनके घरों तक पहुंचा रहे है। इसी प्रकार वार्ड क्रमांक 18 के पार्षद सरला निराला द्वारा अपने वार्ड की समस्याओं को हल करने के प्रयास में रहती है। वो वार्ड क्रमांक 18 में सप्लाई कर मोहल्लेवासियों को पानी की समस्या दूर करने का प्रयास कर रही है। वो नवापारा से पानी टैंकर भरकर इसलिए ला रही हैं, क्यों कि रेलवे फाटक होने के कारण वह अधिकांश समय बंद रहता है।

सरकारी योजना से दुकान बनाने पर किया खर्च पर आबंटन नहीं

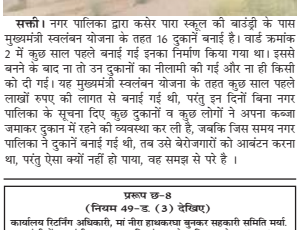

सक्ती। नगर पालिका द्वारा कसेर पारा स्कूल की बाउंड्री के पास मुख्यमंत्री स्वलंबन योजना के तहत 16 दुकानें बनाई है। वार्ड क्रमांक 2 में कुछ साल पहले बनाई गई इनका निर्माण किया गया था। इससे बनने के बाद ना तो उन दुकानों का नीलामी की गई और ना ही किसी को दी गई। यह मुख्यमंत्री स्वलंबन योजना के तहत कुछ साल पहले लाखों रुपए की लागत से बनाई गई थी, परंतु इन दिनों बिना नगर पालिका के सूचना दिए कुछ दुकानों व कुछ लोगों ने अपना कब्जा जमाकर दुकान में रहने की व्यवस्था कर ली है, जबकि जिस समय नगर पालिका ने दुकानें बनाई गई थी, तब उसे बेरोजगारों को आबंटन करना था, परंतु ऐसा क्यों नहीं हो पाया, वह समझ से परे है ।

प्रवेश उत्सव मनाने के लिए तैयारी, पूरा अमला जुटा

सक्ती। छत्तीसगढ़ शासन स्कूल शिक्षा विभाग के संयुक्त संचालक व सक्ती जिले के आईएएस कलेक्टर अमृत विकास टोपनो के दिशा निर्देशानुसार सक्ती जिले में आगामी 18 जून को शाला प्रवेश उत्सव कार्यक्रम को भव्य रूप से आयोजित करने तैयारियां शुरू हो गई हैं। इसी श्रृंखला में दो दिनों तक सक्ती जिले के सभी विकासखंडों में बैठक कर शाला प्रवेश उत्सव कार्यक्रम को लेकर कार्ययोजना तैयार की गई।

जिला शिक्षा अधिकारी एनके चंद्रा के दिशा निर्देशन व सहायक सांख्यिकी अधिकारी राकेश अग्रवाल सहित शिक्षा विभाग के सभी अधिकारी तैयारी में जुटे हुए हैं। 13 जून को जैजैपुर के सद्भावना भवन व डभरा के पीआरपी भवन में बैठक कराई गई, साथ ही 14 जून को सक्ती कलेक्टर सभा कक्ष व मालखरौदा के जनपद सभा कक्ष में उक्त बैठक होगी। इसमें पोर्टल में अधिकारी-कर्मचारियों और अवकाश प्रविष्टी की समीक्षा, विभिन्न प्रशिक्षणों में कर्मचारी चयन, स्थल चयन और प्रशिक्षण में कर्मचारियों की उपस्थिति पर चर्चा, वृक्षारोपण व अन्य बिन्दु पर चर्चा होगी। जिले के जिला शिक्षा अधिकारी ने सभी विकासखंड शिक्षा अधिकारियों को पूर्व में ही निर्देशित कर उपरोक्त समस्त जानकारी की सूचना देते हुए कहा था कि सभी विकासखंड शिक्षा अधिकारी अपने विकास खण्ड से संबंधित समस्त जानकारी का एजेंडेवार फोल्डर तैयार कर निर्धारित स्थान में उपस्थिति पंजी, बैठक व्यवस्था और आवश्यक व्यवस्था करें ।

इन बिंदुओं पर हो रही चर्चा 6 शाला प्रवेशोत्सव की आवश्यक तैयारियों की समीक्षा 6 शाला भवन परिसर की सफाई, रंग रोगन व मरम्मत। 6 नि:शुल्क पाठ्य पुस्तक, गणवेश वितरण व साइकिल वितरण की समीक्षा।

6 चल रहे निर्माण कार्यों की अपडेट स्थिति और पूर्णता पर चर्चा की जाएगी। 6 यू-डाईस डाटा का सत्यापन, एसएमसी-एसएमडीसी का गठन व बैठक आयोजन की समीक्षा। 6 मध्याह्न भोजन संचालन की तैयारी, न्योता भोजन आयोजन व पोषण वाटिका, पेयजल, शौचालय व विद्युत सुविधा की उपलब्धता की समीक्षा। 6 मरम्मत योग्य, बदहाल शाला भवन की जानकारी, शाला परिसर में स्थित ऐसे भवन जो डिस्मेंटलयोग्य है की सूची तैयार की जाएगी।

अन्न योजना की शुरूआत के बाद अब लाभार्थियों को धोनी पड़ी थाली

जांजगीर- चांपा। शहीद वीर नारायण सिंह श्रमिक अन्न् योजना के तहत श्रमिकों को 5 रूपए में भोजन देने की शुरूवात जिला मुख्यालय में केरा रोड बस स्टैंड के भवन में फरवरी महीने में किया गया था। यहां श्रमिक भी बड़ी संख्या में भोजन करने पहुंचते हैं मगर यहां उन्हें गुणवत्ता के अनुरूप भोजन नहीं मिलता। शुक्रवार को यहां खाने में कढ़ी और सोयाबिन की बढ़ी की सब्जी बनाई गई थी लेकिन कढ़ी में बेशन कम और हल्दी तथा पानी ज्यादा था दाल नहीं बनी थी। वहीं श्रमिकों को खाना खाने के बाद अपनी थाली खुद धोकर रखना पड़ता है। जो श्रमिकों के आत्म सम्मान के विरूद्ध है।

राज्य सरकार द्वारा फरवरी माह में जिला मुख्यालय में शहीद वीर नारायण सिंह श्रमिक अन्न् योजना की शुरूवात की गई। इस योजना के तहत श्रम विभाग में पंजीकृत श्रमिकों को 5 रूपए में भोजन दिया जाता है। भोजन में एक थाली में 4 सौ ग्राम चावल, 100 ग्राम दाल, 100 ग्राम सब्जी तथा 10 ग्राम अचार या चटनी और आरओ का पानी दिया जाना हैं। सप्ताह में श्रमिकों को 6 दिन भोजन उपलब्ध कराया जाना है। श्रम विभाग द्वारा एक थाली भोजन के लिए 52 रूपए 65 पैसा निर्धारित किया गया है। जिसमें मात्र 5 रूपए श्रमिक को देना है जबकि 47 रूपए 65 पैसा श्रम विभाग द्वारा दिया जाता है मगर भोजन की गुणवत्ता शर्तो के मुताबिक नहीं है। पतली कढ़ी और पापड़ का चौथाई हिस्से से भी छोटा टुकड़ा मजदूरों को परोसा गया था।

पहले दिन जब फरवरी माह में इस योजना की शुरूवात की गई तो श्रमिकों को दो सब्जी

और दाल चावल के साथ वित्त मंत्री ओपी चौधरी अन्य जनप्रतिनिधि और कलेक्टर के द्वारा परोसा गया था। श्रमिकों ने भी यहां भोजन कर यह महसूस किया कि उन्हें अब काम करने जाने के दौरान भोजन की चिंता नहीं होगी। वे यहां भोजन करने पहुंचते भी हैं मगर यहां भोजन में कभी दाल नहीं बनती भी है तो उसमें पानी ज्यादा और दाल कम होता है। इतना ही नहीं श्रमिकों को भोजन के बाद अपनी जूठी थाली खुद धोना पड़ता है। जिस थाली के लिए संबंधित व्यक्ति को 52 रूपए 65 पैसे भुगतान किया जाता है वह थाली अगर श्रमिकों को धोना पड़े तो यह उनके स्वाभिमान के खिलाफ है।

दाल भात केंद्र से भी दयनीय स्थिति

शहीद वीर नारायण सिंह श्रमिक अन्न् योजना से पहले भाजपा सरकार ने दाल भात केंद्र का संचालन होता था। इसमें 5 रूपए में किसी भी व्यक्ति को भोजन दिया जाता था। इसमें भी लोगों को चावल, दाल और सब्जी दी जाती थी। साथ में अचार भी मिलता था जबकि दाल भात केंद्र के संचालकों को शासन से अतिरिक्त राशि थाली के हिसाब से नहीं मिलती थी। चावल शासकीय उचित मूल्य की दुकान से कम कीमत में उपलब्ध कराई जाती थी इसके बाद भी वहां लोगों को अपनी थाली नहीं धोना पड़ता था। यहां एक थाली का 52 रूपए 65 पैसे मिलने के बाद भी योजना का संचालन करने वाली संस्था द्वारा जूठा धोने के लिए एक कर्मचारी का इंतजाम नहीं किया गया है।

अधिकारी अंजान

योजना को शुरू हुए चार माह से अधिक हो गए मगर श्रम विभाग के अधिकारी को यह जानकारी नहीं है कि शहीद वीर नारायण सिंह श्रमिक अन्न् योजना में भोजन करने वाले श्रमिकों की थाली कौन धोएगा इसकी जानकारी तक उन्हें नहीं है। अधिकारी रोज कार्यालय जाते समय यहीं से होकर जाते हैं मगर इसकी निरीक्षण भी नहीं किया जाता । श्रम विभाग का कार्यालय भी भोजन सेंटर से महज 300 मीटर की दूरी पर है इसके बाद भी यहां श्रमिकों को शासन द्वारा निर्धारित मापदंड के अनुसार भोजन नहीं मिल रहा है।

योजना के तहत श्रमिकों को थाली खुद धोना हैं या भोजन देने वाली संस्था द्वारा इसकी व्यवस्था की जाएगी इसकी जानकारी वे उच्च कार्यालय से लेंगे और अगर संस्था को इसकी व्यवस्था करनी है तो यह व्यवस्था कराई जाएगी।
समीर मिश्रा
श्रम पदाधिकारी जांजगीर

समक्ष-श्रीमान नोटरी पब्लिक कोरबा, तह. व जिला कोरबा (छग.)

शपथ पत्र

मैं, संतोषी रजक उम्र 45 वर्ष पति श्री विजय रजक, निवासी-रामसागर पारा, कोरबा, तहसील व जिला- कोरबा (छ.ग.) की होकर शपथपूर्वक निम्न कथन करती हूं:-

01. यह कि, मैं उक्त पते पर निवासरत हूं तथा मेरा आधार नंबर 526893588772 है।

02. यह कि मेरे पुत्र के नाम पर नगर पालिक निगम कोरबा द्वारा जन्म प्रमाण पत्र जारी किया गया है जिसका पंजीकरण संख्या 3676 दिनांक 03.06.2015 है जिसमें मेरे पुत्र का नाम कृष्णा बरेठ, माता का नाम संतोषी बरेठ एवं पिता का नाम विजय बरेठ दर्ज हो गया है। जबकि मेरे पुत्र का वास्तविक एवं सही नाम कृष्णा रजक, माता का नाम संतोषी रजक एवं पिता का नाम विजय रजक है।

03. यह कि, मैं अपने पुत्र के नाम जन्म प्रमाण पत्र में उसका वास्तविक एवं सही नाम वास्तविक एवं सही नाम कृष्णा रजक, माता का नाम संतोषी रजक एवं पिता का नाम विजय रजक दर्ज कराना चाहती हूं।

04. यह कि यह शपथ पत्र उक्ताशय के संबंध में निष्पादित किया गया है, जिसे संबंधित कार्यालय/विभाग में प्रस्तुत करना है।

सील

संतोषी
शपथकर्ता

समक्ष-श्रीमान नोटरी पब्लिक कोरबा, तह. व जिला कोरबा (छग.)

शपथ पत्र

मैं, संतोषी रजक उम्र 45 वर्ष पति श्री विजय रजक, निवासी-रामसागर पारा, कोरबा, तहसील व जिला- कोरबा (छ.ग.) की होकर शपथपूर्वक निम्न कथन करती हूं:-

01. यह कि, मैं उक्त पते पर निवासरत हूं तथा मेरा आधार नंबर 526893588772 है।

02. यह कि मेरी पुत्री के नाम पर नगर पालिक निगम कोरबा द्वारा जन्म प्रमाण पत्र जारी किया गया है जिसका पंजीकरण संख्या 3907 दिनांक 01.08.2012 है जिसमें मेरी पुत्री का नाम कु. संध्या बरेठ, माता का नाम संतोषी बरेठ एवं पिता का नाम विजय बरेठ दर्ज हो गया है। जबकि मेरी पुत्री का वास्तविक एवं सही नाम कु. संध्या रजक, माता का नाम संतोषी रजक एवं पिता का नाम विजय रजक है।

03. यह कि, मैं अपनी पुत्री के नाम के जन्म प्रमाण पत्र में उसका वास्तविक एवं सही नाम कु. संध्या रजक, माता का नाम संतोषी रजक एवं पिता का नाम विजय रजक दर्ज कराना चाहती हूं।

04. यह कि, यह शपथ पत्र उक्ताशय के संबंध में निष्पादित किया गया है, जिसे संबंधित कार्यालय/विभाग में प्रस्तुत करना है।

सील

संतोषी
शपथकर्ता

CHHATTISGARH STATE POWER GENERATION CO. LTD.
(A Govt. of Chhattisgarh Undertaking) CIN: U40108CT2003SGC015821

No.15-06/S&P/EE-II/W/T-121/24/1567 Marwa, dtd. 14.06.2024

NOTICE INVITING E-TENDER NO. TN-70/2024

Online bids are invited by the undersigned through CSPCL e-bidding system (SAP SRM) from experienced firms for work as mentioned below for ABVTPS, CSPGCL, Janjgir-Champa:-

S. No	Tender Specification No.	Rfx No. (E-Tender No.)	Particulars	Last Date Time of submission of bid.	Tender Fee (Rs.)	EMD (Rs.)
01.	15-06/ S&P/ EE-II/W/ T-121/24	[illegible]	Annual contract for Deployment of 5 Nos. Data Entry Operators for O/o Addl. CE(PM), O/o SE(CHP) and O/o SE (CTD), 2x500 MW, ABVTPS, CSPGCL, Janjgir-Champa.	08.07.2024 15:30 Hrs	Rs. 590/- (500 + GST @18%)	Rs. 7,350/-

The bidder shall deposit the requisite Tender Fee & EMD amount online through our e-bidding portal before due date and time. For other details, please visit our website www.cspc.co.in/CSPGCL/Ebidding/Ebidding web portal. Any Extension/ Corrigendum / amendments, if required, shall be displayed on above websites only.

SAVE ELECTRICITY FOR THE BENEFIT OF SELF & NATION

Superintending Engineer (Contract)
O/o The Addl. Chief Engineer (S&P)
ABVTPS, CSPGCL, Janjgir-Champa

G-40434/3

CHHATTISGARH STATE POWER GENERATION CO. LTD.
(A Govt. of Chhattisgarh Undertaking) CIN: U40108CT2003SGC015821

NO.021-10/PUBLICATION/2287 Korba West, dtd. 12.06.2024

e-Bidding TENDER NOTICE No. 1275/2024.

Online tenders are invited from Experienced & Prospective Firms for the following Work/Supply:

S. No	Rfx No.	Particulars	Cost of tender doc.	E.M.D. (Rs.)	Last date of submission & opening
1.	Rfx No. 8100037293	Deployment of ITI Operators at Workshop for WS&G Division of HTPS, Korba West.	590/-	9,410/-	03.07.2024
2.	Rfx No. 8100037289	Daily Brooming & Sweeping of various building at (i) CHP: INT, 4x210 MW (ii) WS&G of HTPS, Korba West.	590/-	7,580/-	03.07.2024
3.	Rfx No. 8100037083	Environment Monitoring Work at 4x210 + 1x500 MW, HTPS, Korba West.	590/-	12,840/-	03.07.2024

NOTE:-1.Payment of Tender cost & EMD shall be done online through e-bidding portal. The tender documents can be seen from our website www.cspc.co.in–e-Bidding. 2. Quantity as per tender schedule.

SUPERINTENDING ENGINEER (C-I)
O/o THE ADDL. CHIEF ENGINEER (S&P) HTPS, CSPGCL, KORBA WEST

SAVE ENERGY FOR THE BENEFIT OF SELF & NATION

G-40417/3

प्ररूप छ-8
(नियम 49-ड. (3) देखिए)

कार्यालय रिटर्निंग अधिकारी, मां नीरा हाथकरघा बुनकर सहकारी समिति मर्या. बांकीमोंगरा, पंजीयन क्र. 205 वि.खं. कटघोरा, जिला-कोरबा (छ.ग.)

क्र./निर्वाचन/2024/06 दिनांक : 10.06.2024

निर्वाचन कार्यक्रम

राज्य सहकारी निर्वाचन आयोग, छत्तीसढ़ द्वारा आदेश क्र./रा.स.नि.आ./निर्वाचन/KO-81/2024/818/रायपुर, दिनांक 28/05/2024 के द्वारा मुझे मां नीरा हाथकरघा बुनकर सहकारी समिति मर्या. बांकीमोंगरा प.क्र. 205 के निर्वाचन हेतु रिटर्निंग अधिकारी नियुक्त किया गया है। मण्डल के सदस्यों के निर्वाचन हेतु निम्नलिखित निर्वाचन कार्यक्रम निश्चित किया गया है, जिसे सोसाइटी के समस्त सदस्यों के सूचनार्थ एतद् द्वारा प्रकाशित किया जाता है-

01.	सोसाइटी की पंजीकृत उपविधि के अनुसार मण्डल के लिए निर्वाचित किये जाने वाले सदस्यों के कुल संख्या - 09	विवरण निम्नानुसार है-
	(अ) सामान्य वर्ग से (अनारक्षित) 05	(इसमें से महिला वर्ग हेतु आरक्षित) 01
	(ब) अनुसूचित जाति वर्ग से 02	(इसमें से महिला वर्ग हेतु आरक्षित) 01
	(स) अनुसूचित जनजाति वर्ग से 00	(इसमें से महिला वर्ग हेतु आरक्षित) 00
	(द) अन्य पिछड़ा वर्ग से 02	(इसमें से महिला वर्ग हेतु आरक्षित) 00
	योग -11	योग 02
02	नामांकन पत्र प्रस्तुत करने का दिनांक, स्थान समय	दिनांक 19/06/2024 समय-प्रातः 11.30 से दोपहर 3.30 बजे तक। स्थान- सोसाइटी कार्यालय बांकीमोंगरा
03	नामांकन पत्रों की संवीक्षा (जांच) एवं वैध नामांकन पत्रों की सूची का प्रकाशन	दिनांक 20/06/2024 समय-प्रातः 11.30 से दोपहर 3.30 बजे से संवीक्षा (जांच) पूर्ण होने तक। स्थान-सोसाइटी कार्यालय बांकीमोंगरा।
04	नामांकन पत्रों की वापसी का दिनांक तथा चुनाव लड़ने वाले अंतिम उम्मीदवारों की सूची का प्रकाशन एवं चिन्हों का आबंटन	दिनांक 21/06/2024 समय-प्रातः 11.30 से दोपहर 3.30 बजे तक। स्थान-सोसाइटी कार्यालय बांकीमोंगरा
05	विशेष साधारण सम्मिलन में चुनाव (मतदान) दिनांक व मतगणना	दिनांक 27/06/2024 समय-प्रातः 11.00 से दोपहर 3.30 बजे तक। स्थान-सोसाइटी कार्यालय बांकीमोंगरा। (चुनाव समाप्त होने के पश्चात एक घंटे बाद मतगणना प्रारंभ की जावेगी)।
06	सहयोजन यदि आवश्यक हो तो	दिनांक 28/06/2024 समय-प्रातः 11.00 से दोपहर 3.30 बजे तक। स्थान- सोसाइटी कार्यालय बांकीमोंगरा।
07	अध्यक्ष/उपाध्यक्ष एवं अन्य सोसाइटियों के प्रतिनिधियों तथा अन्य पदाधिकारियों के निर्वाचन की सूचना जारी करना	दिनांक 28/06/2024
08	अध्यक्ष/उपाध्यक्ष एवं अन्य सोसाइटियों के प्रतिनिधियों तथा अन्य पदाधिकारियों के निर्वाचन दिनांक, समय एवं स्थान	दिनांक 02/07/2024 समय-प्रातः 11.30 से दोपहर 3.30 बजे तक। स्थान-सोसाइटी कार्यालय बांकीमोंगरा।

(जी.डी.पाण्डेय)
रिटर्निंग अधिकारी
मां नीरा हाथकरघा बुनकर सहकारी समिति मर्या.
बांकीमोंगरा पं.क्र. 205

अनमोल वचन......

कल के लिए सबसे अच्छी तैयारी यही है,की आज अच्छा करो!

आशावाद भी गायब

जहां युवा बेरोजगारी असामान्य रूप से ऊंची हो और खाद्य मुद्रास्फीति लगातार आठ प्रतिशत से ऊपर हो, वहां कैसी जिंदगी की कल्पना की जा सकती है। अप्रैल के जारी ताजा आंकड़ों में भी खाद्य मुद्रास्फीति 8.7 प्रतिशत दर्ज हुई है। कुवैत में विदेशी मजदूरों के एक रहवास में हुए भयंकर अग्निकांड में मरे 49 लोगों में तकरीबन 40 भारतीय हैं। उधर रूस और यूक्रेन के बीच चल रहे युद्ध में भाड़े के सैनिक के तौर पर गए दो और भारतीयों की मौत हो गई है। ये भारतीय उन 30 लोगों से अलग हैं, जिनके परिजनों ने भारत सरकार से संपर्क किया था। मतलब यह कि रूस की तरफ से लड़ने के लिए जिन भारतीयों को बहला-फुसला कर ले जा गया गया, उनकी संख्या उससे कहीं अधिक है, जिसकी जानकारी भारत सरकार और भारत के आम लोगों को रही है। यह खबर तो पहले से बहुचर्चित है कि भारत सरकार ने खुद अपने प्रयास से सैकड़ों देशवासियों को युद्धग्रस्त इजराइल में मजदूरी करने के लिए भेजा। तो मन में पहली नजर में भाव यह उभरता है कि त्रासदी कहीं हो, उससे भारतीयों का कोई ना कोई संबंध निकल आता है। आखिर देश में अवसरों की इतनी कमी और उससे उत्पन्न निराशा इतनी व्यापक क्यों है कि देशवासी कहीं भी जाकर अपनी जान खतरे में डालने के लिए तैयार हो जाते हैं। हम कुछ आंकड़ों पर गौर करें, तो इस बारे में कुछ संकेत पा सकते हैं। मसलन, जहां युवा बेरोजगारी असामान्य रूप से ऊंची हो और खाद्य मुद्रास्फीति लगातार आठ प्रतिशत से ऊपर चल रही हो, वहां आम जन की कैसी जिंदगी की कल्पना की जा सकती है। अप्रैल के जारी ताजा आंकड़ों में भी खाद्य मुद्रास्फीति 8.7 प्रतिशत दर्ज हुई है। कुल आलाम यह है कि सर्वे एजेंसी गैलप के एक विश्वव्यापी आकलन में सामने आया कि भारत में सिर्फ 14 फीसदी कर्मचारियों ने अपनी स्थिति को खुशहाल श्रेणी में रखा। बाकी 86 प्रतिशत कर्मचारियों ने अपनी हालत को संघर्षरत या पीड़ादायक बताया। जबकि अपने को खुशहाल बताने वाले कर्मचारियों का वैश्विक औसत 34 प्रतिशत था। शासक तबकों और उनके संचार माध्यमों की तरफ से इस जमीनी सूरत पर परदा डालने के सुनियोजित अभियान लगातार चलाए जाते हैं। मगर उनसे संकट अब छिपाये नहीं छिप रहा है। अब हाल यह है कि अक्सर चुनावों के बाद दिखने वाला आशावाद भी इस बार गायब ही रहा है।

राशिफल

मेष राशि-आज आपका दिन आज ठीक-ठाक रहेगा। इस राशि की महिलाओं के लिए आज का दिन बहुत ही खास है। अपना समय शॉपिंग में बिता सकती हैं। नौकरी की तलाश कर रहे लोगों को आज किसी मल्टी नेशनल कम्पनी से जॉब के लिए कॉल आ सकता है।

वृष राशि-आज आपका दिन कॉन्फिडेंस से भरा रहेगा। किसी नए काम की शुरुआत करने पर मित्र और परिवार का साथ मिलेगा, जिससे आपका उत्साह बढ़ेगा। यात्रा से संबंधित बनाई गई योजना सफल होगी और आपको इस यात्रा के दौरान नए अनुभव मिलेंगे।

मिथुन राशि-आज आपका दिन खुशियों से भरा रहेगा। इस राशि की महिलाएं जो कोई बिजनेस करने की सोच रही है उनके लिए आज का दिन अच्छा है। आज ऑफिस में कुछ अधिक ही काम रहेगा। आज किसी भी काम को करने में जल्दबाजी न करें।

कर्क राशि-आज के दिन भाग्य आपका साथ देगा। अगर आप नयी जमीन लेने का प्लान बना रहे हैं तो घर के बड़ों की राय जरूर लें। आज लोगों से मिल रहे साथ का सही उपयोग करेंगे। आवेश में आकर कोई भी निर्णय लेने से आज आपको बचना चाहिए।

सिंह राशि-आज आपका दिन खुशनुमा पल लेकर आया है। आज कोई बुजुर्ग या वरिष्ठ व्यक्ति आपको सही सलाह दे सकता है। अगर आज किसी नये काम की शुरुआत करना चाहते हैं, तो आज का दिन आपके लिए अच्छा रहेगा।

कन्या राशि-आज आपका दिन आपके लिए नई खुशियां लाया है। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए दिन अच्छा है समाज हित में किये गये कामों की तारीफ हो सकती है। आज प्रयत्न करने से आपके रुके हुए कार्य भी समय पर पूरा हो जायेगा।

तुला राशि-आज आपका दिन आपके अनुकूल रहने वाला है। आज आप अपने काम से जुड़ी पूरी जानकारी प्राप्त करने की कोशिश करेंगे। आज कोई भी पारिवारिक निर्णय लेते समय जल्दबाजी न करें, परिवार की राय भी ले लें। आज आपकी कड़ी मेहनत से लोग प्रभावित होंगे और आपका अनुसरण करेंगे। आज आप ऑफिस के किसी काम में उलझे रहेंगे।

वृश्चिक राशि-आज का दिन आपके लिए महत्वपूर्ण रहेगा। किसी बुजुर्ग महिला की सेवा का अवसर मिलेगा। आज आप हर तरह के काम निपटाने के लिए तैयार रहें। आपको सोचे हुए कामों से फायदा हो सकता है।

धनु राशि-आज आपका दिन लाभदायक रहेगा। आज आपको पहले किए हुए मेहनत का फल जरूर मिलेगा। आज आपके जीवन में सकारात्मक बदलाव आयेगा। फिल्म जगत से जुड़े लोगों के लिए आज का दिन सफलता दिलाने वाला साबित होगा।

मकर राशि-आज आपका दिन अच्छा रहेगा। आज आपको आय के कई मौके मिलेंगे, किसी भी मौके को हाथ न जाने दें। आज आपको किसी से उपहार मिल सकता है, जिससे पूरे दिन आपका मन प्रसन्न रहेगा। इस राशि के छात्रों को करियर में आगे बढ़ने का मौका मिलेगा।

कुंभ राशि-आज का दिन शानदार रहने वाला है। इस राशि के इंजीनियर्स के लिए आज का दिन फायदा देने वाला है। आज कोई भी कार्य करते समय आपको धैर्य रखना होगा। आज परिवार से जुड़ी किसी समस्या का समाधान मिलने से आपको राहत मिलेगी । व्यापार को आगे बढाने में पिता का सहयोग मिलेगा।

मीन राशि-आज आपका दिन फेवरेबल रहेगा। नौकरी कर रहे लोगों को पदोन्नती के अवसर मिलेंगे। आज ऑफिस में आपको सम्मनित किया जाएगा। काम की गति तेज करने का कोई नया प्लान बनायेंगे। आज परिवार वालों के साथ घर पर स्वादिष्ट डिनर का आनंद उठाएंगे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मोदी से बेहद खफा

//अजय सेतिया//

जिस बात का खंडन किया जा रहा था, या जिस पर बोलने से इंकार किया जा रहा था, वह बात अब खुल कर सामने आ गई है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भाजपा, भाजपा सरकार और खासकर नरेंद्र मोदी से बेहद खफा है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत या कोई बड़ा पदाधिकारी मोदी के शपथ ग्रहण में शामिल नहीं हुआ था। अब सरसंघचालक मोहन भागवत का बयान सामने आ गया है, जिसमें उन्होंने नरेंद्र मोदी का नाम लिए बिना कहा - सच्चे सेवक में अहंकार नहीं होता और वह दूसरों को कोई चोट पहुंचाए बिना काम करता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ही थे जिन्होंने कहा था कि वह प्रधानमंत्री नहीं प्रधान सेवक हैं।

मोहन भागवत के शब्दों को देखिए - एक सच्चा सेवक काम करते समय मर्यादा बनाए रखता है... जो मर्यादा बनाए रखता है, वह अपना काम करता है, लेकिन अनासक्त रहता है। इसमें कोई अहंकार नहीं है कि मैंने यह किया है। केवल ऐसे व्यक्ति को ही सेवक कहलाने का अधिकार है। मोहन भागवत ने संभवत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तरफ ही इशारा करके कहा है कि चुनाव में शिष्टाचार का ध्यान नहीं रखा गया। रविवार को शपथ ग्रहण के बाद अगले दिन जिस समय नई गठबंधन सरकार की पहली कैबिनेट बैठक हो रही थी, ठीक उसी समय मोहन भागवत नागपुर में स्वयंसेवकों के विकास वर्ग के समापन कार्यक्रम में आरएसएस पदाधिकारियों और स्वयंसेवकों को संबोधित कर रहे थे।

चुनावों के दौरान ऐसी कई खबरें आई थीं कि संघ के स्वयंसेवक इस बार भाजपा उम्मीदवारों के लिए पहले जैसी ऊर्जा से काम नहीं कर रहे। ये खबरें कितनी सही थी, कितनी गलत, यह नहीं कहा जा सकता, लेकिन चुनाव नतीजों के बाद इन खबरों को ज्यादा हवा मिली कि यह संघ की नाराजगी का प्रतिफल है कि भाजपा को महाराष्ट्र, कर्नाटक, बंगाल, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, राजस्थान और हरियाणा में काफी सीटों का नुकसान झेलना पड़ा। सरसंघचालक मोहन भागवत के इन दो वाक्यों ने इसकी पुष्टि ही की है कि संघ कुछ कारणों से भाजपा से नाराज है। चुनावों के दौरान ऐसी दो बातें हुई थीं, जिनसे संघ की तथाकथित नाराजगी की खबरें बनी थी। एक तो भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा का वह बयान था, जिसे मीडिया ने तोड़ मरोड़ कर पेश किया था कि भाजपा संघ पर निर्भर नहीं है, वह सक्षम है, और उसे संघ की जरूरत नहीं है। हालांकि जेपी नड्डा ने एक इंटरव्यू में ऐसी भाषा का इस्तेमाल नहीं किया था।

जेपी नड्डा ने कहा था कि - हर किसी का अपना काम है, आरएसएस एक सांस्कृतिक संगठन है और भाजपा राजनीतिक संगठन है। शुरुआत में हम कम सक्षम थे और हमें आरएसएस की जरूरत थी। आज हम बड़े हो गए हैं और हम सक्षम हैं, भाजपा खुद को चलाती है, यही अंतर है। दोनों संगठनों में एक दूसरे का बहुत सम्मान है। मीडिया में कुछ लोग आरएसएस और भाजपा संबंधों पर अटकलें लगाना पसंद करते हैं। वे षड्यंत्र के सिद्धांत और मिथक फैलाते हैं। लेकिन उनके इस कथन को अन्य मीडिया ने उसी तरह तोड़मरोड़ कर पेश किया जैसी नड्डा ने आशंका व्यक्त की थी। नड्डा ने यह कभी नहीं कहा था कि भाजपा को संघ की जरूरत नहीं है। यह बिलकुल वैसा ही हो गया, जैसे करीब 30 साल पहले दिल्ली के एक हिन्दी दैनिक में छपे एक लेख ने गोविन्दाचार्य की ओर से अंग्रेजी में कहे गए एक शब्द का हिन्दी रूपान्तर ऐसा कर दिया था कि अटल बिहारी वाजपेयी बुरा मान गए थे। एक विदेशी प्रतिनिधिमंडल भाजपा मुख्यालय में पार्टी महासचिव गोविन्दाचार्य से मिलने आया था। बातचीत में प्रतिनिधिमंडल के सदस्य ने पूछा कि आप कांग्रेस का विकल्प कैसे बन सकते हैं, जबकि आपके नेता लालकृष्ण आडवानी कट्टर हिंदूवादी नेता के तौर पर माने जाते हैं। तो गोविंदाचार्य ने कहा था कि अवर फेस इज ए वेरी लिबरल अटल बिहारी वाजपेयी। यानी पार्टी का चेहरा बहुत ही उदारवादी अटल बिहारी वाजपेयी हैं, लेकिन लेख में चेहरे की जगह अटल बिहारी वाजपेयी को मुखौटा लिखा गया था। लेकिन मीडिया की ओर से फैलाई गई झूठी खबर का संघ स्वयंसेवकों पर असर नहीं पड़ा होगा, ऐसा नहीं कहा जा सकता। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मणिपुर नहीं गए थे। संघ प्रमुख मोहन भागवत ने मणिपुर में दो समुदायों के बीच हुई हिंसा पर भी बोला। विपक्ष ने चुनावों में आरोप लगाया था कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जानबूझ कर मणिपुर की अनदेखी की। मणिपुर का जिक्र करते हुए मोहन भागवत ने कहा, हर जगह सामाजिक वैमनस्य है, यह अच्छा नहीं है। पिछले एक साल से मणिपुर शांति का इंतजार कर रहा है। पिछले एक दशक से यह शांतिपूर्ण था। ऐसा प्रतीत होता था कि पुराने समय की बंदूक संस्कृति ख़त्म हो गई थी, लेकिन बंदूक संस्कृति अचानक फिर उभर आई, या उभारी गई। भागवत ने एक तरह से सरकार पर प्रश्न चिन्ह लगाते हुए कहा कि मणिपुर आज भी जल रहा है, इस पर कौन ध्यान देगा। इससे प्राथमिकता से निपटना सरकार का कर्तव्य है। तो एक तरह से उन्होंने कहा कि पिछले सात आठ महीनों से सरकार अपने कर्तव्य का निर्वहन नहीं कर रही है। एक और घटना थी, जिस कारण संघ की नाराजगी की अवधारणा को बल मिला। वह घटना यह थी कि भाजपा ने उस कृपाशंकर सिंह को भाजपा में प्रवेश और उत्तर प्रदेश की जौनपुर सीट से लोकसभा का टिकट दे दिया था, जिसने मुम्बई में हुए 26/11 के आतंकी हमले को आरएसएस की साजिश बताया था। कांग्रेस के कई नेताओं, वामपंथी बुद्धिजीवियों और मुस्लिम कट्टरपंथियों ने यह नेरेटिव बनाने की कोशिश की थी कि मुम्बई के हमले में पाकिस्तान का हाथ नहीं है। राष्ट्रीय सहारा के उर्दू अखबार रोजनामा राष्ट्रीय सहारा के संपादक अज़ीज़ बर्नी ने इस पर किताब लिख दी थी, जिसका शीर्षक था- आरएसएस की साजिश 26/11। मुम्बई में इस किताब का विमोचन कांग्रेस के महासचिव दिग्विजय सिंह, उस समय मुम्बई कांग्रेस के अध्यक्ष कृपाशंकर सिंह, महेश भट्ट और जमियत उलेमा ए हिन्द के अध्यक्ष महमूद मदनी ने मिल कर किया था। जनवरी 2011 में अज़ीज़ ने अपनी मनगढ़ंत किताब के लिए आरएसएस से माफी मांग ली थी। लेकिन भाजपा ने उसी कृपा शंकर सिंह को भाजपा में प्रवेश दे दिया, जिसने आरएसएस के खिलाफ झूठा नेरेटिव गढने वाली किताब का विमोचन किया था। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत चुनावों में इस्तेमाल की गई भाषा और विपक्ष की ओर से बिना वजह आरएसएस को घसीटे जाने से भी क्षुब्ध दिखाई दिए, जब उन्होंने कहा कि चुनावों को एक प्रतियोगिता के रूप में देखा जाना चाहिए, न कि युद्ध के रूप में। जिस तरह की बातें कही गईं, जिस तरह से दोनों पक्षों ने एक-दूसरे को आड़े हाथों लिया... जिस तरह से किसी ने भी इस बात की परवाह नहीं की कि किस वजह से सामाजिक विभाजन पैदा हो रहा है।...और बिना किसी कारण संघ को इसमें घसीटा गया...तकनीक का इस्तेमाल कर झूठ फैलाया गया। क्या ज्ञान का उपयोग इसी तरह किया जाना चाहिए। ऐसे कैसे चलेगा देश।

फिर बिना नरेंद्र मोदी या भाजपा के अन्य नेताओं का नाम लिए मोहन भागवत ने कहा कि वह विपक्ष को विरोध पक्ष नहीं कहते, वह इसे प्रतिपक्ष कहते हैं और प्रतिपक्ष विरोधी नहीं होता, प्रतिपक्ष भी एक पक्ष को उजागर कर रहा है और इस पर विचार-विमर्श किया जाना चाहिए। भागवत ने कहा कि हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। दोनों पहलुओं की जानकारी लेकर ही निर्णय लेने की हमारी परम्परा रही है।

तीसरे कार्यकाल में शासन की निरंतरता बनी रहे

//अजीत द्विवेदी//

नरेंद्र मोदी ने बतौर प्रधानमंत्री अपने तीसरे कार्यकाल में शासन की निरंतरता जारी रखी है। केंद्र सरकार के सभी अहम मंत्रालयों में पुराने मंत्रियों की वापसी हुई है। राजनाथ सिंह प्रतिरक्षा संभालते रहेंगे तो देश की आंतरिक सुरक्षा का जिम्मा अमित शाह के पास ही रहेगा। अगर वे अपना दूसरा कार्यकाल पूरा करते हैं तो यह एक रिकॉर्ड होगा क्योंकि देश में आज तक कोई भी नेता 10 साल तक गृह मंत्री नहीं रहा है। अर्थ नीति और विदेश नीति का जिम्मा क्रमशः निर्मला सीतारमण और एस जयशंकर के पास ही है और सड़क परिवहन व राजमार्ग का जिम्मा नितिन गडकरी के पास है। शिक्षा के क्षेत्र में जो कुछ हो रहा है उसे चलाए रखने की जिम्मेदारी फिर से धर्मेंद्र प्रधान के ऊपर डाली गई है। कुल मिला कर देश की आर्थिक, सामरिक, सामाजिक नीतियों में कम से कम मंत्रियों के जरिए निरंतरता का संदेश दिया गया है।

पहले ऐसा लग रहा था कि लोकसभा के आंकड़े बदलने और नई राजनीतिक स्थितियां पैदा होने से सरकारी की संरचना में बदलाव आएगा। प्रधानमंत्री मोदी के लिए निरंतरता बनाए रखने में मुश्किल होगी। लेकिन उन्होंने नई स्थितियों में भी शासन का पुराना ढांचा बनाए रखा है। अपने अपने विभागों में पुराने मंत्रियों की वापसी से यह संदेश गया है कि भाजपा ने अपने चुनाव घोषणापत्र में नीतियों की जिस निरंतरता का वादा किया था उसमें कोई बदलाव नहीं आने वाला है। ध्यान रहे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लगातार कहते रहे हैं कि उन्होंने अपने कार्यकाल के पहले 10 साल में जो काम किया है वह 'ट्रेलर' है पूरी फिल्म बाकी है। चुनाव प्रचार में उन्होंने एक रूपक का इस्तेमाल किया और कहा कि उनका अब तक का कामकाज 'स्टार्टर है, मेनकोर्स अभी बाकी है'। अगर त्रिशंकु लोकसभा की वजह से सरकार की संरचना में बदलाव होता तो निश्चित रूप से उसका असर सरकार के कामकाज पर होता। उसकी नीतिगत और प्रशासनिक निरंतरता प्रभावित होती। कह सकते हैं कि नई राजनीतिक स्थितियां उभरने के बाद भी प्रधानमंत्री मोदी ने पहली बाधा पार कर ली है।

परंतु सवाल है कि क्या यह स्थिति स्थायी रहने वाली है या गठबंधन की मजबूरियां सरकार के कामकाज पर असर डालेंगी। यह सवाल इसलिए है क्योंकि सहयोगी पार्टियों को उनकी संसदीय ताकत के हिसाब से कम मंत्री पद देने और अपेक्षाकृत कम महत्व के मंत्रालय देने का विरोध हुआ है। यह विरोध बहुत उग्र नहीं है फिर भी कई पार्टियों ने आपत्ति की है और दबी जुबान में ही सही विरोध प्रकट किया है। तभी उनके समर्थन और उनकी चुप्पी को सरकार फॉर गारंटेड नहीं ले सकती है। भले वे सरकार की स्थिरता के लिए खतरा पैदा नहीं करें लेकिन नीतिगत मसले पर सरकार को कठघरे में खड़ा कर सकते हैं और अगर विपक्षी पार्टियां किसी मसले पर मजबूत विरोध दर्ज कराती हैं तो सहयोगी भी इस मौके का इस्तेमाल सरकार पर दबाव बनाने के लिए कर सकते हैं। यह स्थिति स्थायी रहने वाली है। विपक्षी पार्टियां भी सत्तारूढ़ गठबंधन की इस फॉल्टलाइन का इस्तेमाल करने का प्रयास करेंगी।

यह सही है कि सरकार को संख्या के लिहाज से खतरा नहीं है लेकिन वह सहयोगी पार्टियों को एक सीमा से ज्यादा पीछे धकेलने की जोखिम नहीं ले सकती है। अगर सहयोगी पार्टियां जोर देकर कोई बात कहती हैं तो प्रधानमंत्री को उस पर ध्यान देना होगा। जैसे कानून मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने अपने मंत्रालय का कामकाज संभालते हुए कहा कि समान नागरिक संहिता का कानून सरकार के एजेंडे का हिस्सा है वैसे ही जनता दल यू के महासचिव केसी त्यागी ने कहा कि एजेंडा है लेकिन इस पर सबकी सहमति से ही आगे बढ़ना है। सो, इस तरह के नीतिगत मसलों पर भाजपा की सहयोगी पार्टियों की बारीक नजर रहेगी।

वैसे भारत की राजनीति में यह कोई नई बात नहीं है। 1989 से लेकर 2014 तक यानी ढाई दशक देश में गठबंधन की सरकार चली और उन सरकारों में जो भी प्रधानमंत्री बना उसने अपने कामकाज की शैली राजनीतिक स्थितियों के अनुरूप ही रखी। प्रधानमंत्री देश हित, क्षेत्रीय आकांक्षा और राजनीतिक मजबूरियों के बीच बारीक संतुलन साध कर चलते रहे। यह अलग बात है कि महज 145 सांसद होने के बावजूद तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने जुलाई 2008 में अमेरिका के साथ परमाणु संधि जैसे विवादित नीतिगत मसले को मंजूरी दिलाई।

लेकिन उस दौर के प्रधानमंत्रियों और नरेंद्र मोदी में एक फर्क यह है कि मोदी ने कभी गठबंधन की सरकार नहीं चलाई है, जबकि वीपी सिंह से लेकर चंद्रशेखर, पीवी नरसिंह राव, एचडी देवगौड़ा, आईके गुजराल, अटल बिहारी वाजपेयी और मनमोहन सिंह गठबंधन से ही प्रधानमंत्री बने थे। उन्होंने अपनी पार्टियों का पूर्ण बहुमत नहीं देखा। सो, वे पहले दिन से गठबंधन की मजबूरियों के साथ चले, जबकि मोदी को पहली बार गठबंधन की मजबूरियों का सामना करना पड़ रहा है। सो, वे किस तरह से परिस्थितियों के साथ सामंजस्य बैठाते हैं यह देखने वाली बात होगी। यह सही है कि पहले की गठबंधन सरकारों के मुकाबले उनकी सरकार में गठबंधन का नेतृत्व कर ही उनकी पार्टी के पास कुल 82 फीसदी सीटें हैं। इस लिहाज से वे पहले गठबंधन में बने प्रधानमंत्रियों के मुकाबले बेहतर स्थिति में हैं फिर भी दबाव तो उन पर भी आएंगे और मजबूरियां उनके सामने भी आएंगी।

अभी यह पता नहीं है कि कम मंत्री पद देने और कम महत्व के मंत्रालय देने के बावजूद उन्होंने सहयोगी पार्टियों को कैसे समझाया कि वे सरकार का हिस्सा बनें। आने वाले दिनों में इसकी परतें खुलेंगी। सरकार के दोनों बड़े सहयोगी यानी नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू केंद्र में अपने सांसदों को मंत्री बनवाने या उन्हें बड़ा मंत्रालय दिलाने से ज्यादा राज्य में अपनी सरकार की स्थिरता और कामकाज से मैसेज देने की कोशिश करने वाले हैं। इसलिए दोनों की प्राथमिकता राज्य की राजनीति है। दोनों विशेष राज्य के दर्जे की मांग कर रहे हैं और अगर विशेष राज्य का दर्जा नहीं मिलता है तो विशेष आर्थिक पैकेज पर उनका फोकस रहेगा।

क्या प्रधानमंत्री मोदी ने इसका कोई वादा दोनों मुख्यमंत्रियों से किया है। बिहार में अगले साल विधानसभा के चुनाव होने वाले हैं लेकिन जनता दल यू के नेता समय से पहले चुनाव चाहते हैं। वे बिहार विधानसभा में बड़ी पार्टी बनने की इच्छा रखते हैं। तो क्या केंद्र में कम मंत्री पद देने की भरपाई विधानसभा चुनाव में सीटों की साझेदारी में की जाएगी। क्या भाजपा नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री पद पर बनाए रखते हुए उन्हें ज्यादा सीटें देकर चुनाव में जाएगी। इसी तरह एक समझौता राज्यसभा की सीटों पर भी होता है। अभी 10 राज्यसभा सांसदों के लोकसभा चुनाव जीत जाने से 10 सीटें खाली हो रही हैं। क्या उसमें सहयोगी पार्टियों को हिस्सेदारी मिलेगी। इसके अलावा राज्यपाल, बोर्ड और निगम, संसदीय नियुक्तियों आदि में भी सहयोगी पार्टियों को ज्यादा हिस्सेदारी मिल सकती है। सरकार वहां सौदेबाजी कर सकती है ताकि प्रधानमंत्री मोदी के तीसरे कार्यकाल में शासन की निरंतरता बनी रहे और अपने घोषित एजेंडे से ज्यादा समझौता नहीं करना पड़े।

तस्वीरों की दुनिया

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने नई दिल्ली में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत आयोजित बैठक में आगामी खरीफ सीजन की तैयारियों की समीक्षा की।

जनता दल और भाजपा के कार्यकर्ता और नेता केंद्रीय भारी उद्योग और इस्पात मंत्री एचडी कुमारस्वामी के बेंगलुरु हवाई अड्डे पर पहुंचने पर उनका स्वागत करने के लिए बड़ी संख्या में एकत्र हुए।

केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने कोच्चि के कोचीन अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर कुवैत अग्नि त्रासदी के पीड़ितों के पार्थिव शरीर को श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इटली के अपुलिया में 50वें जी-7 शिखर सम्मेलन के दौरान द्विपक्षीय बैठक के दौरान यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोडिमिर ज़ेलेंस्की के साथ।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और यूनाइटेड किंगडम के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक इटली के अपुलिया में 50वें जी7 शिखर सम्मेलन के दौरान द्विपक्षीय बैठक के दौरान।

अहमदाबाद के दानिलिमडा में एक गोदाम में लगी आग को बुझाने की कोशिश करते अग्निशमन कर्मी।

नई दिल्ली में नीट परीक्षा परिणामों में कथित अनियमितताओं के खिलाफ छात्रों ने किया विरोध प्रदर्शन।

रांची-सासाराम इंटरसिटी में आग की अफवाह, ट्रेन से नीचे कूदे लोग, चार की मौत और कई घायल

लातेहार, 15 जून [एजेंसी]।

झारखंड में रांची-सासाराम इंटरसिटी एक्सप्रेस से शुक्रवार रात यात्रा कर रहे चार यात्रियों की लातेहार के कुमंडीह स्टेशन के पास दूसरी पटरी पर सामने से आ रही मालगाड़ी से कटकर मौत हो गई। इनमें दो महिला व दो पुरुष शामिल हैं। ये सभी यात्री ट्रेन में आग लगने की अफवाह फैलने के बाद मची अफरातफरी के बीच जान बचाने के लिए अगल-बगल कूद रहे थे। इसी क्रम में वह दूसरी पटरी पर सामने से आ रही मालगाड़ी की चपेट में आ गए। हादसे में आधा दर्जन से अधिक यात्री घायल हुए हैं, जिनका लातेहार में इलाज चल रहा है।जान गंवाने वालों में शामिल एक महिला की पहचान बिहार निवासी 40 वर्षीय मंजू देवी तथा एक बुजुर्ग की पहचान पलामू निवासी 72 वर्षीय नंदलाल शुक्ला के रूप में हुई है। एक महिला समेत दो अन्य मृतकों की पहचान नहीं हो सकी है।हादसे के बाद बरकाकाना-बरवाडीह रेलखंड पर लगभग दो घंटे तक रेल यातायात प्रभावित रहा। रात लगभग 10 बजे उक्त रूट पर रेल परिचालन सामान्य हुआ।लातेहार के एसपी अंजनी अंजन ने बताया कि आसपास के इलाकों में पुलिस छानबीन कर रही है। देर रात तक चार मृतकों के शव बरामद हुए हैं। इस दुर्घटना में कुछ अन्य लोगों की मौत की आशंका से इन्कार नहीं किया जा सकता है। पुलिस और रेलवे के अधिकारी राहत कार्य में जुटे रहे। मृतक नंदलाल शुक्ला के भाई दीनानाथ शुक्ला ने बताया कि कुमांडीह में ट्रेन की रफ्तार धीमी हुई। इसके साथ ही इंजन में आग लगने की अफवाह उड़ी, तो चलती ट्रेन से उतरने का प्रयास करने लगे।जब तक वह समझ पाते उनका भाई भी उतर गए और दूसरी तरफ से आ रही मालगाड़ी के शिकार हो गए। उसके बाद ट्रेन स्टेशन पर रुकी।मृतका मंजू देवी, पत्नी दीपक प्रसाद के देवर जयप्रकाश गुप्ता ने बताया कि वे लोग आठ तारीख की रात में पुरी दर्शन के लिए घर से निकले थे।11 तारीख को पुरी में दर्शन किए। 13 की रात में तपस्विनी एक्सप्रेस से पुरी से निकले थे। 14 को दिन में रांची में रुके और शाम को इंटरसिटी एक्सप्रेस से गांव के लिए निकले।

इस दौरान यह हादसा हो गया।कुमंडीह में हुए रेल हादसे में कई यात्रियों की मृत्यु हो जाना अत्यंत पीड़ादायक घटना है। भगवान से प्रार्थना है कि सभी दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान प्रदान करें और उनके शोक संतप्त स्वजनों को इस दुखद आघात को सहने की शक्ति दें। इसके साथ ही जो घायल हुए हैं, ईश्वर से उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना करता हूं।-कालीचरण सिंह, सांसद चतरा।मामले की सूचना के बाद लातेहार रेलवे स्टेशन पर बड़ी संख्या में लोगों की भीड़ उमड़ी स्टेशन कार्यालय से लोग ताजा जानकारी लेते रहे वहीं रेलवे स्टेशन पर एंबुलेंस भी आपात स्थिति के लिए तैनात कर दी गई है। इधर मामले की सूचना के बाद बरवाडीह रेलवे स्टेशन से पदाधिकारियों की टीम घटनास्थल के लिए रवाना हो चुकी है।रेल हादसे की सूचना के बाद घटनास्थल के समीप आसपास के ग्रामीण बड़ी संख्या में लोगों की मदद के लिए जुट गए हैं। स्थानीय स्तर पर भी कुछ लोगों के द्वारा घायलों का इलाज किया जा रहा है। गंभीर रूप से कुछ घायलों को इलाज के लिए बरवाडीह ले जाने की भी व्यवस्था मौके पर बनाई जा रही है।घटनास्थल घोर नक्सल प्रभावित इलाके में होने की वजह से प्रशासनिक टीम को पूरी सतर्कता बरतनी पड़ रही है। रात के अंधेरे में रेस्क्यू ऑपरेशन में भी रेलवे टीम को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

घटना के बाद से बरकाकाना बरवाडीह रेलखंड पर यात्री ट्रेनों का परिचालन बाधित है।घटना के बाद लातेहार से गरीब रथ एक्सप्रेस दिल्ली के लिए रवाना हुई लेकिन थोड़ी दूर चलने के बाद गरीब रथ रुक गई। गरीब रथ में अपने स्वजनों को बैठने के लिए आए लोगों को मामले की जानकारी हुई तो परेशान हो गए और हर थोड़ी देर में अपने स्वजनों से बात कर जानकारी लेते रहे।घटना के बाद से आप लाइन पर ट्रेनों का परिचालन पूरी तरह से बाधित हो गया है। अप लाइन से गुजरने वाली कई यात्री ट्रेनों को विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर खड़ा करके रखा गया है। लातेहार रेलवे स्टेशन पर मौजूद लोगों ने जैसे ही डाउनलाइन पर हॉर्न बजाती मालगाड़ी को आते हुए देखा तो सारे लोग अचंभित हो गए।सबके बीच में बस एक ही बात की चर्चा की इसी मालगाड़ी की जद में आने से कई लोगों की जान गई है और कई लोग घायल हुए हैं। डाउन लाइन पर आई यह मालगाड़ी दो मिनट के लिए लातेहार रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर एक पर रुकी चालक ने स्थानीय गर्मी से थोड़ी देर मंत्रणा की उसके बाद मालगाड़ी ने तेज रफ्तार पकड़ ली।

300 महिला विज्ञानिकों को शोध के लिए मिलेगा अनुदान, जितेंद्र सिंह ने की DSIR की समीक्षा बैठक

नईदिल्ली, 15 जून [एजेंसी]।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री जितेंद्र सिंह ने शुक्रवार को कहा कि सीएसआईआर-एएसपीआईआरई योजना के तहत 300 महिला वैज्ञानिकों को तीन वर्ष शोध करने के लिए अनुदान दिया जाएगा।वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए केंद्रीय मंत्री ने कहा कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में इनोवेशन का उद्देश्य नागरिकों को सशक्त बनाना है।केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सीएसआईआर-एएसपीआईआरई योजना के तहत लगभग 3000 प्रस्ताव मिले हैं। यह महिला वैज्ञानिकों को समर्थन देने के सरकार के प्रयासों का प्रमाण है। स्क्रीनिंग और समीक्षा के बाद क्षेत्रवार अनुसंधान समितियों ने समर्थन के लिए कुल 301 अनुसंधान प्रस्तावों की सिफारिश की है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार के इस प्रयास से विभिन्न क्षेत्रों में शोध को बढ़ावा मिलेगा।

भारत की जनता ने ऐतिहासिक जीत के रूप में दिया आशीर्वाद, जी7 शिखर सम्मेलन में बोले पीएम मोदी

इटली, 15 जून [एजेंसी]।

प्रधानमंत्री मरेन्द्र मोदी जी 7 शिखर सम्मेलन के दौरान आउटरीच बैठक में हिस्सा लेने के लिए इटली पहुंचे है। इस दौरान उन्होंने आउटरीच सत्र को संबोधित भी किया। उन्होंने कहा कि उनका सौभाग्य है कि भारत की जनता ने उन्हें लगातार तीसरी बार सेवा का मौका दिया। अपने संबोधन के दौरान पीएम मोदी ने कहा, पिछले सप्ताह, आप में से कई लोग यूरोपीय संसद चुनावों में व्यस्त थे। कुछ मित्र आने वाले समय में चुनावों के उत्साह से गुजरेंगे। भारत में भी, कुछ महीने पहले चुनाव का समय था। टेक्नोलॉजी के सर्वव्यापी उपयोग से पूरी चुनावी प्रक्रिया को निष्पक्ष और पारदर्शी बनाया गया है। यह मेरा सौभाग्य है कि भारत के लोगों ने लगातार तीसरी बार मुझे अपनी सेवा करने का अवसर दिया है। भारत की जनता ने इस ऐतिहासिक जीत के रूप में जो आशीर्वाद दिया है, वह पूरे लोकतांत्रिक विश्व की जीत है।

पीएम ने कहा, भारत मानव-केंद्रित दृष्टिकोण के माध्यम से बेहतर भविष्य के लिए प्रयास कर रहा है। भारत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के लिए राष्ट्रीय रणनीति तैयार करने वाले पहले कुछ देशों में से एक है। इस रणनीति के तहत हमने इस वर्ष A.I मिशन लॉन्च किया है। उन्होंने कहा कि पिछले साल भारत द्वारा आयोजित जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान हमने एआई के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय प्रशासन के महत्व पर जोर दिया था। भविष्य में भी हम एआई को पारदर्शी, निष्पक्ष, सुरक्षित, सुलभ और जिम्मेदार बनाने के लिए सभी देशों के साथ मिलकर काम करना जारी रखेंगे। पीएम ने अपने संबोधन में आगे कहा, ऊर्जा के क्षेत्र में भारत का दृष्टिकोण भी चार सिद्धांतों पर आधारित है ।

पूरी तरह अब भी नहीं बुझ पाई है चांदनी चौक में लगी आग, पुलिस ने दर्ज की एफआईआर

नई दिल्ली। चांदनी चौक के नई सड़क की दुकानों में लगी आग शुक्रवार को भी पूरी तरह नहीं बुझ पाई। बृहसपतिवार को आग पर काबू पाने में लगभग 11 घंटे लग गए थे। शुक्रवार को भी रूक रूक कर आग भड़कती रही। 45 से अधिक फायर टेंडरों और 200 फायर कर्मियों शुक्रवार सुबह 4.30 बजे के आसपास आग पर नियंत्रण पा लिया था, लेकिन चारों ओर ज्वलनशील पदार्थ होने के कारण फिर से आग सुलग गई।अग्निशमन अधिकारियों का कहना है कि आग को पूरी तरह से बुझाने में 24 घंटे और वक्त लग सकते हैं। करीब दस दमकल गाड़ियां और 50 फासर कर्मी आग बुझाने में अभी भी लगे हुए हैं। डीसीपी उत्तरी जिला मनोज कुमार मीणा ने कहा कि आग बुझाने के दौरान एक फायरकर्मी मामूली झुलस भी गए। बिल्डिंग में ज्वलनशील पदार्थ पड़े होने के कारण आग नहीं बुझ पा रही है।दिल्ली पुलिस ने कहा कि चांदनी चौक अग्निकांड में एफआईआर दर्ज कर ली गई है। आग लगने का कारण जांच का विषय है। आग कटरा की दुकानों तक फैल गई। आग अब लगभग बुझ चुकी है और लगभग 110-120 दुकानें पूरी तरह या आंशिक रूप से प्रभावित हुई हैं। चल रहे अग्निशमन अभियान के दौरान एक फायरमैन सतही रूप से झुलस गया था।घटना स्थल तक पहुंचने के लिए 250-300 फीट तक फैली कई नलियों को जोड़ना पड़ा। पानी भरने और प्रभावित स्थानों तक पहुंचने के लिए दमकल गाड़ियों को 100 से अधिक चक्कर लगाने पड़े। अग्निशमन कर्मियों को अपने टैंक भरने के लिए पास के अग्निशमन केंद्रों और अन्य से मदद लेनी पड़ी।

मुंबई के विजय नगर में मकान का हिस्सा गिरा, मलबे में दबने से दो लोगों की मौत

मुंबई। मुंबई के एंटॉप हिल इलाके में स्थित विजय नगर में एक घर का एक हिस्सा ढह गया। इस हादसे में दो लोगों की मौत की खबर सामने आई है। वहीं, कुछ लोगों के घायल होने की भी खबर है। मुंबई फायर ब्रिगेड ने जानकारी देते हुए कहा कि एंटॉप हिल इलाके में स्थित विजय नगर में एक घर के ढहने की सूचना मिलते ही फायर ब्रिगेड के अधिकारी मौके पर पहुंचे और बचान कार्य शुरू कर दिया।

लेखिका अरुंधति रॉय और पूर्व प्रोफेसर हुसैन के खिलाफ एलजी ने आप के तहत मुकदमा चलाने की दी मंजूरी

नई दिल्ली 15 जून । दिल्ली के एलजी वीके सक्सेना ने लेखिका अरुंधति राय और कश्मीर के केंद्रीय विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय कानून के पूर्व प्रोफेसर डा. शेख शौकत हुसैन के खिलाफ गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम (यूएपीए) की धारा 45 (1) के तहत मुकदमा चलाने को मंजूरी दे दी है। गौरतलब है कि अरुंधति राय और हुसैन ने 21 अक्टूबर, 2010 को कापरनिकस मार्ग स्थित एलटीजी आडिटोरियम में आजादी- द ओनली वे के बैनर तले आयोजित एक सम्मेलन में कथित तौर पर भड़काऊ और भारत विरोधी भाषण दिए थे। सम्मेलन में जिन मुद्दों पर चर्चा की गई, उनमें कश्मीर को भारत से अलग करने की बात सबसे महत्वपूर्ण थी। सम्मेलन में भाषण देने वालों में सैयद अली शाह गिलानी, एसएआर गिलानी (सम्मेलन के एंकर और संसद हमले मामले के मुख्य आरोपित), अरुंधति राय, डा. शेख शौकत हुसैन एवं माओवादी समर्थक वारा वारा राव शामिल थे।गिलानी और अरुंधति राय पर आरोप है कि इन्होंने इस बात का जोर-शोर से प्रचार किया कि कश्मीर कभी भी भारत का हिस्सा नहीं था और उस पर भारत के सशस्त्र बलों ने जबरन कब्जा किया हुआ है। इसमें यहां तक कहा गया कि भारत से जम्मू-कश्मीर की आजादी के लिए हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए। सुशील पंडित ने नई दिल्ली मेट्रोपालिटन मजिस्ट्रेट कोर्ट के समक्ष सीआरपीसी की धारा 156(3) के तहत शिकायत दर्ज की थी। कोर्ट ने 27 नवंबर 2010 को मामले में एफआईआर दर्ज करने के निर्देश दिया, जिसके बाद आइपीसी की धारा 124-ए/153ए/153बी/504 और 505 और 13 यूए (पी) अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया था। अक्टूबर 2023 में एलजी ने आइपीसी की धारा 153ए/153बी और 505 के तहत दंडनीय अपराधों के लिए उपरोक्त आरोपियों पर मुकदमा चलाने के लिए सीआरपीसी की धारा 196 के तहत मंजूरी दी थी। अब गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम की धारा 45 (1) के तहत मुकदमा चलाने को मंजूरी दे दी है।

पोप फ्रांसिस ने पीएम मोदी को लगाया गले, लिया हालचाल

जी7 सम्मेलन में कुछ यूं दुनियाभर के नेताओं से मिल रहे प्रधानमंत्री

बारी, 15 जून [एजेंसी]।

इटली में चल रहे जी7 शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी पहुंचे हैं। यहां उन्होंने अन्य देशों के शीर्ष नेताओं के साथ ही पोप फ्रांसिस से भी मुलाकात की। पोप फ्रांसिस से मुलाकात को लेकर पीएम मोदी ने एक्स पर लिखा कि जी7 शिखर सम्मेलन के मौके पर पोप फ्रांसिस से मुलाकात हुई। मैं लोगों की सेवा करने और हमारे ग्रह को बेहतर बनाने की उनकी प्रतिबद्धता की प्रशंसा करता हूं। साथ ही उन्हें भारत आने का निमंत्रण भी दिया।देश में आम चुनाव से पहले पीएम मोदी और भाजपा ने ईसाई समुदाय के लिए कई वादे किए हैं। पीएम मोदी को दुनिया भर के कैथोलिक चर्च के 87 वर्षीय प्रमुख पोप फ्रांसिस के साथ हल्की-फुल्की बातचीत करते देखा गया। पोप फ्रांसिस एक व्हीलचेयर पर थे और पीएम मोदी चलकर उनसे मिलने के लिए आए। एशिया में दूसरी सबसे बड़ी कैथोलिक आबादी का घर होने के नाते अगले साल पोप के भारत दौरे की उम्मीद है।

इससे पहले प्रधानमंत्री मोदी ने अक्टूबर 2021 में वेटिकन के अपोस्टोलिक पैलेस में एक निजी मुलाकात के दौरान पोप फ्रांसिस से मुलाकात की थी। उस समय, दोनों नेताओं ने कोविड महामारी और दुनिया भर के लोगों पर इसके परिणामों पर चर्चा की थी साथ उन्होंने जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों पर भी चर्चा की थी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक्स पर ट्वीट किया कि संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन से मिलना हमेशा खुशी की बात है। भारत और अमेरिका वैश्विक भलाई के लिए मिलकर काम करते रहेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ट्वीट किया, संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन से मिलना हमेशा खुशी की बात है। भारत और अमेरिका वैश्विक भलाई के लिए मिलकर काम करते रहेंगे।

ओपी राजभर का 'डीपफेक वीडियो' वायरल, कह रहे- जनता ने मोदी जी को नकार दिया, पार्टी ने बताई सच्चाई

लखनऊ, 15 जून [एजेंसी]।

अपने बयानों को लेकर हमेशा चर्चा में रहने वाले सुभासपा प्रमुख व योगी सरकार के मंत्री ओम प्रकाश राजभर का एक वीडियो और वायरल हुआ है जिसमें वे लोकसभा चुनाव में हार का ठीकरा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर फोड़ रहे हैं। हालांकि, पार्टी ने इस वीडियो को फर्जी बताया है। मुख्य राष्ट्रीय प्रवक्ता अरुण राजभर ने शुक्रवार को कहा कि करीब पांच मिनट का एक वीडियो वायरल किया गया है, इसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जरिए 'डीप फेक' से उनकी आवाज में बनाया गया है।जो वीडियो वायरल हुआ है उसमें राजभर अपने कार्यकर्ताओं से कह रहे हैं, 'तमाम पार्टियों के नेता गठबंधन धर्म निभाना नहीं जानते, लेकिन हम लोगों ने ईमानदारी से गठबंधन का धर्म निभाया है। जनता ने मोदी जी को नकार दिया, योगी जी को नकार दिया है। 'सुभासपा प्रवक्ता ने इस वायरल वीडियो को सिरे से खारिज करते हुए कहा कि ओम प्रकाश राजभर की आवाज में वो बात दिखाई गई है, जो उन्होंने कही ही नहीं है। बलिया जिले में पार्टी कार्यकर्ताओं की एक पुरानी बैठक से ये वीडियो निकाला गया और इसमें तकनीक का इस्तेमाल कर बदनाम करने की कोशिश हुई है। विपक्षी राजभर को बदनाम करने के लिए अमर्यादित आचरण कर रहे हैं। प्रवक्ता ने कहा कि चुनाव के दौरान भी विपक्षियों ने कई बार ऐसी हरकत की और अभी भी कर रहे हैं। सुभासपा विपक्षियों की इन हरकतों से डरने वाली नहीं है। राजभर पहले की तरह पिछड़ों और शोषितों के लिए लड़ाई लड़ते रहेंगे, चाहे विपक्षी उन्हें बदनाम करने की जितनी कोशिश कर लें। प्रवक्ता ने कहा कि तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने के बाद नरेन्द्र मोदी देश के विकास के लिए काम कर रहे हैं, जिससे विपक्ष को दिक्कतें हो रही हैं। इस मामले में पार्टी एफआईआर भी दर्ज कराएगी।

इटली से भारत रवाना होने से पहले जो बाइडन से मिले पीएम मोदी कनाडा के प्रधानमंत्री ट्रूडो के साथ मुलाकात रही चर्चा का विषय

अपुलिया 15 जून । जी7 शिखर सम्मेलन में भाग लेने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ब्रिंडिसि हवाई अड्डे से भारत के लिए रवाना हो गए। लेकिन उनकी जी7 शिखर सम्मेलन के इतर इटली में अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन और कनाडा के समकक्ष जस्टिन ट्रूडो से मुलाकात काफी चर्चा में रही। भारत और कनाडा में निज्जर हत्याकांड को लेकर तनाव देखा गया था।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शक्रवार (स्थानीय समय) पर जी7 शिखर सम्मेलन से इतर अपने कनाडाई समकक्ष जस्टिन ट्रूडो से मुलाकात की। बैठक के बाद एक्स पर एक पोस्ट साझा करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि जी7 शिखर सम्मेलन में कनाडाई पीएम जस्टिनट्रूडो से मुलाकात हुई। ट्रूडो ने पिछले साल कनाडा में आतंकवादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या को लेकर भारत सरकार के एजेंटों पर आरोप लगाए थे। वहीं इसके बाद ही दोनों देशों शीर्ष नेताओं के साथ यह बैठक हुई। हालाँकि, भारत ने कनाडा के आरोपों को बेतुका बताकर खारिज कर दिया था। जी7 शिखर सम्मेलन 13-15 जून को इटली के अपुलिया क्षेत्र में आयोजित किया जा रहा है, जहां भारत को शिखर सम्मेलन में आउटरीच देश के रूप में आमंत्रित किया गया है और इसमें सात सदस्य देशों, अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, जर्मनी, इटली, जापान, और फ्रांस, साथ ही यूरोपीय संघकी भागीदारी है।

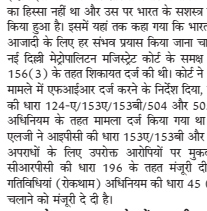

चुनाव के बाद एक्शन मोड में आए सीएम योगी, इन जिलों के अधिकारियों पर कार्रवाई तय! लिस्ट हो रही तैयार

लखनऊ। चुनाव खत्म होते ही एक बार फिर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एक्शन में आ गए हैं। उन्होंने उच्च स्तरीय बैठक में कार्यों में लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों की सूची प्रस्तुत करने के निर्देश दिए हैं। मुख्यमंत्री ने राजस्व संबंधी मामलों में लापरवाही पर खासी नाराजगी जताई है। उन्होंने दो हफ्ते में मुख्यमंत्री कार्यालय रिपोर्ट सौंपने के निर्देश दिए हैं।वहीं, राजस्व परिषद के चेयरमैन रजनीश दुबे ने राजस्व मामलों की समीक्षा कर लापरवाही बरतने वाले राजस्व अफसरों, एडीएम, एसडीएम, नायाब तहसीलदार और तहसीलदार स्तर के अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र ने भी राजस्व संबंधी मामलों की समीक्षा में राजस्व संबंधी मामलों के निपटारे में लापरवाह अधिकारियों को फटकार लगाई। वे जल्द ही अनियमितता बरतने वाले अधिकारियों की रिपोर्ट मुख्यमंत्री कार्यालय को सौंपेंगे, जिसके बाद इनके खिलाफ कार्रवाई हो सकती है।मुख्य सचिव की समीक्षा में राजस्व संबंधी मामलों के निपटारे में कई जिले फिसड्डी रहे हैं। मुख्य सचिव जल्द ही पूरी रिपोर्ट मुख्यमंत्री कार्यालय को सौंप सकते हैं। धारा-34 (नामांतरण) में कुशीनगर, सोनभद्र, रायबरेली, बलिया और अमेठी में पहले से सुधार हुआ है, लेकिन निपटारे का प्रतिशत 95 प्रतिशत से कम है। धारा-80 (कृषि भूमि का गैर-कृषि भूमि में परिवर्तन) के अयोध्या में 34, प्रतापगढ़ में 21, गोरखपुर में 12, कानपुर नगर में 10 और बाराबंकी में सात मामले लंबित हैं। चकबंदी विभाग ने लापरवाही के आरोप में मीरजापुर और बांदा के चकबंदी अधिकारियों को निलंबित कर दिया है। मैनपुरी में भी चकबंदी से जुड़े आधा दर्जन अधिकारियों व कर्मचारियों पर कार्रवाई की गई है। चकबंदी आयुक्त जीएस नवीन कुमार ने बताया कि बांदा में चकबंदी अधिकारी राणा प्रताप को काम में लापरवाही के कारण निलंबित करते हुए उनके विरुद्ध अनुशासनिक कार्रवाई के आदेश दिए गए हैं। इसी प्रकार मीरजापुर चकबंदी अधिकारी राजेन्द्र राम को भी पद का दुरुपयोग करने के मामले में निलंबित कर दिया गया है। वहीं, मैनपुरी में कार्य में लापरवाही बरतने के आरोप में चकबंदी अधिकारी मोहम्मद साजिद, चकबंदी कर्ता काली चरण और रविकांत, चकबंदी लेखपाल अमित कुमार और अजय कुमार के खिलाफ विभागीय कार्रवाई की गई है। मैनपुरी के ही उप संचालक चकबंदी/एडीएम एफआर रामजी मिश्र को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है।

एक घर में 100 लोग कर रहे थे भजन-कीर्तन, अचानक पहुंची पुलिस तो मच गई खलबली! देखने वालों की लग गई भीड़

रामपुर, 15 जून [एजेंसी]।

थाना पटवाई क्षेत्र में एक गांव में पादरी द्वारा प्रार्थना कराए जाने और वहां बड़ी संख्या में लोगों के इकट्ठा होने पर हंगामा हो गया। हिंदू संगठनों के कार्यकर्ता पहुंच गए और मतांतरण का आरोप लगाया। सूचना पर पुलिस पहुंच गई। पुलिस को देख प्रार्थना करा रहे पादरी फरार हो गए। पुलिस मकान मालिक और उसके दो पुत्रों को पकड़कर थाने ले आई। हालांकि, बाद में दोनों पक्षों में समझौता होने पर उन्हें छोड़ दिया। घटना सूरजपुर गांव की है। यहां रहने वाले एक व्यक्ति के घर पर गुरुवार सुबह करीब 100 लोग इकट्ठा हुए थे। इनमें कई दूसरे शहरों से भी आए थे। किसी ने बजरंग दल और विश्व हिंदू संगठन के कार्यकर्ताओं को मतांतरण की सूचना दे दी। हिंदू संगठनों के कार्यकर्ता वहां पहुंच गए।

वहां ईसाई मिशनरी के कुछ लोग बुलाकर प्रार्थना कराई जा रही थी। सूचना पर पटवाई थाना पुलिस भी आ गई। पुलिस मकान मालिक और उसके दो बेटों को पकड़कर थाने ले आई।हिंदू संगठनों के कार्यकर्ता भी पहुंच गए। वहां काफी देर तक हंगामा चलता रहा। पुलिस को पूछताछ करने पर व्यक्ति ने बताया कि उनके बेटे की तबीयत ठीक नहीं रहती थी, जिसका इलाज कई सालों से चल रहा था। दवा से आराम नहीं मिल रहा था। तब किसी के बताने पर वह ईसाई समाज से जुड़ गया और परमपिता परमेश्वर की प्रार्थना करने लगा। इससे उसका बेटा आज ठीक हो गया है।

गुरुवार को उसने अपने मिलने वाले अन्य गांव के लोग, रिश्तेदारों आदि को घर बुलाया था। यहां पादरी से परमपिता परमेश्वर का भजन-कीर्तन करा रहे थे।

इस दौरान बजरंग दल के कार्यकर्ता आ गए और हम पर मतांतरण का आरोप लगाने लगे। उधर, बजरंग दल के कार्यकर्ताओं का कहना था कि ईश्वर का नाम लेना है तो घर में रामचरित मानस का पाठ कराएं। थाना प्रभारी इंस्पेक्टर मनचंद ने बताया कि सूचना मिली थी कि सूरजपुर गांव का झंडू सिंह अपने घर पर ईसाई मिशनरी के लोगों को बुलाकर भजन करा रहा था। उसे थाने लाकर पूछताछ की। उसने बताया कि अपने बेटे के लिए उसने ऐसा किया। उसने ईसाई धर्म नहीं अपनाया है। उसका कहना है कि वह शुक्रवार से घर पर रामचरितमानस का पाठ कराएगा। दोनों पक्षों में अब किसी तरह का विवाद नहीं है। उधर, हिंदू संगठनों के कार्यकर्ताओं ने थाने में ही आपस में 2100 रुपये इकट्ठे कर झंडू सिंह को रामचरितमानस का पाठ कराने के लिए दिए।

नाक से जिद्दी ब्लैकहेड्स को निकालने के लिए आजमाएं ये घरेलू नुस्खे

तेल, डेड स्किन सेल्स और गंदगी आदि जब लगातार त्वचा के रोमछिद्रों पर जमा होने लगती हैं तो इससे ब्लैकहेड्स की समस्या हो जाती है। ब्लैकहेड्स को आम भाषा में कील भी कहा जाता है।कई लोग इसे निकलने के लिए ब्लैकहेड्स रिमूवर टूल्स का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन उनकी गलत तकनीक त्वचा को नुकसान पहुंचा सकती है।आइए आज हम आपको कुछ ऐसे प्रभावी घरेलू नुस्खे बताते हैं, जिन्हें आजमाकर नाक से जिद्दी ब्लैकहेड्स को निकाला जा सकता है।

टी ट्री तेल का करें इस्तेमाल

टी ट्री तेल त्वचा की गहराई में जाकर ब्लैकहेड्स को बाहर निकालने में मदद कर सकता है।लाभ के लिए चेहरे को लगभग 5-10 मिनट के लिए भाप दें, फिर टी ट्री तेल, जोजोबा तेल और चीनी का मिश्रण नाक पर लगाकर सर्कुलर मोशन में लगाएं।इसके बाद अपने चेहरे को ठंडे पानी से धो लें, फिर नाक पर मॉइस्चराइजर भी जरूर लगाएं।

मुल्तानी मिट्टी और संतरे का छिलका आएगा काम

मुल्तानी मिट्टी अपने तेल सोखने के गुणों के लिए जानी जाती है, जबकि संतरे के छिलके में मौजूद विटामिन- सी और साइट्रिक एसिड त्वचा को चमकदार बनाने में सहायक है।लाभ के लिए एक कटोरी में थोड़ी मुल्तानी मिट्टी, संतरे के छिलके का पाउडर और पानी डालकर गाढ़ा पेस्ट बनाएं, फिर इसे नाक पर लगाकर 5 मिनट के लिए छोड़ दें।समय पूरा होने के बाद धीरे-धीरे मिश्रण लगाए हुए हिस्से पर स्क्रब करें, फिर चेहरे को ठंडे पानी से धोएं।

नींबू और चीनी का मिश्रण लगाएं

यह मिश्रण अतिरिक्त तेल उत्पादन को नियंत्रित करके त्वचा को गहराई से साफ कर सकता है।लाभ के लिए नींबू के रस, चीनी और शहद या जैतून के तेल की कुछ बूंदों को एक साथ मिलाएं।अब इस मिश्रण को अपनी नाक पर लगाएं और करीब 5 मिनट तक स्क्रब करने के बाद पानी से धो लें।यहां जानिए नींबू को स्किन केयर रूटीन में शामिल करने के तरीके।

कॉफी भी है कारगर

कॉफी एक प्राकृतिक एक्सफोलिएटर है, जो अपने शक्तिशाली एंटी-इंफ्लेमेटरी गुणों के साथ त्वचा के समग्र स्वास्थ्य में सुधार कर सकती है।लाभ के लिए पिसी हुई कॉफी, चीनी, एवोकाडो तेल और नारियल के तेल को एक साथ मिलाएं।अब इस मिश्रण को नाक पर लगाकर हल्के हाथों से स्क्रब करें, फिर कुछ मिनट बाद इसे गुनगुने पानी से साफ कर लें।यहां जानिए कॉफी के विभिन्न इस्तेमाल।

मसूर की दाल भी कर सकती है मदद

यह मिश्रण डेड स्किन सेल्स और गंदगी को हटाने के साथ-साथ त्वचा को मुलायम बनाने में मदद कर सकता है।लाभ के लिए मसूर दाल का पाउडर, हल्दी का पाउडर और दही को मिलाकर गाढ़ा पेस्ट बना लें। इसके बाद इस मिश्रण को नाक पर लगाएं और करीब 5 मिनट तक स्क्रब करने के बाद पानी से धो लें।यहां जानिए मसूर की दाल से बनाए जाने वाले फेस पैक।

औरों में कहां दम था का ट्रेलर रिलीज दिल जीत लेगी अजय देवगन और तब्बू की आशिकी

अजय देवगन और तब्बू की बहुप्रतीक्षित फिल्म औरों में कहां दम था का दर्शकों को बेसब्री से इंतजार है। फिल्म के पोस्टर और टीजर के बाद से दर्शकों को इसके ट्रेलर का इंतजार था, जो आखिरकार खत्म हो चुका है। निर्माताओं ने औरों में कहां दम था का ट्रेलर जारी कर दिया है, जिसे देख प्रशंसक उत्साहित हो गए हैं। ट्रेलर में दिखी फिल्म की झलक अजय देवगन और तब्बू की अनोखी प्रेम कहानी का वादा करती है, जिसमें कई उतार-चढ़ाव हैं। तीन मिनट लंबे ट्रेलर में शांतनु माहेश्वरी युवा अजय देवगन की भूमिका निभाते दिखे, जो तब्बू के किरदार से रोमांस करते हुए नजर आ रहे हैं। बाद में एक हत्या के मामले में अजय देवगन जेल चले जाते हैं, जिसकी वजह से तब्बू और वे अलग हो जाते हैं। इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना के कई साल बाद उलझी हुई परिस्थितियों में अजय देवगन और तब्बू को फिर से मिलते हैं।

मुंज्या ने निकाला बजट, 30 करोड़ के पार हुई शरवरी वाघ की फिल्म

आदित्य सरपोतदार के निर्देशन में बनी फिल्म मुंज्या को सिनेमाघरों में रिलीज हुए एक सप्ताह पूरा होने जा रहा है और यह अपनी पकड़ मजबूत बनाए हुए है।इस फिल्म में मोना सिंह, अभय सिंह और शरवरी वाघ जैसे कलाकार मुख्य भूमिका में हैं, जिनकी अदाकारी दर्शकों को पसंद आ रही है।मुंज्या शुरुआत से बॉक्स ऑफिस पर उम्मीद से अच्छा प्रदर्शन कर रही है। हालांकि, पिछले कुछ दिनों से इस फिल्म की दैनिक कमाई में गिरावट जारी है।

क्या है नो रॉ डाइट?
जानिए इसके फायदे नुकसान और इससे जुड़ी अन्य महत्वपूर्ण बातें

सोशल मीडिया पर आए दिन डाइट से जुड़े रुझान आते-जाते रहते हैं, लेकिन आपके लिए यह समझना जरूरी है कि आपके शरीर को क्या सूट करता है।हाल ही में प्रसिद्ध अभिनेत्री विद्या बालन ने एक इंटरव्यू में अपनी आहार संबंधी नियमों के बारे में बताया और इसी दौरान उन्होंने नो रॉ डाइट का भी जिक्र किया, जिसके बाद से यह काफी चलन में आ गया है।आइए जानते हैं कि नो रॉ डाइट क्या है और कैसे लाभदायक है।

क्या है नो रॉ डाइट?

यह एक ऐसी डाइट है, जिसमें कच्चे खाद्य पदार्थ नही लेने होते हैं।इसमें खाद्य पदार्थों को भूनकर, पकाकर, उबालकर या फिर किसी भी अन्य तरीके से संसाधित करके उनका सेवन करना शामिल है।यह उन लोगों के लिए उपयुक्त साबित हो सकता है, जिन्हें कच्चे खाद्य पदार्थों का सेवन न करने की सलाह दी जाती है, जैसे कि कमजोर इम्यूनिटी वाले, पाचन ससमस्याओं से ग्रस्त और गर्भवती महिलाओं के लिए कुछ कच्चे खाद्य पदार्थों का सेवन नुकसानदायक होता है।

डाइट में होना चाहिए कच्चे और पके खाद्य पदार्थों का संतुलन- विशेषज्ञ

खाद्य पदार्थों को पकाकर खाने से उन पर मौजूद हानिकारक बैक्टीरिया और परजीवी मर जाते हैं, जिससे खाद्य जनित बीमारियों का खतरा कम हो जाता है।उदाहरण के लिए टमाटर को पकाने के बाद इसमें मौजूद लाइकोपीन जैवउपलब्ध हो जाता है।हालांकि, पोषण विशेषज्ञों का कहना है कि कच्चे और पके दोनों प्रकार के खाद्य पदार्थों को शामिल करने से पोषक तत्वों और स्वास्थ्य लाभों का संतुलन सुनिश्चित होता है।

नो रॉ डाइट से मिलने वाले फायदे

खाना पकाने से कुछ पोषक तत्वों की जैवउपलब्धता बढ़ सकती है, जिससे वे शरीर द्वारा अधिक आसानी से अवशोषित हो जाते हैं।

इससे खाद्य जनित बीमारियों को रोकने में मदद मिल सकती है, जो कमजोर इम्यूनिटी वाले लोगों के लिए विशेष रूप से फायदेमंद हो सकती है।जब खाद्य पदार्थों को पकाया जाता है तो इससे उनमें कठोर कोशिका दीवारें और फाइबर टूट जाते हैं, जिससे शरीर के लिए उन्हें पचाना आसान हो जाता है।

नो रॉ डाइट के दुष्प्रभाव

फल और सब्जियों को पकाने से कुछ विटामिन और एंजाइम खत्म हो जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उनका सेवन शरीर में पोषक तत्वों की कमी कर सकता है।

इसके अतिरिक्त कुछ खाद्य पदार्थों को पकाने से उनमें मौजूद फाइबर कम हो सकता है और शरीर को पर्याप्त फाइबर न मिलने के कारण पाचन संबंधित समस्याएं हो सकती हैं।पके खाने से भरपूर पोषण न मिल पाने से शरीर भी ढंग से काम नहीं कर पाता।

कल्कि 2898 एडी से दिशा पाटनी का लुक जारी, क्रॉप टॉप में दे रहीं गैंगस्टर वाइब

एक्ट्रेस दिशा पाटनी आज अपना 32वां बर्थडे सेलिब्रेट कर रही हैं। इस खास दिन पर अपकमिंग साइंस फिक्शन एक्शन फिल्म कल्कि 2898 एडी के मेकर्स ने उन्हें खास गिफ्ट दिया है। दरअसल, टीम ने फिल्म से उनके लुक को जारी किया है।

मेकर्स ने सोशल मीडिया पर दिशा का एक शानदार पोस्टर जारी किया, जिसमें उनके लुक को देख गैंगस्टर वाइब्स आ रही हैं। फिल्म में दिशा रॉक्सी के किरदार में हैं। उन्होंने क्रॉप टॉप के साथ क्रॉप जैकेट और मैचिंग ट्राउजर पहने हुए हैं।

उन्होंने अपने लुक को ग्लव्स और बूट के साथ पूरा किया।

पोस्टर पर बैकग्राउंड में टैगलाइन लिखा हुआ है, हैप्पी बर्थडे रॉक्सी।

पोस्ट को शेयर करते हुए मेकर्स ने कैप्शन में लिखा, हमारी रॉक्सी यानी दिशा पाटनी को जन्मदिन की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। हैशटैग कल्कि 2898 एडी...

कल्कि 2898 एडी तेलुगु इंडस्ट्री की सबसे महंगी बजट वाली फिल्म है। इसका निर्देशन नाग अश्विन ने किया है। यह नाग अश्विन द्वारा लिखित और वैजयंती मूवीज द्वारा निर्मित है। इसमें अमिताभ बच्चन, कमल हासन, दीपिका पादुकोण, प्रभास समेत कई अन्य कलाकार अहम रोल में हैं।

यह फिल्म 27 जून को रिलीज होने वाली है।

वर्कफ्रंट की बात करें तो दिशा को पिछली बार एक्शन थ्रिलर फिल्म योद्धा में देखा गया था। इसमें सिद्धार्थ मल्होत्रा और राशि खन्ना लीड रोल में थे।

वह जल्द ही फिल्म कंगुवा और वेलकम टू द जंगल में नजर आएंगी। दिशा ने अपनी एक्टिंग करियर की शुरुआत तेलुगु फिल्म लोफर से की, वहीं बॉलीवुड डेब्यू सुशांत सिंह राजपूत स्टारर एम.एस. धोनी- द अनटोल्ड स्टोरी से किया। इस फिल्म में दिशा ने प्रियंका झा का किरदार निभाया। उनका गाना कौन तुझे यूं प्यार करेगा दर्शकों की जुबां पर आज भी है।

इसके बाद वह बागी 2 में टाइगर श्रॉफ के साथ नजर आई। यह फिल्म सुपरहिट साबित हुई। वह 2019 में रिलीज हुई सलमान खान और कैटरीना कैफ की फिल्म भारत में भी नजर आई। उन्होंने एक्शन थ्रिलर फिल्म मलंग में अनिल कपूर, आदित्य रॉय कपूर और कुणाल खेमू के साथ स्क्रीन शेयर किया।

स्टाइलिश रेड साड़ी पहने साउथ की हसीना श्रद्धा दास ने ढाया कहर

बॉलीवुड एक्ट्रेस श्रद्धा दास हमेशा अपने बोल्ड और स्टाइलिश फैशन सेंस को लेकर चर्चाओं में रहती हैं। एक्ट्रेस जब भी अपनी तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट करती हैं तो वो अक्सर फैंस के बीच छा जाती हैं। हाल ही में एक्ट्रेस ने अपने लेटेस्ट फोटोशूट की कुछ ग्लैमरस तस्वीरें इंस्टाग्राम अकाउंट पर पोस्ट की हैं। इन तस्वीरों में उनका स्टनिंग अवतार देखकर फैंस दीवाने हो गए हैं।

साउथ की खूबसूरत हसीना श्रद्धा दास ने अपनी दमदार एक्टिंग से लोगों के बीच अपनी अच्छी पहचान बनाई है। एक्ट्रेस जब भी अपनी तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट करती हैं तो फैंस उनकी तारीफ करते नहीं थकते हैं।

हाल ही में एक्ट्रेस श्रद्धा दास ने अपने लेटेस्ट फोटोशूट की कुछ बेहद ग्लैमरस तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट की हैं, जिसमें उनका स्टनिंग अवतार देखकर फैंस बेकाबू हो गए हैं।

फोटोज में आप देख सकते हैं एक्ट्रेस श्रद्धा दास ने रेड कलर की स्टाइलिश साड़ी पहनी हुई है, जिसमें वो काफी ज्यादा हॉट और बोल्ड नजर आ रही हैं।

एक्ट्रेस जब भी अपनी फोटोज और वीडियोज इंस्टाग्राम पर पोस्ट करती हैं तो फैंस उनकी तस्वीरों पर जमकर लाइक्स और कॉमेंट्स करते हुए नहीं थकते हैं। हाई बन बनाकर, गले में प्यारा सा नेकलेस और लाइट मेकअप कर के एक्ट्रेस श्रद्धा दास ने अपने इस आउटलुक को शानदार तरीके से कंप्लीट किया है।

एक्ट्रेस अपने इस लुक में काफी ज्यादा डेशिंग नजर आ रही हैं। हालांकि फैंस भी उनकी इन तस्वीरों पर जमकर अपनी-अपनी प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं। एक यूजर ने उनकी इन फोटोज पर कॉमेंट्स करते हुए लिखा है- टू मच हॉट, वहीं दूसरे यूजर ने लिखा है- सो ग्लैमरस, फिर तीसरे यूजर ने हार्ट इमोजी रिएक्शंस देते हुए लिखा है- यू लुक ब्यूटिफुल।

शब्द सामर्थ्य -088

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं :

1. पानी, नीर, अंबु 2. आना-जाना, आवागमन 5. बहुत, बढ़िया 6. दूर रहने वाला (घटना) जो वर्तमान में न घट सके 8. अबोध, नासमझ, अनाड़ी 10. सब्जी, शाक 11. निशान, उद्देश्य, अनुमान योग्य वस्तु 12. नाखून 13. द्रव पदार्थ 15. सुनसान, जनविहीन स्थान 16. चटकीला, चमकीला, चटपटा, गँरिया 18. भगवान, खुदा 19. इन दिनों, वर्तमान दिनों में 20. अग्नि, पावक 21. अन्नकण, अनाज का टुकड़ा 22. टालमटोल, बहाने बाजी 24. भैया की पत्नी 25. पांच से छोटी एक विषम संख्या 26. हत्या, कत्ल.

ऊपर से नीचे

1. दुनिया, संसार, ठोस रूप में परिवर्तित करना 2. चमक, पानी 3. बाजीगर, जादू का खेल दिखाने वाला 4. एक पंजाबी प्रेमगीत, रांझा की प्रेमिका 5. मार-काट, खून-कत्ल 7. भूमि, जमीन, भू-भाग 9. बहुत बड़ा दानी, 10. संगीत के सुरों की संख्या 14. लचीला, लोचयुक्त 17. खिसकना, अपने स्थान से हटना, विचलित होना 19. प्रवेश करना, पधारना, आना 20. धूप-दीप से पूजा 22. इसी समय 23. गुस्सा, कहर.

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 087 का हल

स्वा	द		सा	म	ना		कै	दी
व		ख	ल	ना	य	क		वा
लं	प	ट		ना	क	क	ट	ना
बी		प				ड़ी		प
	अ	ट	प	टा			शा	न
स	ह		यो			र	ति	
ह	म		द	र	ब	द	र	
म	क	र		सी	ल			
त		क्षा		द	वा	खा	ना	

डायरेक्टर नागराज मंजुले के साथ काम करना मेरी विश लिस्ट में था: सई ताम्हणकर

मराठी और बॉलीवुड एक्ट्रेस सई ताम्हणकर इन दिनों विजय वर्मा स्टारर मटका किंग को लेकर काफी चर्चाओं में है। इसे नागराज मंजुले डायरेक्ट कर रहे हैं। एक्ट्रेस ने बताया कि नागराज के साथ काम करना उनकी विश लिस्ट में था, जिसके चलते वह काफी एक्साइटेड हैं।

सई ने कहा, नागराज मंजुले के साथ काम करना मेरी विश लिस्ट में था। मैंने कई इंटरव्यू और सोशल मीडिया पर इस बारे में भी कई बार बात की है। मैं उनके साथ काम करने के लिए बहुत एक्साइटेड और नर्वस हूं।

सई ने कहा, यह अमेजन प्राइम की एक वेब सीरीज है, जिसमें विजय भी शामिल हैं। मुझे इसमें उनके जैसे बेहतरीन एक्टर के साथ काम करने का मौका मिलेगा। अभी, मैं अपने किरदार के बारे में ज्यादा कुछ नहीं बता सकती, लेकिन कुल मिलाकर यह मेरी जिंदगी का सबसे रोमांचक किरदार होगा।

मटका किंग में कृतिका कामरा, गुलशन ग्रोवर और सिद्धार्थ जाधव जैसे कलाकार अहम रोल में हैं।

मटका किंग की कहानी 1960 के दशक की है, जिसमें एक कपास व्यापारी मटका नामक एक नया जुआ खेल शुरू करता है। यह खेल शहर में तूफान मचा देता है। यह खेल पहले सिर्फ अमीरों और अभिजात वर्ग के लिए आरक्षित था, लेकिन अब हर वर्ग के लोग जुड़ जाते हैं।

रॉय कपूर फिल्म्स के बैनर तले सिद्धार्थ रॉय कपूर और नागराज मंजुले के साथ गार्गी कुलकर्णी, आशीष आर्यन और अश्विनी सिदवानी द्वारा निर्मित इस सीरीज का निर्देशन नागराज ने किया है और मंजुले के साथ अभय कोरानने ने इसे लिखा है।

फिलहाल यह फिल्म प्रोडक्शन स्टेज में है और इसे प्राइम वीडियो पर रिलीज किया जाएगा।

वर्कफ्रंट की बात करें तो सई की झोली में ग्राउंड जीरो, अग्नि और डब्बा कार्टेल जैसी फिल्में हैं।

यातायात नियमों का उल्लंघन करने पर करें कड़ी कार्यवाही:लंगेह

कोरिया। कलेक्टर विनय कुमार लंगेह ने कलेक्ट्रेट सभा कक्ष में सड़क सुरक्षा समिति बैठक ली। बैठक में उन्होंने संभावित ब्लैक स्पॉट चयन करने के साथ ही राष्ट्रीय व राजकीय मार्ग पर चन्हांकित स्थानों पर चेतावनी बोर्ड लगाने, यातायात नियमों का उल्लंघन करने पर वाहन चालको के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही करते हुए ड्रायविंग लायसेंस के निलंबन की कार्यवाही करने तथा दुर्घटना से बचाव संबंधित व्यवस्था दुरूस्त करने एवं सुरक्षा मानकों के पालन करने को लेकर आवष्यक दिशा निर्देश दिए।

कलेक्टर श्री लंगेह ने बैठक में जिले में संचालित सभी स्कूल बसों का परीक्षण स्कूल प्रारंभ होने के पूर्व माननीय सुप्रीम कोर्ट द्वारा दी गई गाईड लाईन के अनुसार बिंदुवार जांच करने के निर्देष दिए। उन्होंने पुलिस थाना व चौकियों से तेज व खतरनांक रूप से वाहन संचालन एवं यातायात नियमों का उल्लंघन करने पर उनके विरूद्ध कड़ी कार्यवाही करते हुए ड्रायविंग लायसेंस की निलंबन की कार्यवाही हेतु परिवहन विभाग को भेजने के निर्देष दिए। इसके साथ ही उन्होंने पिकअप वाहनों पर सवारी लाने ले जाने वालो पर सतत् निगरानी और उनके विरूद्ध कड़ी कार्यवाही करने के निर्देष दिए। कलेक्टर ने पुलिस विभाग के अधिकारियों से रात्रि गस्त बढ़ाने तथा होटल ढाबो का निरंतर निरीक्षण कर असामाजिक तत्वों के विरूद्ध कार्यवाही करने को कहा।

श्री लंगेह ने फुटपाथ, पार्किंग सर्विस लेन से अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही सुनिश्चित करने के साथ स्कूल, कॉलेज व अन्य सार्वजनिक स्थलों पर यातायात के सम्बंध में जन जागरूकता अभियान चलाने के भी निर्देश दिए। बैठक में दुर्घटनाओं के शिकार हुए लोगों की तत्काल मदद व चिकित्सा हेतु ट्रामा सेंटर की स्थापना किए जाने की बात कही। स्वास्थ्य व नेत्र परीक्षण शिविर का आयोजन करने साथ ही ऐसे व्यक्ति जिन्होंने सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति को त्वरित चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने में किसी भी प्रकार की सहायता हो उन्हे सम्मानित किए जाने पर बल दिया। बता दें कि व्यक्ति जिन्होंने सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति को त्वरित चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने में किसी भी प्रकार की सहायता हो उन्हें पांच हजार रूपये दे कर सम्मानित किया जाता है।

बैठक में अपर कलेक्टर श्री अरूण कुमार मरकाम, लोक निर्माण विभाग के कार्यपालन अभियंता श्री एस.के. सतपती, जिला परिवहन अधिकारी श्री अनिल भगत सहित समिति के सदस्य उपस्थित थे।

प्राकृतिक आपदा में मौत, मृतकों के आश्रितों को 24 लाख देगी सरकार

कोरिया। छत्तीसगढ़ शासन, राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग, मंत्रालय महानदी भवन नया रायपुर के राजस्व पुस्तक परिपत्र 6-4 में संशोधित प्रावधान 1 दिसम्बर 2022 में निहित प्रावधान अनुसार राजस्व पुस्तक 6(4) के परिशिष्ट-1 की कंडिका-6 (1) के तहत प्राकृतिक आपदा राहत के अंतर्गत आर्थिक सहायता अनुदान राशि स्वीकृत करने का प्रावधान है। अपर कलेक्टर ने प्राकृतिक आपदा राहत के तहत छः मृतकों के वारिसों को कुल 24 लाख रूपये राशि स्वीकृत की है।

इसी कड़ी में मिली जानकारी अनुसार पटना तहसील के ग्राम मुरमा की श्रीमती कुन्ती बाई की नाला में डुबने से मृत्यु होने पर उनके वारिश श्री चिन्तावन, तहसील पोड़ी (बचरा) के ग्राम पोड़ी निवासी श्री विजय कुमार नदी में डुबने से मृत्यु होने पर उनके वारिश श्रीमती ललिता तथा ग्राम तोलगा के श्री सत्यम साहू तालाब में डूबने से मृत्यु होने पर उनके वारिश श्री रामलल्लू एवं सोनहत तहसील के ग्राम मधौरा की गौरी को सर्प के काटने से मृत्यु होने पर उनके वारिश श्रीमती मीना यादव, ग्राम आनंदपुर के श्री रामशरण सिंह की आकाशीय बिजली से मृत्यु होने पर उनके वारिश श्रीमती फूलकुंवर तथा ग्राम आनंदपुर के श्री कैलाश सिंह की आकाशीय बिजली से मृत्यु होने पर उनके वारिश श्रीमती फूलकुंवर को 4-4 लाख रूपये की आर्थिक सहायता अनुदान राशि की स्वीकृत की गई है।

दसवां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन 21 जून को

कोरिया। प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी 21 जून 2024 को दसवां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन मिनी स्टेडियम शासकीय आदर्श रामानुज उच्चतर माध्यमिक विद्यालय परिसर बैकुण्ठपुर में प्रातः 7 बजे से 8 बजे तक किया जाएगा। कलेक्टर श्री विनय कुमार लंगेह ने कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ. आशुतोष चतुर्वेदी को नोडल अधिकारी नियुक्त किया है। साथ ही विभिन्न विभाग के अधिकारियों को कार्यों का दायित्व सौंपा है। उन्होंने कार्य दायित्व सौंपे गये अधिकारियों को निर्देशित किया है कि 18 जून को समय सीमा की बैठक में सौंपे के कार्यों के प्रगति की जानकारी प्रस्तुत करने के निर्देश दिए है।

नाबालिग चोर गिरफ्तार

रायपुर। राजेंद्र नगर थाना पुलिस ने सूने मकान में चोरी करने वाले एक नाबालिग चोर को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के पास से लाखों रूपये के चोरी सोने चांदी के जेवरात बरामद किया है।

संभागायुक्त ने विडियों कॉन्फ्रेसिंग के माध्यम से राजरव प्रकरणों एवं राजस्व वसूली की समीक्षा

कोरिया। सरगुजा संभागायुक्त जीआर चुरेन्द्र द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेसिंग के माध्यम से संभाग के समस्त राजस्व अधिकारियों से राजस्व प्रकरणों तथा राजस्व वसूली के साथ निराकरण की स्थिति सहित राजस्व के विभिन्न प्रकरणों की समीक्षा की। वीडियो कॉन्फ्रेंस में कोरिया जिले के कलेक्टर विनय कुमार लंगेह, अपर कलेक्टर अरूण कुमार मरकाम, अनुविभागीय अधिकारी बैकुण्ठपुर श्रीमती अंकिता सोम, सोनहत राकेश साहू डिप्टी कलेक्टर सोमेश पटेल सहित तहसीलदार व नायब तहसीलदार सहित अन्य राजस्व अधिकारी शामिल हुए। कलेक्टर विनय कुमार लंगेह ने संभागायुक्त को जिले के राजस्व प्रकरणों के निराकरण की स्थिति तथा राजस्व से संबंधित अन्य जानकारी से अवगत कराया। उन्होंने जिले के राजस्व अधिकारियों को संभागायुक्त द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए कार्य करने तथा समय सीमा में राजस्व प्रकरणों को निराकरण करने के निर्देश दिए।

अब छात्रों को स्कूलों में ही स्वास्थ्य और पोषण की मिलेगी जानकारी

रायपुर। छत्तीसगढ़ के स्कूलों में नये शैक्षणिक सत्र से कई नवाचार किये जा रहे हैं। इनमें से एक यह है कि अब स्कूल में केवल छात्रों को स्वास्थ्य परीक्षण और पोषण के बारे में जानकारी मिलेगी। इसके लिए शिक्षा विभाग द्वारा समय-समय पर प्रत्येक कक्षा के बच्चों की स्वास्थ्य जांच की जायेगी. इसके अलावा स्वास्थ्य विभाग की ओर से उम्र के अनुरूप दवाएं भी दी जाएंगी। यानी अब स्वास्थ्य विभाग स्कूल पहुंचकर बच्चों का इलाज करेगा. बीमारियों की पहचान कर हम उन बच्चों के बड़े अस्पतालों में इलाज की भी व्यवस्था करेंगे. यानी स्कूल में पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों के स्वास्थ्य का भी ख्याल रखा जाएगा. इसके लिए स्कूल शिक्षा विभाग के सचिव ने अधिसूचना जारी कर दी है. इधर, विद्यार्थियों के जाति, आय, निवास प्रमाण पत्र आदि बनाने के लिए स्कूलों में कैंप लगेंगे। जिसमें विद्यालय में अध्ययनरत सभी अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों का जाति प्रमाण पत्र एवं सभी वर्गों का निवास एवं आय प्रमाण पत्र बनाया जायेगा।

जरूरतमंद जिंदगियों को संजीवनी देने के लिए जिले में श्रमिक संगठनों के लोग आये सामने, एसईसीएल डिस्पेंसरी में किया रक्तदान

कोरिया/बैकुंठपुर। कोरिया जिला मुख्यालय बैकुण्ठपुर स्थित एसईसीएल डिस्पेंसरी में एसईसीएल बैकुण्ठपुर क्षेत्र के जीएम वीएन झा ने रक्तदान शिविर का शुभारंभ किया, इस अवसर पर उन्होंने लोगो से ज्यादा से ज्यादा रक्तदान करने के लिए प्रेरित किया।

विश्व रक्तदान दिवस के अवसर पर एसईसीएल बैकुण्ठपुर क्षेत्र ने विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया, आयोजन को लेकर रक्तदाताओं में काफी उत्साह देखा गया, इस अवसर पर एसईसीएल बैकुण्ठपुर क्षेत्र के जीएम वीएन झा, क्षेत्रिय कार्मिक प्रबंधक आर आर आर लकड़ा, डॉ संजय सिंह सीएमएचओ रीजनल अस्पताल चर्चा, डिप्टी सीएमओ ए के बिराजी, एचएमएस के क्षेत्रीय अध्यक्ष हरि यादव, महामंत्री योगेन्द्र कुमार मिश्र, डॉ डीके चिकंजुरी के साथ काफी संख्या में कॉलरी के अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे। इन्होंने किया रक्तदान एचएमएस के महामंत्री योगेंद्र मिश्रा का आज जन्मदिन भी है, प्रायः अपने जन्मदिन पर वो बीते लंबे समय से रक्तदान करते आ रहे है आज भी उन्होंने पहले रक्त देकर रक्तदान शिविर की शुरुआत की उनके साथ आनंद राजवाडे, देवेंद्र जायसवाल, महेश कुमार, अभिषेक द्विवेदी, जय कुमार, सोनू, ओम प्रकाश, दिनेश शर्मा, ज्ञानेंद्र पांडेय, अशोक निर्मलकर, मुकेश कुमार, संतोष कुमार, आशीष शुक्ला, लक्ष्मण नायक, गोलु गुप्ता , अजय, राकेश चक्रधारी, अजय राठिया, धर्मेंद्र कुमार, अनिल, सत्येन्द्र, राजू भोला सिंह, कमलेश गुप्ता, विक्की सांवरे, बालकृष्ण, अनिल सिदार, लेखपालेश्वर, आलोक संतोष, आसनारायन सिंह, मंटू, भोले देवांगन, सनी सिंह, अभय सिंह,भोला चक्रधारी, अज्जू सेन, अभय सेन, राकेश यादव ने रक्तदान किया और भी लोग रक्तदान करने के लिए आगे आए है।

विद्यालयों में आवश्यक तैयारी को लेकर प्राचार्य व प्रधान पाठको का बैठक संपन्न

सूरजपुर। विकासखंड रामानुजनगर अंतर्गत संचालित 02 सेजेस विद्यालय, 16 हायर सेकंडरी विद्यालय, 8 हाई स्कूल के प्राचार्य एवं 92 मिडिल स्कूल 216 प्राथमिक शाला के प्रधान पाठकों का समीक्षा बैठक शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रामानुजनगर में दो पालियों में संपन्न हुआ। सहायक विकास खंड शिक्षा अधिकारी मनोज कुमार साहु एवं बीआरसीसी हजारी लाल चक्रधारी ने बैठक में नवीन शिक्षा सत्र के लिए शाला प्रवेश उत्सव की तैयारी, विद्यालयों में साफ सफाई, मध्यान भोजन की तैयारी, नवप्रवेशी छात्रों का चिन्हांकन, वृक्षारोपण, विद्यालय में पंजियों का संधारण, पालक शिक्षक बैठक, शाला प्रबंध समिति की बैठक, शिक्षक डायरी, प्रार्थना सभा का आयोजन, पीएम श्री स्कूल का व्यवस्थित संचालन, पेयजल की व्यवस्था, शाला त्यागी बच्चों का पुनः प्रवेश, पाठयपुस्तक एवं गणवेष शाला खुलने के पूर्व वितरण, बालवाड़ी केंद्र की स्थिति, यूथ एवं इको क्लब, यू डाइस, एफ एल एन प्रशिक्षण की उपयोगिता, आगामी दिनों में विज्ञान शिक्षकों का प्रशिक्षण, प्रत्येक शालाओं में एक अंग्रेजी शिक्षक का प्रशिक्षण, न्योता भोजन, पोषण वाटिका का विकास आदि क्रियान्वयन पर विस्तृत चर्चा कर आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया।

13 जुलाई को नेशनल लोक अदालत का होगा आयोजन

सूरजपुर। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली एवं राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण बिलासपुर के दिशानिर्देशन में 13 जुलाई 2024 को नेशनल लोक अदालत का आयोजन किया जाना है। लोक अदालत की तैयारी को लेकर 11 जून को समस्त न्यायिक अधिकारियों, 12 जून को जिले में संचालित समस्त बैंक ब्रांच मैनेजर, अधिकारी, 13 जून को बीमा कंपनी से संबंधित अधिवक्ताओं एवं 14 जून को सभी अनुविभागीय अधिकारी, तहसीलदार एवं वन विभाग अधिकारी के साथ श्री गोविन्द नारायण जांगड़े, जिला एवं सत्र न्यायाधीश अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, सूरजपुर के अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। आयोजित बैठक में 13 जुलाई 2024 होने वाली लोक अदालत में ज्यादा से ज्यादा प्रकरण रखे जाने तथा उनके निराकरण किये जाने पर चर्चा किया गया। आगामी लोक अदालत जिला एवं सत्र न्यायालय सूरजपुर, कुटुम्ब न्यायालय सूरजपुर, तालुका न्यायालय प्रतापपुर एवं जिले के समस्त राजस्व न्यायालयों में आयोजित होंगे व पक्षकारों की सुविधा के लिए प्रकरण के पक्षकारों को भौतिक रूप से एवं वर्चुअल वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग दोनों मुख्य माध्यमों से मामलों में सुलह की सुविधा प्रदान की जाएगी। लोक अदालत में न्यायालयों में लंबित आपसी विवाद के मामले, व्यवहारवाद, मोटर दुर्घटना दावा, पारिवारिक विवाद, जिला न्यायालय में वर्षों से लंबित प्रकरण एवं राजस्व प्रकरणों को रखे जायेगें। बैंक ऋण, बकाया बिजली बिल, जल के बकाया देयकों के प्री लिटिगेशन प्रकरणों में पक्षकारों को नियमानुसार छूट के पात्र होगें।

सामूहिक विवाह के लिए जोड़ों को ले जा रहे लोगों से हुई पूछताछ

रामानुजनगर। क्षेत्र के ग्राम नारायणपुर में उस समय प्रशासन के अधिकारी हरकत में आए जब एक संस्थान के द्वारा सामूहिक विवाह के लिए यहां से जोड़ों को ले जाया जा रहा था।शाम करीब साढ़े पांच बजे छोटे छोटे बच्चों के साथ महिला पुरुष की भीड़ अचानक लाव लश्कर के साथ सड़क किनारे लाइन लगाकर बैठे हुए नजर आए।यह खबर अचानक क्षेत्र में फैली तो लोग भी वहां पहुंचे और पूछताछ किए जाने पर पता चला कि एक सामूहिक विवाह समारोह में शामिल होकर विवाह कराने वाले जोड़ों के साथ उनके परिवार के लोग एकत्रित होकर भिलाई जाने के लिए निकले हैं और वे रेलवे स्टेशन जाने के लिए वाहन का इंतजार कर रहे हैं।

बताया गया कि किसी आस्था संस्था के द्वारा निश्शक्तजनों की शादी कराई जा रही है जो 15,16 जून को होना निर्धारित है। मगर सवाल उस समय उठ खड़ा हुआ जब उन्हें लेकर जाने वाले कथित एजेंटों द्वारा उक्त विवाह के संबंध में कोई भी जानकारी सही तरीके से नहीं बताई गई। इस बीच कुछ एजेंट वहां से भाग निकले। इस खबर के फैलने के बाद महिला बाल विकास अधिकारी वर्षा अग्रवाल, नायब तहसीलदार देवनगर व रामानुजनगर पुलिस मौके पर पहुंची और उन्हें लेकर जाने वाली महिला एजेंटों से पूछताछ कर संस्था के लोगों से जानकारी ली गई। उक्त संस्था के पंपलेट में प्रदेश भर के 301 दिव्यांग जोड़ों की शादी कराए जाने की बात लिखी गई है।मगर यहां से जोड़ों को ले जाने वाले एजेंट यहां से कितने जोड़े जा रहे हैं यह आंकड़ा भी नहीं बता पाए। भिलाई सामूहिक विवाह समारोह में शामिल होने जा रहे लोगों के बीच कानाफूसी हो रही थी कि 1.20 लाख रुपये मिलने की बात कही गई है,उसी झांसे में फंसकर कोरिया जिले के बेलबहरा, बचरापोंड़ी से लेकर रामानुजनगर, प्रेमनगर से बड़ी संख्या में लोग निकले हैं। महिला बाल विकास विभाग के अधिकारी इसकी जांच कर रहे हैं।

जिला अस्पताल सूरजपुर में जटिल ऑपरेशन करके बच्चेदानी से 11 गठान निकाले गए

सूरजपुर। जिला अस्पताल सूरजपुर में जटिल ऑपरेशन करके बच्चेदानी से 11 अलग अलग साइज के गठान निकाले गए। इस चुनौतीपूर्ण ऑपरेशन में बच्चेदानी को भी सुरक्षित बचाया गया है। यह सफल ऑपरेशन जिला अस्पताल में पदस्थ स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. खेम ज्योति जायसवाल ने किया। जिला अस्पताल में कलेक्टर श्री रोहित व्यास के मार्गदर्शन एवं मुख्य चिकित्सा व स्वास्थ्य अधिकारी तथा सिविल सर्जन सह मुख्य अस्पताल अधीक्षक के निर्देशन में स्वास्थ्य सुविधाओं में गुणवत्तापूर्ण सेवा प्रदान किया जा रहा है। सूरजपुर निवासी एक 35 वर्षीय महिला जिला अस्पताल में पेट में गठान, पेट दर्द एवं माहवारी में अनियमितता से संबंधित शिकायत लेकर ओपीडी में परामर्श लेने आई थी। जिसकी जांच महिला रोग विशेषज्ञ डॉ. खेमज्योति जायसवाल के द्वारा किया गया। जांच के पश्चात मरीज के बच्चेदानी में एक से अधिक गठान पाया गया, जिसका संपूर्ण जांच करने के पश्चात डॉ. खेम ज्योति जायसवाल ने ऑपरेशन करने का निर्णय लिया।

अंधड़ और बारिश ने उखाड़ दिए कई वृक्ष, जाम की स्थिति

अंबिकापुर। कई दिनों की भीषण गर्मी के बीच शुक्रवार की शाम तेज आंधी के साथ हुई मूसलाधार बारिश से चौतरफा परेशानी खड़ी हो गई। गर्मी से लोगों को थोड़ी राहत तो मिली पर चक्रवात की तरह आए आंधी ने भारी तबाही मचाई है। अंबिकापुर शहर के घड़ी चौक पर बकैन का बड़ा वृक्ष धराशाई हो जाने के कारण यहां जामुन और सब्जी बेच रहे लोग बाल-बाल बच गए। यहां बिजली का तरंगित तार भी क्षतिग्रस्त हो गया वहीं शहर के प्रतापपुर मार्ग,संस्कृत विद्यालय क्षेत्र, मनेंद्रगढ़ मार्ग,अजिरमा, गोधनपुर,खैरबार, सुभाष नगर साईं मंदिर मार्ग में पेड़ व डंगाल गिर जाने से भारी तबाही मची है। प्री मानसून की दस्तक हो गया है जो अपने साथ परेशानी भी लेकर आया है। शहर के कई क्षेत्रों की बिजली व्यवस्था भी बिगड़ गई है। कई जगह बिजली पोल और तार,केबल टूटकर गिर गए हैं। बिजली कर्मी व नगर निगम का अमला में पेड़ काट कर हटाने में जुटा हुआ है। अंबिकापुर शहर व आसपास के इलाकों के साथ लखनपुर, उदयपुर क्षेत्र में भी तेज आंधी के कारण कई वृक्ष उखड़ गए हैं। उदयपुर केदमा क्षेत्र में सड़क पर पेड़ गिर जाने से आवागमन भी अवरुद्ध हो गया है। लगभग 20 मिनट तक चले इस अंधड़ ने कई घरों के छप्पर भी उखाड़ दिए हैं। शहर से लगे अजिरमा पंचायत में बनाया गया सेड भी उड़ गया है। मौसम विभाग इसे प्री मानसून की बौछार बता रहा है। तेज आंधी के साथ बारिश की बौछार इसी का संकेत है। अगले दो दिन तक ऐसी स्थिति अचानक निर्मित हो सकती है। इसके बाद मानसून की दस्तक होगी। बता दें कि उत्तर छत्तीसगढ़ में अप्रैल और मई के प्रथम पखवाड़े तक आंधी-पानी के कारण मौसम में नमी थी किंतु 15 मई के बाद भीषण गर्मी का प्रकोप लोग झेंलने लगे।वर्षों बाद न्यूनतम तापमान 30 डिग्री तक पहुंच गया था। अधिकतम तापमान 45 डिग्री के करीब पहुंचा। इस बीच नौतपा शुरू हुआ और पहले ही दिन बारिश की अच्छी बौछार हुई। इसके बाद धूप ने अपना तेवर दिखाना शुरू किया। चिलचिलाती धूप पर व उमस भरी गर्मी ने लोगों को बेहाल कर दिया। नौतपा खत्म होने के बाद भी गर्मी के तेवर कम नहीं हुआ। शुक्रवार के दिन भी अधिकतम तापमान 41 डिग्री से अधिक था। इसी से गर्मी का अनुमान लगाया जा सकता है किंतु शाम चार बजे अचानक मौसम ने करवट ली और तेज हवा के साथ बारिश भी शुरू हो गई। हवा का वेग इतना तेज था कि कई पेड़ व पेड़ों के डंगाल धराशाई हो गए। लोगों के घर के छप्पर उड़ गए। बिजली के खंभे टूट गए, तरंगित तार व केवल जमीन पर पसर गया।पेड़ गिरने से कई जगह सड़क में आवागमन भी अवरुद्ध हो गया। बीच शहर के घड़ी चौक पर बकैन का विशाल वृक्ष गिर जाने से आधा दर्जन लोग बाल बाल बचे, ऐसी स्थिति शहर के कई क्षेत्रों के साथ ग्रामीण इलाकों में भी बनी। शहर में तो किसी तरह बिजली व्यवस्था बहाल की गई पर ग्रामीण क्षेत्र की बिजली व्यवस्था ध्वस्त हो गई। तेज अंधड़ के कारण शहर के घड़ी चौक पर गिरे विशाल वृक्ष के कारण ट्रांसफार्मर क्षतिग्रस्त हो गया। केबल टूट गया।यहीं सब्जी बेच रहे लोगों में अफरा तफरी मच गई। लोगों की सब्जियां भी बर्बाद हो गई। अचानक आए अंधड़ से घड़ी चौक पर राहगीरों के बीच में अपरा तफरी मच गई थी। ट्रांसफार्मर में आई खराबी के कारण कलेक्टोरेट सहित आसपास के क्षेत्र की बिजली व्यवस्था भी चरमरा गई। आम के सीजन में तेज अंधड़ और बारिश के कारण आम की फसल को भारी नुकसान पहुंचा है। आम इस समय पकने की ओर अग्रसर है, ऐसे समय में आए तेज अंधड़ से आम की फसल को नुकसान पहुंचा है। शासकीय उद्यान के साथ लोगों के निजी उद्यान और बाड़ी में लगे आम तेज हवा के झोंकों से झड़ गए। अप्रैल माह से बिगड़े मौसम की वजह से इस बार आम को नुकसान होता रहा है। अब अंतिम समय में भी आम की फसल को मौसम की मार झेलनी पड़ रही है। तेज आंधी के कारण अजिरमा स्थित बृद्धा आश्रम का सेड पूरी तरह उड़ गया। सेड के नीचे लगा एक दर्जन पंखा भी क्षतिग्रस्त हो गया है। कुल 12 पंखा पानी में भीग कर हुआ खराब हो गया।विधायक मद से पांच लाख रूपये छत रिपेरिंग का कार्य कराया जा रहा है।लोगों द्वारा ग्राम सचिव को एक सप्ताह से बोला जा रहा था पंखा खोल कर हटाने पर अनसुना करने का परिणाम यह कि न सिर्फ पंखा खराब हुआ बल्कि पूरा सेड उड़ गया।

आंधी में आम बीन रही महिला के ऊपर गिरी पेड़ की डंगाल, मौत

सूरजपुर। सूरजपुर जिले के ओड़गी विकासखंड के ग्राम पकनी में आंधी-बारिश के बीच आम बीन रही महिला के ऊपर पेड़ की डंगाल टूट कर गिर गई। सिर और शरीर के अन्य हिस्सों में गंभीर चोट आने के कारण महिला की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। शुक्रवार शाम ओड़गी क्षेत्र में मौसम ने करवट ली। तेज हवाएं चलनी शुरू हुई। उसी दौरान ग्राम पकनी बाजारपारा निवासी गांगी पैकरा (50) आम बीनने के लिए घर के नजदीक आम पेड़ के नीचे पहुंच गई। आंधी के बीच बारिश शुरू हो गई। अचानक पेड़ का मोटा डंगाल टूटकर गांगी पैकरा के ऊपर गिर गया। उसे भागने का भी मौका नहीं मिला। महिला की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। ग्राम करौटी बी के शिवलोचन प्रजापति का बैल शुक्रवार को तेज आंधी तूफान से उड़ रहे सीट की चपेट में आ गया।घटना में बैल की मौके पर ही मौत हो गई।ओड़गी विकास खंड क्षेत्र के कई गांवों में शुक्रवार को आंधी बारिश से भारी नुक़सान हुआ है। क्षेत्र के कई गांवों के लोगों के घरों का छप्पर व सीट उड़ गया है। जगह -जगह पेड़ भी धराशाई हो गए हैं। ग्रामीण क्षेत्र में इस सीजन में तेज हवा चलते ही लोग आम बीनने पेड़ के नीचे पहुंच जाते है इससे ऐसी घटना की संभावना बनी रहती है। गाज गिरने की घटना में भी लोगों की असमय जान चली जाती है।

किशोरी से दुष्कर्म, आरोपी फरार

कोरबा। कोरबा जिले के जामकछार गांव में एक किशोरी के साथ दुष्कर्म की घटना हुई है। एक युवक ने उसे झांसे में लेने के साथ इस घटना को अंजाम दिया। किसी को बताने पर उसे गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी दी गई। घटना के बाद पीड़ा होने पर पीड़िता के द्वारा अपने परिजनों को इस बारे में जानकारी दी। जिस पर कोरबी पुलिस चौकी में घटना की रिपोर्ट दर्ज कराई गई। पुलिस ने बताया कि इस मामले में 4, 6 पासको एक्ट और धारा 376 आईपीसी का प्रकरण कायम किया गया है। घटना के बाद से आरोपी फरार बताया जा रहा है। संभावित ठिकानों पर उसकी तलाश का काम पुलिस की ओर से किया जा रहा है।

***कोरबा।**चना का आवंटन उपलब्ध होने के साथ इसका वितरण पीडीएस दुकानों से उपभोक्ताओं को प्रारंभ किया गया है।

प्रेम विवाह करने वाली महिला की संदिग्ध हालात में मौत, परिजनों को हत्या का संदेह

कोतवाली क्षेत्र के मोतीसागरपारा का मामला

कोरबा। कोतवाली पुलिस थाना क्षेत्र अंतर्गत मोतीसागर पारा वार्ड में निवासरत एक नवविवाहिता की मौत हो गई। संदिग्ध परिस्थितियों में उसकी मौत हुई। इससे पहले अचानक हालत बिगड़ने पर अस्पताल भिजवाया गया जहां परीक्षण के बाद उसे मृत घोषित किया गया। मृतका के परिजनों ने कहा है कि मामला हत्या का हो सकता है। कोतवाली पुलिस ने मामले में जांच शुरू की है।

कोरबा नगर के मोतीसागरा पारा क्षेत्र में बीती रात उस वक्त सनसनी फैल गई,जब एक महिला की मौत की खबर आम हुई। प्रेम विवाह के तीन साल बाद ही जिस तरह से उसकी मौत हुई उससे कई तरह के सवाल उठ रहे है। मायका पक्ष को जब इस बात की जानकारी हुई तब वे मौके पर पहुंचे गए और हंगामा करने लगे। मृतका का नाम ज्योति है जिसके भाई और मां ने बताया,कि पति राजेंद्र दास उर्फ लुडो ने परिवार के साथ मिलकर उसकी हत्या कर दी है। अंतिम सांस गिन रही ज्योति को रात में ही अस्पताल पहुंचा दिया गया।

तीन साल पहले ज्योति ने परिवार के मर्जी के उलट राजेंद्र दास उर्फ लूडो से प्रेम विवाह किया था,जिनका डेढ़ साल का पुत्र भी है। ज्योति की मौत को लेकर क्षेत्रीय पार्षद ने बताया,कि पति पत्नी के मध्य अक्सर विवाद हुआ करता था,जिसे लेकर कई बार समझाईश भी दी गई है। जिस तरह से ज्योति की संदीग्ध मौत हुई है उससे कई तरह के सवाल उठ रहे है। पार्षद ने बताया,कि पीएम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के कारणों से पर्दा उठ सकेगा।

मामले में पुलिस ने पति को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। जल्द ही पुलिस ज्योति की मौत का राजफाश कर देगी।

गीतकुंवारी पहुंचा हाथियों का दल

कोरबा। वनमंडल कोरबा के चचिया परिसर में विगत दिनों से विचरणरत 7 हाथियों का दल अब कुदमुरा रेंज अंतर्गत गीतकुंवारी गांव पहुंच गया है जबकि गीतकुंवारी में पहले से मौजूद लोनर हाथी ने धरमजयगढ़ का रूख कर लिया है। 7 हाथियों के गीतकुंवारी पहुंचने पर संबंधित अमला सतर्क हो गया है। ग्रामीणों को मुनादी कराकर सावधान किया जा रहा है। उनसे कहा जा रहा है कि उनके गांव के जंगल में बड़ी संख्या में हाथी फिर पहुंच गए हैं, अत: वे इनसे दूरी बनाएं रखें। जंगल की ओर न जाएं। उधर कटघोरा वनमंडल के एतमानगर व केंदई रेंज में भी हाथियों की सक्रियता लगातार बनी हुई है जहां पांच हाथियों का दल केंदई रेंज के परला क्षेत्र में है वहीं 18 हाथियों का दल एतमानगर रेंच के पचरा जंगल में घूम रहे हैं। पहले यह दल कटमोरगा में था। लेकिन गुरुवार की रात को मूवमेंट किया और पचरा जंगल पहुंचकर डेरा डाल दिया। हाथियों की यहां मौजूदगी दूसरे दिन भी बनी रही। हाथियों का यह दल गुरसियां, जटगा मुख्य मार्ग पर पहुंच गया था। जानकारी मिलने पर वन विभाग ने मौके पर पहुंचकर हाथियों को जंगल खदेड़ा। दल में एक उत्पाती दंतैल भी शामिल है, जो बंजारी गांव में एक ग्रामीण के घर घुसकर उसे ध्वस्त करने का प्रयास किया लेकिन समय पर निगरानी दल के पहुंच जाने से वह सफल नहीं हो सका। निगरानी दल ने दंतैल को खदेड़ दिया। उत्पाती दंतैल ने कटमोरगा में लगातार तीन दिन तक उत्पात मचाकर वहां के ग्रामीणों तथा वन विभाग के नाक में दम कर रखा था। उत्पात के दौरान दंतैल ने गांव में आधा दर्जन से अधिक ग्रामीणों के घर को ढहा कर उन्हें बेघर कर दिया था। दंतैल समेत हाथियों के दल के अन्यत्र जाने से कटमोरगा के ग्रामीणों ने फिलहाल राहत महसूस की है।

रात गहराने के साथ अहिरन नदी में रेत चोरी के लिए उतरते हैं चोर गिरोह, भारी नुकसान

कोरबा। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के द्वारा 15 अक्टूबर तक के लिए सभी स्थान पर रेत खनन जैसे कार्यों पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। कोरबा जिले में यह प्रतिबंध लागू हो गया है। इसके विपरीत कटघोरा क्षेत्र में हसदेव नदी से रेत की चोरी लगातार हो रही है। बताया जा रहा है कि इलाके के शातिर लोग इस काम में लगे हुए हैं जिन्हें किसी का डर नहीं रह गया है। बताया गया है कि यहां अहिरन नदी से हर दिन बड़ी मात्रा में रेत की चोरी की जा रही है। आधी रात के बाद यह काम शुरू होता है और सूर्य निकलने तक जारी रहता है। इस प्रकार की गतिविधियों से नदी को नुकसान तो हो ही रहा है, यहां तक बनाए गए पहुंच मार्ग के सामने भी कई प्रकार की चुनौतियां खड़ी हो गई है । लगातार इस बारे में जानकारी देने के बाद भी उचित कार्रवाई नहीं होने से चोरों के हौसले बुलंद है।

जाना ही होगा गढ़कलेवा में कारोबारियों को, होगी शिफ्टिंग

कोरबा। कुल मिलाकर कोरबा में खोमचा कारोबार से जुड़े लोगों को गढ़ कलेवा में जाना ही होगा । यह लोग ओपन थिएटर में उसे जगह पर जमे हुए थे जिसे चौपाटी के नाम से जाना जा रहा था। नगर निगम ने नजदीक में ही गढ़ कलेवा को बेहतर कर दिया है और अब सभी को वहां भेजने की प्लानिंग है।

4 दिन से खोमचा कारोबारी गढ़ कलेवा में खुद को शिफ्ट किए जाने की कोशिश का विरोध कर रहे थे और अपने व्यवसाय को बंद कर दिया था। जबकि नगर निगम की ओर से कई लाख रुपए खर्च करने के साथ गढ़ कलेवा को ठीक कर लिया गया। निगम की ओर से मौके पर सभी जरूरी तैयारी करने के साथ आगे की प्रक्रिया की जा रही हैं। उसके द्वारा संबंधित लोगों को कहा गया है कि वह अपना व्यवसाय इस जगह पर करें। अब जबकि सरकारी व्यवस्था के अंतर्गत कामकाज लगभग पूरा हो गया है ऐसे में ओपन थिएटर के पास काफी समय से जमे हुए व्यवसाययों को नई जगह पर जाना होगा। इनकी संख्या लगभग 100 है। इनमें अलग-अलग श्रेणी के व्यवसाय करने वाले लोग शामिल हैं जो जीविकोपार्जन के लिए इस काम को अपनाए हुए हैं। इन सभी लोगों ने नई जगह पर जाने का विरोध करते हुए 4 दिन से चौपाटी इलाके में दुकान नहीं खोली। यूनियन ने यह सोचकर विरोध जारी रखा की यह सब करने से अधिकारी अपने विचार को बदल देंगे और राहत देने के बारे में सोचेंगे लेकिन इसका कोई असर नहीं हुआ।

आवागमन से जुड़ी है समस्या

बताया जाता है कि ओपन थिएटर के साथ-साथ मुख्य मार्ग पर कई ऐसी दुकान सुबह से शाम तक लग रही है जिनके कारण यातायात पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है और कई प्रकार की समस्याओं से सामना भी करना पड़ रहा है। कई अवसर पर अभियान चलाने और चेतावनी देने के बावजूद इसका कोई असर नहीं हुआ। संकुचित होते रास्ते पर हादसे भी हो रहे हैं। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए संपूर्ण चौपाटी को नई जगह पर स्थानांतरित करना ही विकल्प बन गया है।

पसरखेत वन परिक्षेत्र बना ट्रेनिंग सेंटर

कोरबा। जिले के कोरबा वनमंडल अंतर्गत पसरखेत वन परिक्षेत्र इन दिनों प्रशिक्षु आईएफएस अधिकारियों का ट्रेनिंग सेंटर बना हुआ है। यहां ट्रेनी बतौर आए आईएफएस अधिकारियों की लगातार पदस्थापना हो रही है जिससे विभागीय कामकाज रफ्तार नहीं पकड़ पा रहा है। ट्रेनी अधिकारी यहां आते हैं और ट्रेनिंग लेने के बाद चले जाते हैं। अधिकारियों की रूचि विभागीय कामकाज में नहीं रहती। उनका ध्यान केवल 6 माह के प्रशिक्षण अवधि को पूरा करने पर ही रहता है। अघोषित ट्रेनिंग सेंटर बने पसरखेत रेंज में एक बार फिर प्रशिक्षु आईएफएस चंद्रकुमार अग्रवाल की पदस्थापना हुई है जिन्होंने शुक्रवार को यहां पहुंचकर अपना कार्यभार संभाल लिया। इससे पहले प्रशिक्षु आईएफएस हिमांशु डोंगरे की यहां पदस्थापना हुई थी जिन्होंने अपने प्रशिक्षण की अवधि पूरी करने के बाद धमतरी में एसडीओ के रूप में कार्यभार संभाल लिया है। प्रशिक्षु आईएफएस अधिकारी के अन्यत्र जाने पर रेंजर तोषी वर्मा ने पुन: यहां प्रभार संभाला। तीन महीने बाद पसरखेत रेंज में नए प्रशिक्षु अधिकारी की पदस्थापना व उनके द्वारा कार्यभार संभाल लिये जाने के बाद वह फिर अतिरिक्त रेंजर के रूप में रिजर्व हो गई है।

कोरबा के खिलाड़ियों ने जीते 2 पदक, टॉप टेन में बनाई जगह

सिलीगुड़ी में संपन्न हुई किकबॉक्सिंग की राष्ट्रीय प्रतियोगिता

कोरबा। पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी में आयोजित हुई किकबॉक्सिंग की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में कोरबा जिले के पांच खिलाड़ी शामिल हुए। उन्होंने दो पदक जीते और टॉप टेन में जगह बना ली ।

वाको इंडिया किकबाक्सिंग फेडरेशन के मार्गदर्शन व पश्चिम बंगाल किकबाक्सिंग एसोसियेशन के तत्त्वधान में मर्यादा मैत्री रिसार्ट सिलीगुड़ी में 10 से 14 जून को जूनियर वर्ग की राष्ट्रीय किकबॉक्सिंग प्रतियोगिता हुई। देश के 27 राज्यों से लगभग 600 खिलाड़ीयो ने किकबॉक्सिंग की सभी विधाओं पाइंट फाइटिंग, लाइट कांटेक्ट,किक लाइट, फूल कांटेक्ट, लोकिक, के-वन , म्यूजिकल फार्म्स एवं क्रिएटिव फार्म्स में हिस्सा लिया। छत्तीसगढ़ किकबॉक्सिंग एसोसिएशन के कार्यकारी अध्यक्ष तारकेश मिश्रा एवं महासचिव आकाश गुरुदीवान ने बताया कि प्रतियोगिता में शामिल होने वाले राज्य के जूनियर वर्ग के 26 बालक बालिका खिलाड़ियों का चयन रायपुर में आयोजित 11 वी राज्य स्तरीय जूनियर किकबाक्सिंग प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर किया गया। जिन्होंने विभिन्न वजन वर्गो में राष्ट्रीय प्रतियोगिता में हिस्सा लेते हुए उत्कृष्ट प्रदर्शन कर 3 स्वर्ण, 7 रजत एवं 7 कांस्य सहित कुल 17 पदक जीतकर राज्य को गौरवान्वित किया। राज्य की टीम में रायपुर, बिलासपुर, कोरबा, सरगुजा, बलोदा बाजार, धमतरी, गोरेला पेंड्रा मरवाही सहित विभिन्न जिलों के खिलाड़ी एसोसिएशन के कार्यकारी अध्यक्ष तारकेश मिश्रा, महासचिव आकाश गुरुदीवान के नेतृत्व में अंतर्राष्ट्रीय रेफरी पूजा पांडेय, मयंक डडसेना, तथा कोच मैनेजर के रूप में लोकिता चौहान, हिमांशु यादव, सरवर एक्का, अमन सोनी, सूरज साहू , नमिता साहू के साथ हिस्सा लिया। कोरबा जिले के सीएमए किकबाक्सिंग एकेडमी कोरबा से 5 खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया और 1रजत तथा 1कांस्य जीतकर जिले का नाम राज्य एवं देश में गौरवान्वित किया है। बालक वर्ग में रजत गोयल ने रजत एवं तुषार सिंह ठाकुर ने कांस्य पदक जीता। एकेडमी की आस्था गुप्ता, सिद्धि सोनवानी, सुयश नामदेव ने अच्छा प्रदर्शन करते हुए अपने वजन वर्ग में टाप 10 में जगह बनाई।

यह चैंपियनशिप पूरी तरह से डिजिटल रूप से संपादित हुई, यानी सदस्य पंजीकरण, इवेंट भागीदारी, स्कोरिंग, परिणाम सभी ग्लोबल स्पोर्टडेटा इवेंट मैनेजमेंट सिस्टम और आर स्पोर्ट्स सदस्यता प्रणाली के माध्यम से किए गए। जिले एवं राज्य की टीम के सभी खिलाड़ियों एवं आफिशियल के उत्कृष्ट प्रदर्शन पर किकबाक्सिंग एसोसिएशन के अध्यक्ष छगनलाल मूंदड़ा, कार्यकारी अध्यक्ष तारकेश मिश्रा, महासचिव आकाश गुरुदीवान, जिला ओलंपिक एसोसिएशन के अध्यक्ष नौशाद खान, सचिव सुरेश क्रिस्टोफर, जिला खेल अधिकारी दिनु पटेल, रामकृपाल साहू, क्रीड़ा अधिकारी के आर टण्डन, क्रीड़ा भारती कोरबा के अध्यक्ष बलराम विश्वकर्मा, वरिष्ठ व्यायाम शिक्षिका सावित्री डडसेना, सीएमए किकबॉक्सिंग एकेडमी की संचालिका प्रीति मिश्रा, अंतराष्ट्रीय खिलाड़ी प्रतिभा राय, रेहाना फातिमा,अंतराष्ट्रीय रेफरी देवसागर साहू,शैलेश सिंह सोमवंशी, विकास नामदेव, रितेश साहा, अशोक साहू, जुनैद आलम,शुभम यादव, रमेश साहू, अंकुश यादव, सानू मेहराज, व अन्य ने शुभकामनाएं दी है।

शिक्षा के साथ रोजगार के दिशा में कदम कैम्पस सलेक्शन अग्रसेन कॉलेज में

सामाजिक क्षेत्र में हो रहे विशेष प्रयास : राजेन्द्र

कोरबा। अग्रवाल सभा कोरबा के अध्यक्ष राजेंद्र अग्रवाल ने बताया कि सामाजिक शैक्षणिक से लेकर विभिन्न क्षेत्रों में गंभीर कार्य करने को सक्रिय है। इसके माध्यम से व्यापक संदेश देने की कोशिश की जा रही है। लंबित परियोजनाओं को पूरा करने के लिए तेजी से काम चल रहा है।

राजेंद्र अग्रवाल तरुण छत्तीसगढ़ को जानकारी देते हुए बताया कि समाज की ओर से संचालित अग्रसेन गर्ल्स कॉलेज में पहली बार रोजगार के अवसर को लेकर कदम बढ़ाए गए हैं ताकि विद्यार्थियों को इसका लाभ मिले। 19 जून को कॉलेज परिसर में हम कैंपस सिलेक्शन आयोजित कर रहे हैं। इसमें कई कंपनियां आमंत्रित की गई है। योग्यता के आधार पर काफी छात्राएं इससे लाभान्वित होंगी, ऐसी आशा है। शिक्षा क्षेत्र में गुणात्मक और परिणाममूलक प्रभाव नजर आए, इसके लिए कई काम किए जा रहे हैं। अग्रसेन विद्यालय में शिक्षकों की भर्ती के साथ-साथ विद्यार्थियों को सुविधा देने के लिए नवीन अधोसंरचना पर भी काम किया जा रहा है।

अग्रवाल सभा का नेतृत्व कर रहे राजेंद्र ने बताया कि समाज की ओर से दो स्थानों पर गौशाला का संचालन किया जा रहा है। कनबेरी में लगभग 35 लख रुपए की लागत से गोपाल मंदिर तैयार किया जा रहा है जिसका 70प्रतिशत काम पूरा हो चुका है। यहां पर वृद्ध, बीमार और दुर्घटनाग्रस्त गोवंश को रखा गया है जिनकी सेवा का कार्य जारी है। गोवंश को बेहतर आहार प्राप्त हो इस इरादे से हमने 3 एकड़ क्षेत्र में मक्का और घास की नई वैरायटी लगाई है। इसके माध्यम से हर समय पशुओं को उनकी जरूरत की पूर्ति की जानी संभव हो सकेगी।

अग्रवाल सभा के अध्यक्ष ने चर्चा के दौरान बताया कि माधवी देवी सामाजिक भवन निर्माण का कार्य हमारी एक इकाई के द्वारा किया जा रहा है। क्योंकि यह एक वृहद परियोजना है और इसके माध्यम से बड़ी आवश्यकताओं को पूरा करना है, इसलिए हमने शासन स्तर पर अनुदान के लिए पहल की है। हमें पूरी आशा है कि संभवत: इस महीने यह कार्य पूरा हो जाएगा।

बालको विभिन्न पहल के माध्यम से सड़क सुरक्षा संस्कृति को दे रहा बढ़ावा

कोरबा। जिले में स्थापित वेदांता समूह की कंपनी भारत एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड (बालको) ने इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड (आईओसीएल), कोरबा बल्क पेट्रोलियम टर्मिनल प्लांट में लाइव फायर ड्रिल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। व्यापक अग्नि सुरक्षा प्रशिक्षण में 50 से अधिक कर्मचारियों को विभिन्न प्रकार की आग से निपटने तथा रोकथाम के लिए विभिन्न उपायों को अपनाने के बारे में प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण में अग्नि आपात स्थितियों से निपटने के लिए प्रोटोकॉल तथा सीपीआर प्रशिक्षण भी शामिल था।

बालको एक औद्योगिक संगठन के रूप में समुदाय की सुरक्षा और भलाई को प्राथमिकता दिया है। सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान के तहत कंपनी ने विभिन्न पहल का आयोजन किया है। कंपनी संयंत्र में परिसर के साथ-बालको टाउनशिप में यातायात नियमों को लागू करके सभी सड़क उपयोगकर्ताओं के लिए एक सुरक्षित वातावरण बनाने में भी योगदान दे रहा है।

बालको के सीईओ राजेश कुमार ने कहा कि सुरक्षा हमारी पहली और सर्वोपरी प्राथमिकता है जो कंपनी की कार्य संस्कृति में शामिल है। सुरक्षा के प्रति हमारी प्रतिबद्धता सिर्फ नियमों का पालन करना नहीं है बल्कि यह हमारे कार्य करने के तरीके में समाहित है। कंपनी अपने संयंत्र के साथ-साथ समुदाय की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कटिबद्ध है। कंपनी सड़क सुरक्षा पर विभिन्न पहल क मदद से कर्मचारियों के साथ-साथ स्कूल के विद्यार्थियों तथा लोगों में जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है।

बालकोनगर थाना प्रभारी अभिनव कांत सिंह ने सभी से सड़क यातायात नियमों का पालन करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि वाहन चलाते सभी लोग हेलमेट और सीट बेल्ट का प्रयोग अवश्य करें। हम सड़क दुर्घटनाओ मे कमी लाने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध हैं और इस संकल्प को पूरा करने के लिए सभी नागरिकों की भूमिका महत्वपूर्ण है। बालको ने वाहनों के सुरक्षित आवागमन को सुनिश्चित करने के लिए भरपूर सहयोग दिया है। सड़क सुरक्षा को देखते हुए बालको द्वारा थर्मोप्लास्टिक मार्किंग, स्पीड ब्रेकर, जेब्रा क्रॉसिंग और रेट्रो-रिफ्लेक्टिव साइनबोर्ड लगाना सराहनीय कार्य है।

बालकोनगर वार्ड-39 के पार्षद लुकेश्वर प्रसाद चौहान ने कहा कि बालको अपने सामुदायिक विकास पहल के मदद से समुदाय में सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न पहल की हैं। औद्योगिक संगठन के रूप में कंपनी ने हमेशा समुदाय की सुरक्षा और भलाई को प्राथमिकता दिया है। उन्होंने बताया कि कंपनी ने स्कूल के बच्चों को सड़क सुरक्षा संबंधित सभी नियमों से लगातार अवगत करवाने का प्रयास किया है। छात्र-छात्राएं भविष्य के ड्राइवर हैं कंपनी इस बात को गंभीरता से समझते हुए उन्हें जागरूक करने का कार्य कर रहा है।

बालको के सड़क सुरक्षा गार्ड दिलीप कुमार ने कहा कि कंपनी सभी की सुरक्षा को सुनिश्चित करते हुए बालको संयंत्र परिसर में 30 और टाउनशिप में 40 किलोमीटर प्रति घंटे की गति सीमा तय की है। मुझे खुशी है कि कंपनी द्वारा सुरक्षा संस्कृति को मजबूती प्रदान करने में मेरी भी भागीदारी है। स्पीडोमीटर की मदद से हम सड़क पर गति सीमा से तेज चलने वाले वाहनों की निगरानी करते हैं। कंपनी में ट्रैफिक नियमों का पालन पूरी तरह से किया जाता है।

विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से बालको युवाओं के अंदर सुरक्षा संस्कृति को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है। सर्वमंगला मंदिर के डायवर्सन से रिंग रोड पर भारी वाहनों के बढ़े दबाव को देखते हुए कंपनी ने ग्राम रिसदी से ध्यानचंद चौक तक की सड़क के जिर्णोद्धार सहित रिसदी से रुमगढ़ा तक जगह-जगह पर चौड़ीकरण का कार्य किया। वाहनों के सुरक्षित आवागमन को सुनिश्चित करने के लिए कंपनी ने 6 किमी तक थर्मोप्लास्टिक मार्किंग सहित विभिन्न मार्गों पर 12 स्पीड ब्रेकर, कई जेब्रा क्रॉसिंग और 40 रेट्रो-रिफ्लेक्टिव साइनबोर्ड तैनात किया है।

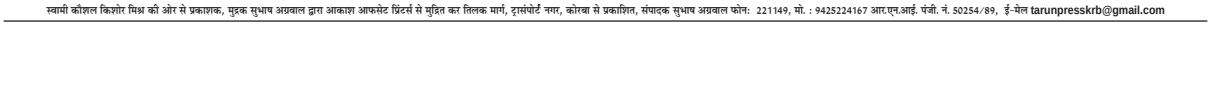

स्वामी कौशल किशोर मिश्र की ओर से प्रकाशक, मुद्रक सुभाष अग्रवाल द्वारा आकाश आफसेट प्रिंटर्स से मुद्रित कर तिलक मार्ग, ट्रांसपोर्ट नगर, कोरबा से प्रकाशित, संपादक सुभाष अग्रवाल फोन: 221149, मो. : 9425224167 आर.एन.आई. पंजी. नं. 50254/89, ई-मेल tarunpresskrb@gmail.com